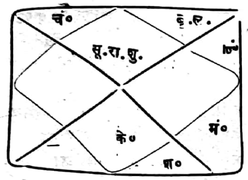
गणेशं वा समुपासते शिव इति ब्रह्मे ति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः।तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ।। श्रीसीतारामाभ्यां नमः।।लक्ष्मीः स्याद्वचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः।गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः। पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत्। मकरन्दानुसारि।।सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्र तव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् । राहुश्चकेतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा ॥

संवत् २०४३–४४ **# विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्** १९८६–८७ ई०

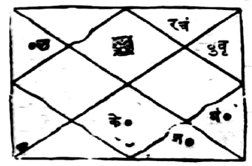
* जगल्लग्नम्- ११।११।५४।३९ *



*राजा-शुक्रः*मन्त्री-चन्द्रः*

* वर्षलग्नम्- २।१७।४४।२५ *

*वर्षा-१५*धान्यम्-७*



विक्रमसंवत् २०४३-४४ ॥ शालिवाहनशकाब्दः १९०८-९ ॥ कलिसंवत्सरः ५०८७

श्र० १९८६-८७ ई० ॥ लक्ष्मणसंवत ८७७-७८ ॥ सन् १३९४ साल

शकः १९०८-९

तिथ्यम्बुवृन्दं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् ।
योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सतोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् ।
विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये ।
गिरो निकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विवृद्धिं लभतां सदेदम् ।
अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यन्न नृणां यदिष्टम् ।
ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु ।

सन् १३९४ साल

कामेश्वरसिंह-दरभङ्गा-संस्कृत-विश्वविद्यालय-प्रकाशितम्

आश्विनकृष्णत्रयोदश्यां गजच्छायायोगः

*प्रवर्त्तकः- डा० रामकरण शर्मा, भूतपूर्वकुलपतिः
*संरक्षकौ- डा० ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमारः, कुलपतिः
डा० परमानन्द झा शास्त्री, प्रतिकुलपतिः
* निदेशकः प्रधानसम्पादकश्च- प० श्रीरामचन्द्र झा, ज्योतिष-विभागाध्यक्षः
* गणितकर्त्तारौ सम्पादकौ च- प० श्रीसर्वनारायण झा प० श्रीसच्चिदानन्द मिश्रः

मुद्रकः—सरस्वती लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, सी १३ नया औद्योगिक प्रांगण बेला, दरभङ्गा । प्राप्तिस्थानम्-पञ्चाङ्ग विभाग, कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालय; कामेश्वरनगर, दरभङ्गा । सूचना-२०४४-४५ संवत्सरस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्गं २०४४ संवत्सरस्य वैशाखमासे प्रकाशमेष्यति मूल्यम् ५.०० रूप्यकम् ।

॥ आनन्दादियोगचक्रम् ॥

योगनाम	सू	चं	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	फलम्
आनन्द:	अश्वि:	मृग.	अश्ले	ह•	अनु.	उषा	शत.	सिद्धि:
कालदण्ड:	भ	आ.	म.	चि	ज्ये.	अभि.	पूभा	मृत्यु
धूम्र:	कृ	पुन	पूफ	स्वा	मू.	श्र.	उभा	दु:ख
धाता	रो.	पु	उफ.	वि	पूषा	ध.	रे	शुभ:
सौम्य:	मृ	श्ले	ह.	अनु	उषा	श	अ.	सुख
ध्वांक्ष:	आ	म	चि.	ज्ये	अभि.	पूभा	भ.	हानि:
केतु:	पुन:	पूफ	स्वा.	मू.	श्र.	उभा	कृ.	दुखम्
श्रीवत्स:	पु.	उफ	वि	पूषा	ध	रे.	रो.	सपति:
वज्र:	श्ले	ह.	अनु	उषा	श.	अ.	मृ.	हानि:
मुद्गर:	म.	चि.	ज्ये	अभि.	पूभा	भ.	आ.	नाश:
छत्रम्	पूफ	स्वा.	मू.	श्र.	उभा	कृ.	पुन	सम्मान
मित्र	उ.फ.	वि.	पूषा	ध.	रे	रो.	पु.	पुष्टि
मानसम्	ह	अनु	उषा	श.	अ.	मृ.	आ.	सख
पद्म:	चि.	ज्ये	अभि.	पूभा.	भ.	आं.	म.	लाभ:
लुम्ब:	स्वा	मू.	श्र.	उभा	कृ.	पु.	पूफ	हानि:
उत्पात:	वि.	पूषा	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	नाश:
मृत्यु	अनु.	उषा	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	मृत्यु:
काण:	ज्ये.	अभि.	पूभा	भ.	आ	म.	चि.	क्लेश:
सिद्धि:	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पु.	पूफ	स्वा.	सिद्धि:
शुभ:	पूषा	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	शुभ:
अमृतम्	उषा	श.	अ.	मृ.	आ	ह	अनु.	सम्मान
मुसलम्	अभि	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि	ज्ये.	लाभ:
गद:	श्र	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा	मू.	हानि:
मातङ्ग:	ध.	रे.	रो	पु.	उफ.	वि	पूषा	वृद्धि:
राक्षस:	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अनु	उषा	कष्टम्
चर:	पूभा	भ	आ.	म.	चि.	ज्ये	अभि.	सिद्धि:
सुस्थिर:	उभा	कृ	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू	श्र.	शुभ:
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उफ.	वि.	पूषा	[illegible]	[illegible]

✱ पञ्चांग देखने की विधि ✱

इस पञ्चांग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम, एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान. उसके बाद क्रमश: योग एवं उसके दण्डपलात्मक मान, उसके बाद करण का दण्डपलात्मक मान, उसके बाद मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एव घंटामिनटात्मक समय,उसके बाद क्रमश: सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रि कालिक) स्पष्ट राश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घंटामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रीय, सौर एवं अंग्रेजी तिथियाँ हैं। उसके आगे उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिये गये हैं। यथा श्रावणकृष्ण मंगलवार को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मान २२।२८ (दिन घंटा २ मिनट १५ तक) श्रवणा नक्षत्र का दण्डपल ४६।२८ (रात्रि घंटा १ मिनट ३ तक) आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा श्रावणकृष्ण प्रतिपदा मगलवार को मिश्रमानकालिक स्पष्ट शुक्र ४।११।१८।०५ तथा स्पष्ट शनि ७।७।५२।१६ आदि। दो दिनों के स्पष्ट ग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा श्रावणकृष्ण प्रतिपदा मंगलवार एवं द्वितीया बुधवार को स्पष्ट बुध का अन्तर ०।०।६।४ = ६।४ कलात्मक दैनिक-गति बुध की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्न-सारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरंभ कर मीन तक के लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात १३।१४ आदि घंटे से दिन के १।२ आदि घंटे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा श्रावणकृष्ण प्रतिपदा बुधवार को रात्रि २३।२४ बजे से ०।५६ तक मेष, ०।५७ बजे से २।४६ तक वृष, २।४७ से ०४।५५ तक मिथुन, ०४।५६ से ७।१३ पूर्वाह्ण तक कर्क, ७।१४ से ९।३० [illegible] ११।४५ [illegible] ११।४६ बजे दिन से [illegible] १४।०२ तक तुला, १४।१२ से १६।२० तक वृश्चिक, १६।२१ से १८।३० रात्रि तक धनु, १८।३१ से २०।२२ तक मकर, २०।२३ से २१।५६ रात्रि तक कुम्भ एवं २१।५६ से २३।२३ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिए। पाक्षिक विषयों के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषय 'अथ विविधविषया:' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रह स्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिये प्रत्येक पक्ष में पञ्चांग के ऊपरी भाग में दाई ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं। ताकि सामान्य जानकारी रखने वालों को भी सुविधा हो। इतिशम् ॥

मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रह स्पष्टीकरण–यथा श्रावणकृष्णतृतीया गुरुवार को ३१।१० दण्डादि पर स्पष्ट शनि बनाना है तो मिश्रमानवारादि ५।४६।४७ एवं इष्टकालवारादि ५।३१।१० का अन्तर १५।३७ = मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (७।०७।५०।५४)—(७।०७।४९।३३) = १।२१ शनि की गति कलादि। अत: (१५।३७) × १।२१ = ०।२१।५ कलादिफल। अत:,(७।०७।४९।३३) + (०।२१।५) = ७।७।४९।५४ = इष्टकालिक शनि। वक्रत्वात्कलादि फल धन हुआ। इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहिये।

○ समर्थका विद्वांस: ○

विद्यावाचस्पति पं० उपेन्द्र झा
" नमोनारायण झा
" कुलानन्द मिश्र
" रामचन्द्र मिश्र
" दुर्गाधर झा
" रामकरण शर्मा
पं० श्री कमलाकान्त झा
" देवचन्द्र झा
" आनन्द झा
" अनन्तलाल ठाकुर
" पुरुषोत्तम झा
" रंगेश्वरनाथ मिश्र
" जीवानन्द ठाकुर
" कलाधर त्रिपाठी
" फूलकुमार झा
पं० श्री व्रजकिशोर झा
" शोभाकान्त झा
" श्यामानन्द मिश्र
" मणिनाथ झा
" विधाता मिश्र
" रामसेवक झा
" काशीनाथ मिश्र
" शिवदास मिश्र
" सुभद्र झा
" खड्गनाथ मिश्र
" ब्रह्मदत्त द्विवेदी
" रामनारायण झा
" भगवानदत्त मिश्र
" मदनमोहन झा
" उदयकान्त झा
" परमानन्द झा
" वेदानन्द झा
" धर्मनाथ झा
" गणेश शर्मा
उपेन्द्र झा 'विमल'
" शिवाकान्त झा
" विदेश्वर झा
" शोभाकान्त झा
" देवीकान्त मिश्र
" अर्जुन झा
" शिवकान्त झा
" रत्नेश्वर झा
" हरिनन्दन झा
" रामगुलाम मिश्र
" विश्वनाथ झा
" जगदानन्द झा
" बाबू मिश्र
" शिवकुमार शर्मा
" रामचन्द्र झा
" गोपानन्द झा
" महानन्द ठाकुर
" सत्यनारायण पाठक
" रामदेव झा
" गंगाधर शर्मा
" सिंहेश्वर झा
" कुमुदनाथ मिश्र
" देवेन्द्रनाथ झा
" शिवनाथ झा
" गुणानन्द झा
" ब्रह्मदेव झा
" महेश शर्मा
" उग्रानन्द प्रतिहस्त
" तारकेश्वर त्रिपाठी
" जगदीश पाठक
" महाप्रभुलाल गोस्वामी
" श्यामसुन्दर झा
" महेश झा
" गंगाधर राय
" हरिश्चन्द्र ठाकुर
" शुकदेव पाठक
" भगीरथ मिश्र
" व्रजबलाल झा
" सुन्दर झा
" रतीश झा
" वैद्यनाथ झा
" गंगाधर झा
" नित्यानन्द झा
" भारतेन्दुनाथ ठाकुर
" त्रिलोकनाथ झा
" लक्ष्मीनाथ ठाकुर
" हरेराम शर्मा
" हरिकान्त झा
" देवकान्त मिश्र
" तेजनाथ झा
" उमाकान्त झा
" सूर्यकान्त झा
" देवनारायण झा
" कीर्त्यानन्द झा
" तेजनाथ मिश्र
" अनुपदेव झा
" रुद्रधर झा
" गणेश झा
" अभिनन्दन झा
" कमलाकान्त झा
" दीनानाथ तिवारी
" बुद्धिनाथ झा
" रामलखन शर्मा
" लालन झा
" दुर्गानाथ झा
" मोतीनाथ झा
" गोलोकनाथ झा
" निरसू झा
" प्रभुनारायण शर्मा
" शशिनाथ झा
" योगनाथ झा
" चन्द्रकिशोर झा
" युक्तिनाथ झा
" शिवजी झा
" लक्ष्मीनाथ झा
" रामविलास झा
" भोलानाथ मिश्र
" रामकृष्ण झा
" हरिश्चन्द्र झा
" राधाकान्त झा
" लक्ष्मीकान्त मिश्र
" मधुकान्त झा
" शिवानन्द झा
" त्रिगुणानन्द शुक्ल
" भक्तिनाथसिंह ठाकुर
" शंकर त्रिपाठी
" रमानन्द चौधरी
" जगन्नाथ मिश्र
" सदानन्द झा
" कृपाकान्त ठाकुर
" लक्ष्मणलाल झा
" मुनीन्द्र झा
" शुकदेव शर्मा
" सत्यदेव मिश्र
" रतिनाथ झा
" जगदीश झा
" फणिनाथ झा
" नारायण झा
" हरिहर झा
" कामेश्वर झा
" तेजनारायण झा
" राजेन्द्र झा
" रतीशचन्द्र झा
" विष्णुदेव झा
" नित्यानन्द मिश्र
" दिनेश झा
" हर्षनाथ झा
" कृष्णानन्द झा
" सुरेश्वर झा
" कमलेश झा
" नन्दकिशोर पाण्डय
" योगेश्वर झा
" दामोदर झा
" वैद्यनाथ झा
" मीना कुमारी
" अम्बिकादत्त मिश्र
" राजेश्वर झा
" बच्चा झा
" अम्बिकाप्रसाद गिरि
" भुवनेश्वर झा
" फुलचन्द्र मिश्र
" रामावतार मिश्र
" कालीकान्त मिश्र
" श्रीकान्तप्रतिहस्त
" कमलाकान्त ठाकुर
" भागवत ठाकुर
" वीरचन्द्र राय
" राधाकांत मिश्र
" कलाधर झा
" द्विवाकर शास्त्री
" बौआनंद झा
" रघुवीर झा

❋ श्रीमन्मङ्गलमूर्तये नमः ।। श्रीसरस्वत्यै नमः ❋

सन् १३९४ साल, विक्रमाब्दः २०४३-४४, शकाब्दः १९०८-९, सन् १९८६-८७ ई० तत्र प्रभवादयो गताब्दादयः १२।८।३।१५।५० भोग्याब्दादयश्च ४७।३।२६।४४।१० अत्र लिख्यमाने वस्वभ्रग्रहेन्दुमिते शकाब्दे ब्रह्मविंशतिकायां शक्राधिदैवतयुगे त्रयोदश-प्रमाथीनामा मध्यमगुरुसंवत्सरफलम् —

दुर्भिक्षमर्थहानिश्च तस्करैश्च प्रपीडनम् । प्रचुरो विग्रहश्चैव प्रमाथिनि सुलोचने ।।

अथवर्षेश (राजा) शुक्रफलम्

गृह्णातीह धराधिपो न यवशाच्छास्त्रान्वितो धर्मविन्मेघः कालमवाप्य मुञ्चति पयः स्फीता भवेन्मेदिनी ।

चौरोपद्रवसंयुता भृगुसुते पृथ्वी च वर्षाधिपे राष्ट्रे सोत्सुकता प्रजाश्च नियतं यज्ञप्रतिष्ठारताः ।।

अथ संवाहक (मन्त्री) चन्द्रफलम्

कर्मारम्भपरिश्रमे फलवती पृथ्वी प्रसन्ना शुभा वृक्षाः स्फीततरा धनार्जनपरा विप्राः प्रलब्धार्थकाः ।

वृष्टिः सस्यप्रवृद्धकारकजला मेघाः सदा वर्षिणो राजानो विजितारिसङ्कटभुवः संवाहके शीतगौ ।।

अथ पालकगुरुफलम्

विप्राः सत्कर्मसंस्थाःप्रतिदिनमुदिता यज्ञकर्मप्रयुक्ताःस्वस्थाः क्षोणीधराश्च प्रमुदितहृदया राज्यभारं वहन्ति ।

दुष्टा नाशं व्रजन्ति प्रतिदिनजलदास्तोयदा रोगनाशः शस्यैः संपूर्णगात्रा भवति च धरणी पालके देवपूज्ये ।।

अथमेघाधिपगुरुफलम्-बलाधिकं प्रयच्छन्ति जलं जलधरा गुरौ ।।

अथ तोयाधिपशुक्रफलम्-बहुतोययुता पृथ्वी भार्गवे तोयनायके ।।

अथ सस्याधिपबुधफलम्

बहुवृष्टिर्महीपृष्ठे सस्यवृद्धिप्रकारिका । सर्वोपद्रवशून्या च प्रजा सोमसुते भवेत् ।।

अथलोकाधिप-गुरुफलम्

अनेकधनसम्पन्ना निरातङ्काः सुरोपमाः । मुदिता दाननिरता गुरौ लोकाधिपे जनाः ।।

अथ पुष्करमेघफलम्

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा । चित्रिता तु भवेद् वृष्टिः सस्यवृद्धिस्तु चित्रिता ।।

अथ समुद्रगतरोहिणीफलम् — यदि समुद्रगता शशिवल्लभा बहुजलैर्धरणी परिपूरिता ।।

अथ चैत्रशुक्लप्रतिपच्चन्द्रफलम् —चन्द्रस्यवारो बहुवृष्टिदः स्यात् ।।

अथ पौषामावास्याफलम् —सहसि दर्शतिथिर्बुधसंयुता विगत शस्यसमृद्धिसुखप्रजाः ।।

अथार्द्राफलम् —मध्यममे ।। शकात् खण्डवृष्टिः सुभिक्षञ्च ।। संवत्तो विपुल सुख सुभिक्षञ्च ।।

अथ होलिकाफलम् —रवौ चेद्धोलिकादाहे दुर्भिक्षञ्च महद्भयम् ।।

अथ जलाढकम् —९६।। तत्र समुद्रे ४८ कानने २४ उषरभूमौ १२ क्षेत्रे १२ इति ।।

❋ अथ विश्वाः ❋

वर्षा १५ धान्यं ७ शीतं १ तृणं ६ उष्णं ११ वायुः १३ प्रजावृद्धिः १३ प्रजाक्षयः १३ विग्रहः ११ क्षुधा १ तृष्णा १३ निद्रा ७ आलस्यं १३ उद्यमः ७ शान्तिः ११ क्रोधः ३ : ३ मैत्री १ उत्सवः १३ पापः ० पुण्यं ११ रसादि ६ उग्रत्वं ३ रसोत्पत्तिः १३ फलोत्पत्तिः १३ रोगः ७ रोगक्षयः १७ आचारः १३ अनाचारः १५ मरणं ९ जननं १५ चौरभयं १६ चौरशान्तिः ५ अग्निभयं ९ अग्निशान्तिः १७ इति विश्वाः ।।

अथ मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम्

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आयः—	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्ययः—	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४
फलम्—	लाभः	हानिः	हानिः	सुखं	विजयः	हानिः	हानिः	लाभः	सुखं	विजयः	विजयः	सुखं

अथ १९०८-९ शकाब्दस्य शुद्ध्यशुद्धी लिख्येते

श्रावणकृष्णप्रतिपन्मङ्गलतो भाद्रशुक्लचतुर्दशींबुधे २३।४८ यावद् गुरुलब्वतिचारवक्रसिंहादित्यदोषेभ्य अशुद्धस्तन्मानं मासादि १।२७।२३।४८ ततः कार्त्तिककृष्णद्वितीयारवौ ५०।३४ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।-।२६।४६ ततो भगुक्षैण्यास्त्ववाल्यदोषेभ्यः कार्तिकशुक्लपञ्चमीबृहस्पतौ ३५।४३ यावदशुद्धस्तन्मान मासादि ०।१७।४५।९ तत आग्रहायणीकुजे ११।६ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।६।३५।२६ ततो धनुरादित्यत्वात्पौषपूर्णिमाबुधे ३०।२६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२९।१९।१७ ततः फाल्गुनकृष्ण-चतुर्दशीभगौ २।५३ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।१४।२।२७ ततो गुरुक्षैण्यास्तबाल्यगुर्वादित्यदोषेभ्यो वैशाखशुक्लद्वितीयाबृहस्पतौ ४३।३९ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि २।२।१०।४६ ततोज्येष्टशुक्लद्वादश्यां कुजे ४६।५४ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।१०।३।१५ ततो गुरुलब्वतिचारादाषाढीं यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।२।१३।६ अतो वर्षे शुद्धसमयमानं मासादि ५।६।७।५४ अशुद्धसमयमानं मासादि ६।१८।५२।६ तेन वर्षपूर्त्ति दिनानि ३५५ इति ।।

अथ १९०८-९ शकाब्दे शुभमुहूर्त्तदिनानि

मार्गफाल्गुनवैशाखेषु शुक्रोदयः पूर्वस्यान्तेषु पश्चिमदक्षिण दिशोर्द्विरागमन मुहूर्त्ता बहवस्तदितरदिशोर्द्विरागमनदिनानि शुक्रान्धनक्षत्रेषु । मार्ग माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठेषु बहूनि विवाहदिनानि । माघवैशाख ज्येष्ठेषूपनयनमुहूर्त्ताः । वृहस्पतिस्तदानीं मीनराशौ । कार्त्तिके कार्त्तिकव्रताकाशदीपदानव्रततुलसीव्रतोद्यापनानि । एकादशीव्रतोद्यापनानि माघवैशाखज्येष्ठेषु । एवञ्च शुद्धसमये वापीकूपतडागखननदेवादि प्रतिष्ठादिमुहूर्त्ता बहवः । आश्विनकृष्ण त्रयोदश्यां गजच्छायायोगः ।

अथ १९०९-१० शकाब्दीय संक्षिप्तशुद्धादि

मार्गमाघफाल्गुनचैत्रेषु शुद्धसमय । मार्गादिषुविवाहादिमुहूर्त्ताः । माघादिषूपनयनमुहूर्त्ताः तदानीं गुरुर्मेषराशौ । मार्गादिषु द्विरागमनमुहूर्त्ताः । शुक्रोदयः पश्चिमायां मार्गे । फाल्गुनवैशाखयोः शुक्रोदयः पूर्वस्याम् । ज्येष्ठे मलमासः ।

अथ वर्षफलम्

इसवर्ष राजा शुक्र, मन्त्री चन्द्रमा, पालकेश गुरु मेघेश गुरु, तोयेश शुक्र, सस्येश बुध तथा लोकेश गुरु हैं। वर्षारंभ में प्रमाथी नामक वार्हस्पत्य वर्ष तथा आश्विनशुक्ल चतुर्थी मंगल ७।११ दण्डादि से विक्रम नामक वार्हस्पत्य वर्ष प्रारंभ होगा। पुष्कर नामक मेघ तथा रोहिणी वास समुद्र में है। वर्षा १५ विश्वा तथा धान्य ७ विश्वा है। राजा-मन्त्री में तथा जगल्लग्नेश वर्षलग्नेश में शत्रु सम भाव है। जगल्लग्नेश बृहस्पति व्ययस्थ समगृही तथा वर्षलग्नेश बुध भाग्यस्थ समगृही हैं। वर्षलग्न पर मंगल-वृहस्पति तथा जगल्लग्न पर मंगल की पूर्णदृष्टि है। वर्षलग्न-जगल्लग्नानुसार वर्षफल सामान्यतः शुभ है। समस्त विश्व में आभ्यन्तर कलह, शासक मण्डलों में मतभेद, राजनैतिक कलह, शान्ति एवं प्रगति मार्ग में अपेक्षाकृत सहयोग की भावना तथा कहीं-कहीं शासनसूत्र में परिवर्तन होगा। सीमा विवाद; यान दुर्घटना तथा प्राकृतिक-कोप से धनजन की क्षति संभावित है। पश्चिमीदेश अपेक्षाकृत अशान्त रहेगा। पूर्वी क्षेत्रों को अतिवृष्टि एव बाढ से क्षति होगी। पश्चिमोत्तर एवं दक्षिण भागों में अशान्ति की स्थिति रहेगी। विदेश-व्यापार, नये उद्योग की स्थापना, नवीन अनुसन्धान तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्रायः सफलता की स्थिति रहेगी। शिक्षणसंस्थान शान्तप्राय रहेंगे। वृष्टियोग उत्तम है किन्तु अतिवृष्टि से कहीं-कहीं क्षति भी हो सकती है। अनावृष्टि की स्थिति कम हीं स्थानों में हो सकती है। वर्षलग्नानुसार भारत की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी रहेगी। ग्रहस्थिति के अनुसार भादी, अगहनी एवं चैती फसल की उपज क्रमशः ६०, ७० एवं ६० प्रतिशत होगी।

अथ राशिफलम्

मेष—(चु चे चो ल लि लु ले लो अ) रक्तवायु विकार एवं व्रण से शारीरिक कष्ट, पारिवारिक उलझन, उदासीनता, व्यय, मित्र एवं कुटुम्बवर्ग से मतान्तर, स्त्री की अस्वस्थता, पदोन्नति एव स्थानान्तरण, विद्या व्यवसाय में सामान्यतः सफलता, उद्योग या व्यापार में साधारण लाभ तथा विलम्ब से कार्य में सफलता मिलेगी। शनि, केतु तथा वर्ष के प्रथम तृतीयांश में राहु की उपासना लाभकर होगा। हनुमान जी की पूजा, मंगलव्रत, शनिपूजन, शनिस्तोत्र पाठ, शनिवार को पीपल में जलदान तथा शनिवार को काले घोडे के नाल के लोहे की अगुठी धारण करनाश्रेयस्कर होगा। वर्षफल सामान्य है।

वृष—(इ उ ए ओ व वि बु वे वो) वायुविकार से पीडा, व्रण, रोगशत्रु प्रकोप, व्यय, चोट लगने की संभावना, पारिवारिक झंझट, कुटुम्बों से मतभेद, नवीन कार्यारम्भ या इष्टसिद्धि में बिलम्ब से सफलता, व्यापार में लाभ, पदोन्नति में बाधा, माता-पिता की अस्वस्थता तथा मामला-मुकदमा से परेशानी होगी। विद्या के क्षेत्र से सफलता मिलेगी। मेष राशिवालों की तरह शनि केतु एवं राहु की उपासना लाभ कारक होगी। वर्षफल सामान्य है।

मिथुन—(क कि कु घ ङ छ के को ह) वायुविकार, स्त्री की अस्वस्थता, पुराने झंझट में सफलता, व्यापार में लाभ, विद्याव्यवसाय में प्रगति, अभ्युन्नति, अभीष्टसिद्धि, सत्कार्य में व्यय, तीर्थयात्रा या भ्रमण, मित्रबन्धु से अकस्मात् मतान्तर तथा मानसिक शान्ति में कमी रहेगी। मंगल एवं राहु की उपासना लाभकर होगा। मगलव्रत एव हनुमान जी की पूजा श्रेयस्कर होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

कर्क–(हि हु हे डो ड डि डु डे डो) आर्थिक लाभ प्रगति, नवीनकार्यारंभ में सफलता, अभीष्टसिद्धि, माता पिता को शारीरिक कष्ट, पारिवारिक सुख, सन्तान की अभ्युन्नति, शत्रु पर विजय, वायुकफ विकार से साधारण कष्ट, चोरभय, चोट लगने की संभावना तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बृहस्पति की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल शुभप्राय है।

सिंह–(म मि मु मे मो ट टि टु टे) आर्थिक विकलता, व्यर्थ-भ्रमण, पारिवारिक मतभेद, उदासीनता सन्तान-सुख सत्कार्य में व्यय, झंझट में सफलता, भ्रातविरोध, विद्या-व्यवसाय में सफलता व्यय, श्रम एवं बाधा के बाद विलम्ब से अभीष्टसिद्धि, धार्मिककृत्य सम्पादन, चोट लगने या घाव होने की संभावना तथा प्रभाववर्द्धक स्थिति रहेगी। शनि तथा वर्ष के उत्तरार्द्ध में बृहस्पति की उपासना लाभ कर होगा। मेष राशिवालों की तरह शनि की शान्ति तथा हनुमान जी की पूजा करें। वर्षफल साधारण है।

कन्या–(टो प पि पु ष ण ठ पे पो) आर्थिक प्रगति में बाधा, शुभकार्यों में व्यय, पारिवारिक सुख, भ्रातविरोध, स्वतन्त्र व्यापार में लाभ किन्तु साझा में हानि, सन्तानसुख विद्याध्ययन में उत्तम स्थिति, पदोन्नति, भूमि-वाहन लाभ योग, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा शत्रु पर विजय होगा। वायु-कफ विकार या व्रण से साधारण कष्ट होगा। प्राचीन कार्य में सफलता मिलेगी। राहु की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

तुला–(र रि रु रे रो त ति तु ते) शनि की साढे साती चल रही है। अतः निरर्थक भ्रमण, अपव्यय, इष्टसिद्धि में व्यय एवं बाधा, पारिवारिक उलझन, स्त्री की अस्वस्थता, सन्तान सुख उत्तम विद्याध्ययन में सफलता किन्तु व्यापार में घाटे की स्थिति रहेगी। चोट लगने या वायु विकार से या घाव से शारीरिक कष्ट होगा। शनि एवं राहु की उपासना लाभकर होगा। मेष राशिवालों की तरह शनि की शान्ति तथा हनुमान जी की पूजा-पाठ करना श्रेयस्कर होगा। वर्षफल मध्यम है।

वृश्चिक–(तो न नि नु ने नो य यि यु) शनि की साढे साती है। अतः उदरविकार वायुविकार एवं व्रण से शारीरिक कष्ट, लोकापवाद दुर्बलता आर्थिक विकलता, व्यय एवं बाधा के बाद अभीष्टसिद्धि में साधारण प्रगति, विद्याध्ययन में वर्ष के पूर्वार्द्ध में कमजोरी किन्तु उत्तरार्द्ध में सफलता, सन्तान सुख मध्यम स्त्री की अस्वस्थता तथा व्यापार में घाटे की स्थिति रहेगी। झंझट एवं कलह की संभावना बनी रहेगी। शनि एवं राहु की उपासना लाभ कर होगी। मेष राशिवालों की तरह शनि की शान्ति करें तथा हनुमान जी की उपासना करें वर्षफल साधारण है।

धनु–(ये यो भ भि भु ध फ ढ भे) शनि की साढे साती है। अतः अपव्यय जनापवाद, चोट-चपेट की संभावना आर्थिक प्रगति में बाधा, उद्विग्नता, पारिवारिक उलझन नवीन कार्यारंभ में बाधा एवं व्यय, सन्तानसुख, विद्याध्ययन में प्रगति, स्त्री को शारीरिक कष्ट तथा अभ्युन्नति में बाधा आयेगी। व्यापार में आंशिक लाभ होगा। तीर्थभ्रमण का योग बनेगा। शनि एवं केतु की उपासना लाभ कर होगा। मेष राशि वालों की तरह शनि की शान्ति करें तथा हनुमदुपासना करें। वर्षफल मध्यम है।

मकर–(भो ज जि जु जे जो ख खि खु खे खो ग गि) आर्थिक लाभ किन्तु व्यय भी, माता पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल, स्त्री को शारीरिक कष्ट, सन्तान सुख, विद्याध्ययन में सफलता, व्यापार में पर्याप्त लाभ, पारिवारिक सुख, अभ्युन्नति, नवीन कार्यारंभ में सफलता, भूमि-भवन या वाहन लाभ, शत्रु पर विजय, अभीष्ट सिद्धि से प्रसन्नता तथा वायुविकार से साधारण कष्ट होगा। सप्तशती स्तोत्र का पाठ करना लाभ कर होगा। वर्षफल शुभ है।

कुंभ–(गु गे गो स सि सु से सो द) वायुविकार या व्रण से शारीरिक कष्ट, पारिवारिक सुख, सन्तान की स्थिति मध्यमोत्तम, भ्रातृविरोध, नवीनकार्यारंभ में सफलता, शत्रु पर विजय, सत्कार्य में प्रवृत्ति प्रभाववृद्धि, व्यापार में लाभ, विद्या व्यवसाय में सफलता तथा अभ्युन्नति होगी। भूमि या वाहन की प्राप्ति होगी। राहु की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल शुभ है।

मीन–(दि दु थ झ ञ दे दो च चि) उदरविकार एवं रक्तविकार से पीडा, आर्थिक स्थिति सामान्यतः अच्छी सत्कार्य में व्ययाधिक्य, स्त्री का स्वास्थ्य प्रतिकूल, पारिवारिक सुख, सन्तान सुख, मध्यमः विद्या व्यवसाय में सामान्यतः प्रगति, व्यापार में लाभ विघ्नबाधा के बावजूद अभ्युन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा भूमि-भवन निर्माण का योग है। केतु की उपासना लाभकर होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

मासफल

श्रावण–ग्रहयोगानुसार इस मास का फल मध्यमोत्तम है। मासारम्भ में वायु के साथ वृष्टि का योग है किन्तु बुध शुक्र के मध्य में सूर्य रहने से कहीं कहीं अनावृष्टि तथा कहीं कहीं बाढ से कृषि को क्षति भी संभावित है। मासान्त में सुवृष्टियोग है। खाद्यान्न प्रायः सस्ता रहेगा। गेहूँ, चना तथा काले पदार्थ आदि में तेजी आयेगी। श्वेतपदार्थ, फल, शाक सब्जी तथा रसपदार्थ में मन्दी का क्रम रहेगा। काले धातु, सुवर्ण एवं चान्दी में तेजी रहेगी किन्तु खनिजपदार्थ सम रहेंगे। पूर्वोत्तर तथा पश्चिमोत्तर राज्यों में अशान्ति तथा शासनसूत्र में हेरफेर संभावित है। सुरक्षा, व्यापार तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति का क्रम रहेगा। दिव्यान्तरिक्ष उत्पातों तथा नौतथा-यान दुर्घटना भी संभावित है।

भाद्र–ग्रहयोगानुसार इस मास का फल सामान्य है। देश तथा विदेशों में कहीं कहीं अशान्ति कीस्थिति उत्पन्न होगी। संघर्ष, राजनैतिक तनाव तथा अन्य उत्पातों के समाधान में शासकवर्ग को सफलता मिलेगी, महामारी कोप तथा वाहन दुर्घटना में वृद्धि होगी, पशुरोग बढ़ेंगे। पश्चिम क्षेत्र अशान्त प्रायः रहेगा। वायु एवं वर्षा का अच्छा योग है। बाढ का प्रकोप संभावित है। खाद्यान्न शाक, रसपदार्थ, श्वेत पदार्थ तथा सोने चान्दी में तेजी का योग है। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन संभावित हैं।

आश्विन–इस मासका फल उत्तम है। शासक वर्ग की स्थिति सुदृढ होगी। उद्योग धंधे व्यापार तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में विकासात्मक कार्य होंगे। वर्षा का अच्छा योग है। किन्तु वायु वेग से आंशिक नुकसान भी संभव है। खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, रसपदार्थ तथा फल मूल में तेजी का क्रम रहेगा। सोना चान्दी, खाद्यान्न वस्त्र तथा मिष्टान्न का क्रम सस्ता रहेगा। यान दुर्घटना अपहरण तथा शिक्षण संस्थाओं में साधारण रूपसे अशान्ति हो सकती है।

कार्तिक-ग्रहयोगवश इस मास का फल मध्यमोत्तम है। कहीं कहीं शासनसूत्र में परिवर्तन होगा। नये नये कार्यक्रम का श्रीगणेश होगा। शासकवर्ग में मतभेद बढेगा किन्तु आभ्यन्तर स्थिति मजबूत होगी। पडोसियों से सम्बन्ध सुधरेंगे। राजनैतिक उपद्रव तथा कहीं कहीं खासकर औद्योगिक क्षेत्रों में हड़ताल संभावित है। वस्त्र, खाद्यान्न, फल, रसपदार्थ, धातुपदार्थ, सोना तथा चान्दी का भाव सम रहेगा। खनिजपदार्थ तेलहन तथा दलहन का भाव तेज होगा। खण्डवृष्टि का योग है। किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन भी संभव है।

अगहन-ग्रहयोगानुसार इस मासका फल उत्तम है। गोपनीय अन्तरराष्ट्रीय तथा विघटनकारि षडयन्त्रों को दबाने में शासकवर्ग सफल होंगे। गृहनीति में सुधार एवं राष्ट्रीय शिक्षानीति को व्यापक
एवं राष्ट्रवादी बनाने हेतु प्रयासों में वृद्धि होगी। पिछड़े क्षेत्रों एवं पिछड़े वर्गों के विकास के
लिए नवीन नीतिओं का श्रीगणेश होगा। व्यापार तथा पूंजी निवेश की प्रक्रिया में नवीन प्रयोग
होंगे। खनिज पदार्थ तथा धातुओं में तेजी का योग है। पीले पदार्थ, तेल आदि के भाव में वृद्धि,
होगी। खाद्यान्न सस्ते रहेंगे परन्तु गेहूँ एवं काले पदार्थ तथा रक्त पदार्थ तेजी पर रहेंगे।

पौष–इस मास का फल मध्यम है। मध्यवर्गी व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं में असन्तोष का वातावरण बनेगा। देश विदेश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सुरक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसन्धान का शुभारम्भ होगा। नये २ प्रयोग शुरू किये जायेंगे। नीतिपालन में शासकवर्ग सक्रिय रहेंगे। विषमता दूरकरने हेतु सरकारी तन्त्र में सुधार एव जनकल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित करने का प्रयास होगा। खाद्यान्न, शाकसब्जी, फल, रसपदार्थ तथा वस्त्र का भाव सम रहेगा। सोना चान्दी, कालेपदार्थ तथा खनिज पदार्थों में तेजी का रूख रहेगा। शीतवृद्धि खण्डवृष्टि एवं दिव्यान्तरिक्ष भौम उत्पात संभावित है।

माघ–इस मास का फल उत्तम है। देश की आन्तरिक स्थिति में सुधार, शासक वर्ग में नया उत्साह जन चेतना का संगठित होना आदि संभावित है। देश में उत्पादन तथा व्यापार की स्थिति सुदृढ होगी। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मन्दी के कारण निर्यात में भारत को संघर्ष करना पड़ेगा। राजनैतिक उथल-पुथल की स्थिति रहेगी। विश्व के किसी प्रसिद्ध नेता के निधन का योग भी है। सैनिक शासन वाले देशों में सैनिक क्रान्ति तथा शासन सूत्र में परिवर्तन का योग है। राजतन्त्र प्रधान देश में उच्चस्तरीय राजनैनिक षडयन्त्र संभावित है। मास मध्य में खण्डवृष्टि होगी। शीतवृद्धि तथा खण्डवृष्टि के कारण लोगों को कष्ट होगा। काले पदार्थ, रस, एवं तेलहन की मूल्यवृद्धि होगी। खाद्यान्न, फल, सोना, धातु पदार्थ, खनिज पदार्थ तथा इमारती सामान का मूल्य सम रहेगा।

फाल्गुन इस मास का फल सामान्यतः शुभ है। देश-विदेश में राजनैतिक गतिविधियाँ तेज होंगी। राजनैतिक दृष्टि से इस मास में अस्थिरता संभावित है। हडताल से अस्थिरता संभावित है। मित्र राष्ट्रों में व्यापारिक समझौते संभावना है। बाजार में आर्थिक संकट तथा पूंजी की कमी रहने पर भी व्यपारिओं को अधिक लाभ होने की संभावना है। खाद्यान्न फल आदि का भाव सम रहेगा। सोना, धातु पदार्थ खनिज पदार्थ, चमड़े का सामान तथा इमारती सामान का मूल्य मन्दी-तेजी के क्रम में रहेगा। वायु के साथ खण्डवृष्टि योग भी है।

चैत्र–इस मास का फल मध्यम है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध वर्जन प्रस्ताव पर विचार विमर्श होने पर भी युद्धक सामग्रियों में अप्रत्याशित वृद्धि होगी। छोटे व्यापारियों तथा कर्मचारिओं को सरकारी पक्ष से लाभ मिलने की संभावना है। विदेशी बस्तुओं तथा काले धन पर सरकार की वक्र दृष्टि रहेगी। व्यापार घाटा प्रद रहेगा। मुद्रास्फीति बढ़ेगी। मासारम्भ तथा मासान्त में खण्डवृष्टि योग भी लक्षित होता है। वायु की अधिकता एवं तापवृद्धि की भी संभावना है। पश्चिमी राज्यों में उपद्रव बढेंगे। खाद्यन्न खनिज एवं धातु पदार्थ प्रायः सस्ता रहेगा, परन्तु मासान्त में तेजी की संभावना है।

(शेष पृष्ठ ४० पर)

॥ अथ ग्रहणां तान्त्रिकमन्त्राः ॥

अथ सूर्यस्य ओम घृणिः सूर्याय नमः ॥ चन्द्रस्य-ओम् सों सोमाय नमः ॥ कुजस्य-ओम् अं अंगारकाय नमः । बुधस्य-ओम् बुं बुधाय नमः ॥ गुरोः ओम् बृं बृहस्पते नमः ॥ शुक्रस्य-ओम् शुं शुक्रायनमः ॥ शने -ओम् शं शनैश्चराय नमः । राहोः-ओम् रां राहवे नमः ॥ केतोः-ओम् कें केतवे नमः ॥

ग्रहाणां समिधः-अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात । शाकल्यनिर्माणम्:-तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताःतण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः ॥ यवार्द्धं शर्कराप्रोक्तं सर्वार्द्धन्तु घृतंस्मृतम् । छन्दोगानां देवता-प्राणप्रतिष्ठामन्त्र-ओम् वाङ मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्र शर्म्मविर्भूतिः प्रतिष्ठा ॥ बाजसनेयिनां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः-ओम मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञगं समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

अथ शुभदिनानि—चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि । शुभतिथयः – २.३.५.७.१०.१२.१३.१५ ।

शुभनक्षत्राणि-अश्वि रो. मृ. पुन. पु. ह चि. स्वा. श्र. रे. । शुभलग्नानि राशयश्च वृष. मिथुन. कर्क. कन्या, तुला, धनु, मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जावती, कुष्ठ (कुड़), बला (बरियार), प्रियगु (काउनी धन (मोथा) सर्षपः हरिद्रा देवदारु, पुंखा (सहरफोंका, लोध्र एतौरोषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदुर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दनधान्य शतावरी तीर्थोदकसप्तमृतिका तिल जव-पञ्चगव्यताम्बूल-पञ्चपल्लवं-पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अर्द्ध प्रहराबोधकचक्रम

दिन.	सू	चं.	मं,	बु.	बृ.	शु,	श.
दिने	४।५	७।२	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	७।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः ।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ।
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः ।
सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे ।
शुक्रो दशसहस्त्राणां बुधो दशशतानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

तिथय	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
शा	पू०	अ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०

गर्भाधानमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु । चं.बु.शु. वारेषु । रात्रौः रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रि यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः पापै स्त्र्यारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम् । मृ. पुष्य. श्र. मू. पुन. रो. रे. उत्तरा ३(जन्मभं विना) नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे कृष्णे १० यावत । सू. मं. बृ. वारेषु मतान्तरेण शु. चं. अपि पूर्वाह्ने । पुंभस्यांशे तदेशे शुभम् । तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभैः १।४ ५।७।९।१० स्थितैः चन्द्रे २।३।४।५।७।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम ।

जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एवं जातकर्म पिता कुर्यात । तदतिक्रमे एकादशे वा द्वादशेऽह्नि मृ चि.अनु.रे. उत्तरा ३ रो. अश्वि. पुन.पु. स्वा. श्र. ध. श.भेषु. पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम ।

शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ पुन पु. उत्तरा ३ ह. चि, अनु. श्र. ध; श; रे नक्षत्रेषु शुभतिथिषु शुभदिनेषु वृषसिंहवृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तन्यपानं शुभं शिशोः । अथान्नप्राशनोक्तदिततिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम । भैषज्योदित-नक्षत्रेषूक्त । अग्रहणमौषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम् ।

सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि, रो, मृ, ह, स्वा, अनु, उत्तरा ३ रे नक्षत्रेषु रवि, मङ्गल, बृहस्पति वारेषु शुभलग्ने शुभेदृग्युते । १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्ले, पूर्वा, ३ ज्ये, ध, श, नक्षत्रेषु मध्यमम ।

प्रसूतिनालच्छेदनमुहूर्त्तः – अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, वि, अ, ज्ये, श्र, ध, श, रे, भेषु, ३।५।७।१०।११।१३। तिथिषु ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः:-भ, आ, श्ले, म, वि, श, रहितनक्षत्रे शनिमंगलरहितदिने शुभ तिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरण (लहठी धारण) शुभम् ।

शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः-जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिवसेऽर्कमितेऽह्नि वा शुभम् ।

शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजबले पञ्चमे मासि उत्तरा ३ रो, मृ, ज्ये, अनु,अश्वि, ह, पुष्य, अभि नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, सिंह, बृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेषयेत् । तन्मन्त्रः-रक्षैनं वसुधे देवि सदासर्वगतं शुभम । आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अत्रैव शिशोस्त्रे वस्त्रं, शस्त्र, लेखनी, पुस्तक, सुवर्णं रौप्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालऽयं गृहणाति तैस्तस्य वृति ज्ञातव्येति ।

शिशुविलोकनमुहूर्त्तः –तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम ।

नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११ क्षत्रियाणां ११ वैश्यानां १६ शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम । अथवा स्वा, पुन, श्र, श, ह, अश्वि, पू, अभि, उत्तरा ३, रो, मृ रे चि अनु नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु चं बु बृ शु दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७.९।१० स्थैः पापैः ३।६।११ स्थैः ६।८ गृहे शुद्धे चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते । लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु, बालकानां षष्ठात्सप्तममासेषु रो उत्तरा ३ मृ रे चि अनु स्वा पुन श्र ध श ह अश्वि पुष्य अभि नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु चं बु बृ शु दिनेषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशे च त्यजेत । शुभैः १।४।५।७।९ स्थितैः पापैः ३ ६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने ४।८।६।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशन शुभम ।

कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत चं बु बृ शु दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र ध पुन ह अश्वि पुष्य अभि मृ रे चि अनु नक्षत्रेषु १२।१६ दिने ३।७।८ मासे वा विषयवर्षे चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु शुभैः १।२ ३।७।९।१९ गतं पापैः ३।६।११ गतैः लग्नस्थे गुरौ चोतमः । चन्द्रबले सति शुभः ।

चूड़ाकरण (मुण्डनाद्यकचकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि ६ मासे ज्येष्ठाग्रहणयोः (ज्येष्ठ संतानं विना) विषमवर्षे अश्वि मृ पुन पुष्य ह चि स्वा ज्ये अभि श्र ध श रे नक्षत्रेषु च बु बृ शु वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत २।३।४।६।७।९।१२ एतद्रागेलंग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे पापैः २।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः जन्मराशिलग्नयोरष्टमान्यतमलग्ने ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम ।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (बालो यदि क्षमस्तदा तात्पूर्वमपि) गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मीकुलदेव-ग्रामदेवता विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः अश्वि आर्द्रा पुन पुष्य ह चि स्वा अनु अभि श्र नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत । च बु बृ शु दिनेषु वृष मिथुन कन्या धनु मीन लग्नेषु तन्नवांशे चोतमः । कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे खेऽस्ते गुरुबुध-शुक्रे लग्ने ग्रहबलाढ्ये शुभः ।

* विद्यारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मी सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे वृद्धे सञ्जाते विद्यारंभः कार्यः। सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि.मृ.आर्द्रा.पुन पुष्य.आश्ले ह चि.स्वा.मूल.पूर्वा ३ श्र. ध.श.नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गृहगतैः पापैः ३।६।११ गतैः वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदशेवा विद्यारंभः शुभावहः।

* अथोपनयन-(व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुद्धसमये उत्तरायणे, माघादि षण्मासेषु, सू.चं,बु.बृ.शु, वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे मध्याह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२,मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया,आषाढ़१०।११चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा, पुष्य. आश्ले. पूर्वा ३ उत्तरा ३ ह. चि० स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादि-युगादिषु अपराह्णे,सायं,प्रदोषेऽनध्यायेकृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम, त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रोद्विघूनदि-क्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवश्च षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात १२ गतौ न शुभौ, १।५।८ स्थाः पापाः न शुभाः। ६।८।१२ गताः शुभाः। न शुभप्रदाः, ३।६।११ गताः पापाः शुभदाः पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतो शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः॥ १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः॥ रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चमवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्यद्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्त-रगौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

卐अथ प्रदोष निर्णयः—यदातृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां यदा मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयो-दशी एवञ्च षष्ठ्यां यदा सार्द्ध प्रहर रात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यः, तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

* अथ विवाह मुहूर्त्तः

मार्ग. माघ. फा. वै. ज्ये. आषाढ़मासेषु सौरक्रमेण, (आषाढ़े हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।।६।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु पञ्चशलाकावेधरहितेषु, वृष. मिथुन. कन्या, तुला. धनु. मीन. लग्नेषु शुभग्रहेषु १।४।५। ७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहकाले १।४।५।७।९।१० स्थानेषु यदिगुरुर्वाशुक्रो भवेत् तदा मङ्गलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठोवरः जेष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासेविवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्। आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठेऽपि विवाहः शुभः।

* वरवरणमुहूर्त्तः

शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकारोहिण्युत्तरात्रयपूर्वात्रयनक्षत्रेषु विवाहोक्तभेषुच फलपुष्पवस्त्रादिना वरवरणं शुभम्।

* कन्यावरण मुहूर्त्तः

शुभतिथिदिनलग्नेषु; कृत्तिका-पूर्वात्रयनक्षत्रेषुविवाहोक्तभेषुच फलपुष्पवस्त्रादिभिः कन्यावरणं शुभम्।

* विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माण मुहूर्त्तः

तत्र चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकं कार्यं उपनयनादि मुहूर्त्ते चोपनयनादि सर्वं कार्यं विधेयम्। परञ्च विवाहदिनादुपनयनदिनाद्वा त्रिषण्नवमिते पूर्वादिने तत्कार्यं न कर्तव्यमिति।

❁ महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य जपविधिः-गणेशस्मरणपूर्वकं शांतिपाठं कृत्वा कुशतिलजलान्यादाय सकल्पः-ॐ अद्य अमुकेमासि अमुकेपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टकष्टनिवृत्तिप्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्टवबलपुष्टिनैरुज्य प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत -माध्यन्दिनशाखीय "ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ" इति महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसङ्ख्यक जपमहंकरिष्यामि। ऋष्यादिन्यासः-वामदेवकहोलवशिष्ठाःऋषयः शिरसि। पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छ-न्दांसि मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताऽयै नमः हृदि। ह्रीं शक्तये नमः लिंगे। श्रीं बीजाय नमः पादयोः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः(समस्तमन्त्रः)अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठाः ऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयायनमः ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायैवषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालाय मां रक्षरक्षअघोराय अस्त्राय फट्। इति षडंगन्यासः ततः चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदीप्तममलं हास्यास्य पंकेरुहम् सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्ष सूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्' इत्यनेन-ध्यात्वा यथोपचारैःसम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणामार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत। लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः-ॐ जूं सः। ❁

* वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चम-सप्तम-नवमदिने च ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्र, पौष-भाद्र-मलमास-क्षयमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचाराकालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु चं.बृ.शु.श. वारेषु मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि, रो मृ पुष्य, म. उत्तरा ३ ह.चि.स्वा,अनु, मू,श्र, ध,रे, नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।८।९। ११।१२ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टम् शुद्धे शुभः।

* नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो मृ उत्तरा ३ पुष्य कृ.रो.वि. ज्ये. श्र. ध. श रे. नक्षत्रेषु, बु बृ श वारेषु शुभतिथौ, शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत। २।५।८।११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे। शुभे वलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

* द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु-मू. श्र.ध. श.रे. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।-१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत। सू. च. बु. बृ. शु. वारेषु, मृत्युयोगादिरहितेषु : २।३।६।-७।१२ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम। विषमवर्षे सौरक्रमेणाग्रहणफाल्गुनवैशाखमासेषुशुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे शुक्रोदिते द्विरागमः शुभः। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादि विषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्ध विहितनक्षत्रेषु (रे. अश्वि. रो. मृ) सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्ते काले द्विरागमनं शुभम्

* वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तं

रो. मृ. पुष्य. उत्तरा ३ ह. अनु. पू.षा. ध.श.रे. नक्षत्रेषु शुभतिथि दिनेषु, ४।१०।११।१२लग्नेषु राशौ च॥ बुधे दशमस्थे। गुरुबुधयोरन्यतरस्यलग्ने, पापैनिः बलैः, शुभैः सुबलिभिः शुभम।

* जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

चैत्ररहित उत्तरायणे शुद्धसमये, शुक्लपक्षे सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।-१५ तिथिषु। मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पुष्य. स्वा, पुन, श्र, ध, श, रो, उत्तरा ३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवस्यकतिथिदिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंह सूर्ये कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शङ्कर स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्याः चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रे पापैः ३।६।११ स्थितैः। शुभैः १२।८भिन्नस्थानगतैः देवतादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुद्धःश्रवणायां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतः देवोत्थानैकादश्यां, रामनवम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीपमालिकायां शङ्करस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

कूपचक्रं रोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम्
नैऋ	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम्
वायु	३	जलहानि
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यर्क्षाद्ध्येवमेव गणनीयम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

स्थान	न	फलानि
पूर्व	२	जलस्राव:
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानि
नैऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
बाह्य	३	अमृतजलम्

अथ रोहिणी नक्षत्राद्वापी चक्रम्

स्थान	न.	फलानि
पृष्ठ	४	शुभ जलम्
नाभौ	४	बुद्धिनाश:
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलह:
नेत्रयो:	४	धनागम:
पादयो:	४	दुखम्

हवनचक्रं सूर्यभात्

न.	ग्रह	फलानि
३	सू	अशुभ
३	बु.	शुभ
३	शु	शुभ
३	श.	अशुभ
३	च.	शुभ
३	म.	अशुभ
३	बृ.	शुभ
३	रा	अशुभ
३	के	अशुभ

बीजपवने फणिचक्राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	८	३	८	३	८	३	८	३	४
फल	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ

अथ हलचक्रमर्कमुक्तभात्

नक्षत्र	३	८	९	८
फल	पशुघ्नं	शुभम	अशुभ	शुभम

* अथ (वास्तु) गृहारम्भे शुभमुहूर्त्त: वैशाख, आषाढ (पशुगृहं त्यक्त्वा) कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु। सम्मुखकालवर्जितसमये। २।३।५।७।१० ११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लेपक्षे। कृष्णे ५ यावत। अश्वि.रो,मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं.बु.बृ.शु.श. वारेषु॥ शुद्धसमये॥शुद्धेवृषवास्तु चक्रे, पृथ्वीशयन नक्षत्र रहित नक्षत्रेषु। २।३।५।६।८।९।११।१२लग्नेषु लग्ने शुभदृग्युते। शुभं: १।४।५।७।९।१० स्थितौ: पापै: ३।६।११ स्थितै: ८।१२ ग्रहरहिते शुभ:। तृणकाष्ठादि गृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माण शुद्ध समय एव। देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम्।

देवालयगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातदिक	नैऋत्यां	आग्नेय्याम	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु.सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध.सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.क. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क.सूर्ये	सि.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्

स्थान	न०	फलानि
मु.	१	अग्निदाह:
पू.	४	उद्वसनम्
द.	४	लाभ:
प.	४	धनम्
उ.	४	कलह:
म.	४	विनाश:
अ	३	स्थिरता
क.	३	स्थिरता

गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्

स्थान	न०	फलानि
शीर्षे	३	अग्निभयम्
अ. पा.	४	शून्यम्
पृ. पा.	४	स्थैर्यम्
पृष्ठ	३	धनम्
द. कु.		लाभ:
पु.		नाश:
पु.	३	धननाश:
मुखे	३	कष्टम्

अथ तिथीनां नन्दादिसंज्ञा

संज्ञा:	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहू
तिथय	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

*अथ गृहप्रवेशे शुभ मुहूर्त- वैशाख, आषाढ़, कार्ति, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावणमासेषु २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। आश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा, अ. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. बृ. शु. श. बारेषु। शुद्ध समये। शुद्ध कुम्भ चक्रे। २।५।८।११ लग्नेषूत्तमः। ३।६।९।१२ मध्यमः॥

जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय (३।६।१०।११) राश्यंशयो: स्थिरे राशौ, लग्नात् १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभा:। ३।६।११ स्थानेषु पापा:।४।८ भवने ग्रहरहिते। सम्मुखकालरहित समये शुभ:। इष्टिकादि गृहप्रवेश: शुद्धसमये। तृणकाष्ठादिनिर्मित गृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपिशुभ:। अग्निभये राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्य:।

* अथ धरणि विचार:-स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसयुतमष्टभिश्च हरेद् भाग शेष धरणिरुच्यते। पशुहानि: पशा: रोग: पशुलाभ: पशुक्षय:। पशुनाश: पशावृद्धि पशाभदा बहुपशु:।

* पृथ्वी शयननक्षत्राणि:-सूर्यस्थनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते तेन पृथ्वीशयनक्षत्रेषु तड़ागवापीकूपवास्तुप्रभृतकार्य ट्यूबवेल बोरिंग प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्

* ट्यूबवेल बोरिंग टकी प्रभृति स्थापने शुभमुहूर्त्त:-कृतिका आश्ले, मघा, पूर्वा३, भरणी, विशा, मूल नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।१०।१३।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत चं, बु, शु, बृ, वारेषु॥ पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा १।२।३।४।६।७।९।१०।११।१२ लग्नेषु लग्ने शुभयुक् दृष्टे। शुभै:-१।४।५।७।९।१० स्थितै:। पापै: ३।६।११ मतै: शुभम्।

* मासस्नानमुहूर्त्त:-विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं, २,३,५,७,१०,११,१३ तिथिषु, च. बु.बृ.शु दिनेषु; आर्द्रा, पुनपु, श्ले.म.पूफ.उफ.ह.चि. स्वा. नक्षत्रेषु वृष.मि.क.तु.लग्नेषु शुभम्।

* चुल्हिकास्थापनमुहूर्त्त:-अश्वि, म, वि, रा, मू, उत्तरा, ३ कृ, मू, पूषा, ध, आर्द्रा, नक्षत्रेषु। शु मं, श, दिनेषु। शुभ, तिथि लग्नेषु शुभम्।

* चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनेष्टभावधि

स्थान	न	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्
शीर्षे	४	मृत्युभयम्
बाह्ये	८	सुखम

स्थान	न०	फलम्
गर्भे	५	नाश:
हस्ते	२	भोग:
चरणे	२	स्त्रीमृति:

* मन्त्रग्रहणे शुभ मुहूर्त:-अश्वि. रो. पुन, पुष्य, उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. धनि. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु।शुक्लपक्षे।अत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्। गु. चं बु बृ.शु. वारेषु। शुद्ध समये प्रात:मध्याह्ने वा। २।३।४।५।६।७।९।१२ लग्नेषु। शुभै: १।४।५।७।९।१० स्थितै:॥ पापग्रहै: ३।६।११ स्थितै: चं. वं. आश्वि. का.अग्र. मा. फा. मासेषु (सौरक्रमेण)। संक्रान्तौ पूर्णिमायां, नवरात्रमध्ये ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि युगादिषु च मुहूर्त्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।

* व्रतोद्यापन शुभ मुहूर्त:-अश्वि.रो. पुन. पुष्य. उत्तरा३. ह. चि. स्वा अनु.मू.श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु शुद्धसमये कृष्णाणव्रतानिमु दिवस वा। का.मा.फा.चै. वै. ज्य. आषा. मासेषु। शुभलग्नेषु। कार्तिकव्रतोद्यापन आकाशदीपदान व्रतोद्यापन च शुद्धसमये वृश्चिक सङ्क्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषण सह सम्बन्ध: तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम् शुभ:। १।४।५।७।९।१० स्थितै:॥ पापै: ३।६।११ स्थितै:। पञ्चमांशे नवमांशे गुरोश्च बलाढ्ये ज्ञातशुभमन्यथा ग्रहशुद्धयभावेऽपि परमावश्यकस्थितौ शुभम्।

* यात्रायां शुभमुहूर्त्त:-वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु। अश्वि. मृ, पुन. पुष्य. ह. ज्ये. अनु. श्र. रे नक्षत्रेषूत्तमः। रो. पूर्वा३. चित्रा, स्वा, मू, पूषाढ नक्षत्रेषु मध्यम:। मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्तसंक्रान्तिमासादि प्रभृति दोषर्वर्जिते। अमृत सिद्ध सर्वार्थसिद्धादि शुभयोगेषु। अमावास्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यदा शुभतिथिषु॥ दिक्शूलरहिते दिने॥ २।४।६।८।९ तारासु। पञ्चमताराया: प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च। १।२।३।५।६।७।९।१०।११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि॥ सम्मुखदक्षिणलग्ने च ॥सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि। द्विरागमनानन्तरं पितृगृहागताया:पुन:पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौत्याज्यौ। तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्य। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन यात्रा कार्या।

* राहु (काल) वास:-सौरक्रमेणाग्रहणपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां फाल्गुन चैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायाम्॥ भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवास:॥

* सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणा नक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

* दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमवारे शनिवारे च पूर्वस्यां, बृहस्पतिवासरे दक्षिणस्यां रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मगलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमन निषिद्धम्॥ परिहार:-रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयगुडतिलदधियवमाषान भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत।

* विदिक्शूल विचार

शनौ पूर्वे, चन्द्रे अग्निकोणे, गुरोर्याम्यां, बुधे, नैऋत्यां,सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर न गन्तव्यम्।

* लग्नचन्द्रयोर्वास:

मेषसिंहधनुराशिषुपूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुम्भ राशिषु पश्चिमायां,कर्कवृश्चिकमीनराशिषुत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वास:। सम्मुखदक्षिणस्थलग्नचन्द्रे च यात्रा शुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्राशुभेति।

* चन्द्रविचार:

जन्मनामराशितोऽभीष्टादवस्थ चन्द्रं यावद्गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।९।१०।११ संख्याकश्चन्द्र: शुभप्रद:॥ ८ चन्द्र: मृत्युप्रद:। ४ कलहप्रद:। १२ हानिकारक:। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थं माल्यतण्डुलशङ्खदीपश्वेतवस्त्रादि दानकार्यम्।

* द्वादशतम चन्द्रस्यविशेष:

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ:॥ अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु।

* जन्मनक्षत्रे त्याज्यविषया:

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्र: प्रशस्त: सर्वकर्मसु॥ क्षौरभैषज्य वादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ अथजन्ममासेत्याज्य:-क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च॥

सिद्धादियोगचक्रं तिथिदिनवशेन नक्षत्रादिवशेन च

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थसिद्धियोगाः	अश्वि.पुष्य ह. मू.	रो.मृ.पुष्य अनु.श्र.	अश्वि.	रो.मृ. ह.अनु.	अश्वि.पुन. पुष्य.अनु.रे.	अश्वि.पुन. अनु.श्र.रे.	रो.स्वा.श्र.
मृत्युयोगः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	× ×	× ×	४।९।१४	× ×	× ×	× ×	४।९।१४

ताराचक्रम

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्तम्	क्षेमः	प्रत्यार	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	×	गुडम्	×	लवणम्	×	तिलाः	×	×

जन्मनामप्रामनक्षत्राद्वाऽऽरिष्ठदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत्। शेष तारा स्यात्। तत्र २।४।६।८।९ ताराः शुभदाः। १।३।५।७ अशुभदाः। विशेषः- पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा ३ च भवेत् न प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तारा अशुभा तत्र दान कार्यम्।

कालशूलम्–उषाकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां,सायंकाले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्। कालशूलदोषत्वात्।

पञ्चक (भदवा) विचारः

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसञ्ज्ञकानि॥ तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठादिसंग्रहशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्यजेत्॥ तत्रापवादः–वस्वादौ शतभिषमध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च-पञ्च घटी त्याज्या रेवती सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथि मासान्तादिविचारः

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषेकुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येऽष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्॥ एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापर-दिनञ्च (मासान्तमासादिसञ्ज्ञकम्) यावादि शुभकार्येषु त्याज्यम्।

पुराणादिश्रवणमुहूर्त्तः

अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, ह, चि, स्वा अनु, मू,श्र, नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु॥ सू, चं, बु, वृ, शु दिनेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुक्दृष्टे बलाढ्ये शुभं १।४।५।७।९।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। उत्तरायणे श्रा आश्वि, कार्ति, अग्र. मासेषु। तीर्थक्षेत्रे, देवालये,सिद्धक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तं विनाऽपि शुभम्।

इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६नक्षत्रेषु शुभं ततः ६ अशुभं ततः ४ शुभं ततः ८ अशुभं ततः ४ शुभम्।

नवान्नपार्वणमुहूर्त्तः

अ, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, अ, श्र, ध, रे नक्षत्रेषु शुभं। मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम्। सू. चं, बु, वृ, वारेषु। शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशंयावदावश्यके २३ अंशं यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुम्भस्थे सूर्ये वा कार्यम्।२।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु लग्ने शुभयुक्दुष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम्। नवान्नपार्वणं जन्मतारा-विशाखस्थसूर्यः-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र – पूर्वात्रय-मघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्र-सौरक्रमेण कार्तिकपौषचैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशीरिक्त मंगलशनिशुक्र दिनानि निषिद्धानीति। अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः।

कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्त्तः

अश्वि, रो, मृ, पुन पुष्य उत्तरा ३ ह, स्वा, अनु, मू, श्र, ध,श, रे, नक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे,कृष्णे५यावत,२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं, बु, वृ, शु, वारेषु, शुद्ध समये॥ आवश्यकेऽ-शुद्धेऽपि॥ चैत्रपौषभाद्र मलमासक्षयमासरहिते शुभम्। शुभलग्ने॥ लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्त्या शुभकः।

चक्रस्थापनमुहूर्त्तः

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभलग्ने शुभम्।

धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः

मू, ज्ये, आश्ले, आर्द्रा पूभा, ह, कृ, ध, श्र, मृ, स्वा, म उत्तरा ३ पूषा. भ. चि, पुष्य, नक्षत्रेषु सू, चं, बु, वृ, शु, दिनेषु। १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम। अन्यान्यपि यवादीनि एष्वेव छेद्यानि।

मेधिरोपणमुहूर्त्तः

अश्वि. रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा३ ह, चि, स्वा, अनु, श्र, ध, रे, नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं [illegible]।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः मङ्गले कदम्बम, बुधे उदम्बरम् गुरौ आम्रम् भृगुजे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कणमर्दनमुहूर्त्तः

मघा, पूफ. उफ, रो, ज्ये, मू, अनु, श्र, रे, नक्षत्रेषु। शुभतिथि-दिनलग्नेषु शुभम।

धान्यस्थापनमुहूर्त्तः

अ, रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनेषु॥२।३।५।६।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः

अ, रो. पुन. पुष्य, उत्तरा३, स्वा, वि, ज्ये, श्र, ध, श, नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभः।

बीजबन्धन (स्थापन) मुहूर्त्तः

रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा रे. नक्षत्रेषु चं. बु. वृ. शु. वारेषु॥ शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु। २।४।८।११ लग्नेषु शुभम्।

बीजवपनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, चि. स्वा. अनु. मू. ध. पुष्य ह. रे. नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु॥ चं. बु. वृ. शु. दिनेषु। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे। शुभैः केन्द्रकोणगैः पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

हलप्रवहणमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. म. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. म. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। शुभलग्नेषु पापैः निर्बलैः। शुभैः बलिभिः। चन्द्रे जलचरराशिस्थिते तन्नवांशे वा। गुरौ लग्नस्थे। शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

धान्यरोपणमुहूर्त्तः

रोहिणी उफ. वि. मू. पूभा. नक्षत्रेषु। [illegible] दिनेषु। शुभतिथौ शुभलग्ने च शुभम्।

स्वामीसेवा (नोकरी) मुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु। सू.बु.वृ.शु. दिनेषु। शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते॥सूर्ये वा कुजे १०।११स्थे॥ सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीमैत्र्यांचापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः

अश्वि. मृ, पुन, पुष्य. ह, चि, स्वा, अनु, श्र, ध, रे, नक्षत्रेषु। सू, मं, बु, बृ, शु वारेषु, शुद्धसमये। २।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम्।

ऋणप्रदानमुहूर्त्तः (द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः)

स्वा, पुन, मृ, रे, चि, अनु, वि, पुष्य, श्र, ध, श नक्षत्रेषु शुभ-तिथिषु। १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे। ५।८।६ प्रहररहिते। चं, बृ, शु, श, वारेषु शुभम्।

ऋणदाने निषिद्धसमयः बुधवारः। भरणी कृ, आर्द्रा, आश्ले मघा, पूर्वा ३, वि, ज्ये नक्षत्राणि। भद्रा पातयोगश्च।

ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः–रविभौमदिने। संक्रान्तौ। वृद्धियोगे। ह नक्षत्रे च। एषु ऋणार्पणं शुभम्।

संज्ञाः	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	पू.३अश्वि.पुष्य.म.मृ श्र. कृ. ज्ये वि. चि.	४।८।१२।१४	मं.शु	स्थायिजयदः
अकुलः	भर.स्वा.आश्ल.ध.रे.ह. रो.अनु.पुन. उतरा३	१।३।५।७।९। ११।१३।१५	सू.चं. वृश.	यायिजयदः
कुलाकुल	आर्द्रा. म.अभि. श.	२।६।१०	बुधः	उभयोः सन्धिः

नष्टवस्तुज्ञानायचक्रम

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्ष	रो.पुष्य.उफ.वि.पूषा.ध.रे.	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	मृ.आश्ले.ह.अनु उषा.श.अश्वि.	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा.म.चि.ज्ये अभि.पूभाभ.	दूर श्रवण ल भश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुन.पूफ.स्वा.मू.श्र.उभा.कृ.	अलाभः	उत्तरस्याम्

प्रथमलग्नसारिणी ॥ इष्टार्कराश्यंशतलेघटोपलं स्वाभीष्टनाडीपल संयुतञ्च ।
यद्राशि भागस्यतले स्थितंभवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ॥

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उदाहरण- श्रावणकृष्णप्रतिपदा मंगलवार को इष्टदण्डादि ३।५ है। इस दिन सूर्य के कर्कराशि के ५ अंश के नीचे दण्डादि १८।७।४२ में इष्टदण्डादि ३।५ जोड़ने से २१।५।४२ हुआ यह दण्डादि कर्कराशि के २१ अंश के आगे २२ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय २२ अंश से कर्कलग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

॥ दशमलग्नसारिणी ॥ यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेनहीनम् ।
प्रत्यग् तेनाढ्यमियान् विशेष मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्धयैः गणकैः प्रदिष्टः ॥

अंशाः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नतकालसाधनम्-रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंश च्युत चोन्नतम् ॥
यथा-श्रावणकृष्ण प्रतिपदा मंगलवारको इष्टदण्डादि ३।५ के समय (दिनार्ध-इष्टकाल=(१६।४९)-(३।५)=१३।४४ =पूर्वनतघटी।

दशमलग्नोदाहरण-श्रावणकृष्णप्रतिपदा मंगलवार को इष्टदण्डादि ३।५ है। नतकालानयन विधि से इस काल का पूर्वनत १३।४४ हुआ। इसे सूर्य के कर्क राशि के ५ वें अंश के नीचे दण्डादि १९।५०।४२ में घटाया तो (१९।५०।४२)-(१३।४४)=६।६।४२ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में मेषराशि के १६ अंश के आगे १७ वें अंश में पड़ा। अतः उक्तसमय १७ अंश से मीन दशमलग्न हुआ।

इक्षिकारम्भमुहूर्तः-अश्वि रो मृ पुष्य उत्तरा३ ह ज्ये श्र रे नक्षत्रेषु। वृश्चिकवृषसिंहकुम्भ लग्नेषु। रविगुरुशनिदिनेषु। शुभतिथिषु चैत्र-माद्यपौषमलमासक्षयमासभिन्नसमये शुभः।

वृक्षादिरोपणमुहूर्तः-अश्वि रो मृ पुष्य उत्तरा ३ ह चि वि अ मू अभि श रे नक्षत्रेषु। चं बु बृ शु दिनेषु शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम् :-पञ्चक (ध श पूभा उभा रे) रहितनक्षत्रेषु १।२।३।५।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

अग्निवासचक्रम्

शुक्लपक्ष	कृष्णपक्षे	र.	चं	म	बु	बृ	शु	श
१।५।९।१३	२।६।१०।१४	भु.	भु	दि	भू	भु	भु	दि
२।६।१०।१४	३।७।११।३०	भु	दि	भू	भु	भु	दि	भू
३।७।११।१५	४।८।१२	दि,	भू	भु	भु	दि	भू	भु
४।८।१२	१।५। ९।१३	भू.	भु	भु	दि	भू	भु	भु

फलं-भुविसौख्यं; दिविप्राणनाशः, भूतले च धननाश इतिज्ञेयम्।
विधिः-(शुक्लादितिथिसं.+सूर्यादिदिनसं.+१)÷४=३,०शेषे शुभः।१।२ अशुभः

अथ पार्थिव शिवपूजायां विहिततिथयः

शुक्लपक्षे-२।५।६।८।१२।१३। कृष्णपक्षे-१।४।५।८।१०।११।१२।३०।
विधिः-(शुक्लादितिथिसं.×२+५)÷७=१।२।३ शेषे शुभः। अन्यदशुभम्।
१ शेषं कैलाशे, २शेषे गौरिसन्निधौ, ३ शेषे वृषारूढः
शिवः अभीष्टदः स्यात्।

अथ त्रिविध प्रवेशः—दिवा नृपप्रवेशः निशि वधूप्रवेशः दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः ॥

विपणि मुहूर्त्तः-अश्वि. रो. पुष्य. ह. उत्तरा ३. अनु. अभि. नक्षत्रेषु । १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू.चं.बु.बृ. शु. श. वारेषु ॥ शुक्लपक्षे ॥ कृष्णे १० यावत् ॥ १।२।३।४।५।६।७। ८।९।१०।१२ लग्नेषु । लग्ने चन्द्रशुक्रे ॥ पापैः ८।१२ रहितैः ॥ शुभैः २।१०।११ स्थितैः शुभा ।

अथ मोलचालन मुहूर्त्तः-शुभतिथिदिननक्षत्रेषु ॥ १।४।७।१० लग्नेषु ॥ शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः ॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः ॥ लग्नेशधनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम् ।

अथ वस्तूनां विक्रय मुहूर्तः-भर. कृत्ति. आश्ले. वि. पूर्वा ३. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चं.बु.बृ.श. दिनेषु शुभैः १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः ॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः ।

अथ वस्तूनां क्रय मुहूर्त्तः-शुभतिथिदिनलग्नेषु ॥ अश्वि, चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभः ।

अथ भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः-अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुभतिथिषु ॥ सू. चं. बु. बृ. शु. दिनेषु ॥ ३।६।९।१२ लग्नेषु ॥ शुभैः ३।६।९।१२ राशिगतैः ॥ लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु ॥ औषधभक्षणं शुभम् ॥ जन्मनक्षत्रे भैषज्य भक्षणमशुभम् ॥

अथ रक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त्तः-अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु, सू. मं. बृ. वारेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु, चन्द्रतारानुकूले सति शुभम् ॥

अथ चिकित्सा मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. बृ. शु. दिनेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु चन्द्रतारानुकूले शुभा ।

अघोग्रकर्म मुहूर्त्तः—पूर्वा ३, भ. मघा. मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, म. श. दिनेषु ॥ १।८।१०।११ लग्नेषु ॥ १।३।४।५।९।१०।१४ तिथिषु शुभम् ।

अथ मोटर बस साइकिल यानादि चालन मुहूर्त्तं—अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनू. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु च. मं. बृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेश बलयुक्ते १।४। ५।७।९।१० स्थिते । लग्नेशदशमेशसप्तमेशनवमेशैरपि १।४।५।७। ९।१० गतैर्बलयुक्तैः ॥ पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादि चालनं शुभम् ॥

अथ जन्म-नामराशिवशेन विचारणीय विषयाः--विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशि प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥ देशेग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यावहारके । नामराशि प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ।

बाणपञ्चकम्—सूर्यगतांशाः क्रमेण ८।१७।२६ रोगवाणोक्तं, २।११।२०।२९ अनलवाणो गृहाच्छादने, ४।१३।२२ नृपवाणोराजसेवायां, ६।१५।२४ चोरवाणो यात्रायां, १।१०।१९।२८ मृत्युवाणीं विवाहे त्यजेदिति केचित् ।

॥ अथ राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञा चक्रम् ॥

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्विस्व	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह्र	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि

॥ अथ ग्रहोणामुच्चादिबोधक चक्रम ॥

ग्रह	सू	चं	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	कं १५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि.३	क२८	मी १५	म५	कं	मे२०	ध	मि
मूलत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु	कु	कु	सि
जाति	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	च	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२ वर्ष	२४ व	२८ व	३२ व	१६ व	२५ व	३६ व	४२ व	४८ व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपु	पुरु	स्त्री	नपु	पु	पु
आकृ	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

॥ होराचक्रम् ॥

राशिः	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१५ अं	सू	चं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
३० अं	च	सू	चं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

॥ द्रेष्काणचक्रम् ॥

राशिः	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१० अं	म	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
२० अं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	चं
३० अं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

॥ अथ वर्षाज्ञानाय सप्तनाडी चक्रम् ॥

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ.	पूफ.	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये	मू.	पूषा.	उषा.	अभि	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा.	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृ.	संज्ञा

अथहोरालग्नानयनम—द्विघ्नेष्ट नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ॥

॥ अथ त्रिविधायुर्बोधक चक्रम् ॥

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वभावेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम् ।

॥ ग्रहाणां धारणाय मणयः ॥

ग्रहाः	मणयः		
सूर्यः	माणिक्य	गारनेट	विद्रुम
चन्द्रः	मुक्ता	मुनस्टोन	चान्दी
कुजः	विद्रुम	मूंगा	मूगा
बुधः	पन्ना	लीली	सोना
गुरुः	पोखराज	सुनहला	मोती
शुक्रः	हीरा	स्फटिक	चान्दी
शनिः	नीलमणि	यमुनियाँ	लौह
राहुः	गोमेद	लाजवर्त्त	लाजवर्त्त
केतुः	लहसुनिया	लाजवर्त्त	लाजवर्त्त

॥ अथ नवमांशचक्रम् ॥

राशिः	मे.सि.ध	वृष.कं म.	मि.तु. कु.	क.वृ. मी.
३।२०	मं.	श.	शु.	च.
६।४०	शु.	श.	म.	सू.
१०।	बु.	बृ.	बृ.	बु.
१३।२०	चं.	मं.	श,	शु.
१६।४०	सू.	शु	श.	म.
२०। ०	बु	बु.	बृ.	बृ.
२३।२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६।४०	म.	सू.	शु.	श.
३०। ०	बृ.	बु.	बु.	बृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम	
राशिः	मे. तु. मि.ध. सि.कु	राशिः	वृ. वृ. क. म. क. मी.
५अं.	म	शु	५अं
१०अं.	श	बु.	१२अं
१८अं	बृ.	बृ.	२०अं
२५अं.	बु.	श.	२५अं
३०अं.	श	मं.	३० अं

॥ अथायुर्विचारः ॥

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थितेचन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम । प्रकारत्रयेष्वेकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम् । विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् । विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्नेद्वादशेशषष्ठेशयोर्योबली तस्य केन्द्रे स्थित्वा दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुरेव । इत्थमेवात्मकारकवशेनापि बोध्यम् [अष्टमेशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव । विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि एकादशे भवेतर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमेचाल्पायुर्भयः । यदिलग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः, । यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दिर्घायुर्योगः, समस्तदा मध्यायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः ॥ इति ॥ पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः । एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेण ८०,७२,६४ वर्षाण्यायु । अल्पायुष्यपि ४० ३६ ३२ वर्षान्यायुरिति ॥ आयुस्थानं मारकादि स्थानञ्च अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् । द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते । क्वचित्षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः । मारके मारकान्तरमशुभम् परस्परषष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा च शुभा, लग्नेश पञ्चमेश नवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाह्या । व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन माहचार्याद्वा फलदा, चतुर्थेशसप्तमदशमेशानां दशा मध्यमफलप्रद स्थानान्तरं शुभाशुभवशेन शुभाशुभफलप्रदा च । अष्टमेशदशापापफलदा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति ॥

✱ अथद्वादशांशज्ञानम् प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांश तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति । द्वादशांशेशाःस्वराशित एव भवन्ति ।

■ अथ कारकग्रहाः:-ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्यूनांशक्रमेणामात्यभ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः । अंश साम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम् । स्थिरकारकाः तन्वादिभावानां क्रमेणसूर्य-गुरु-कुज चन्द्रगुरु गुरु भौम शुक्रशनि-गुरु बुध शुक्र-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति ।

✱ स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्—जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम् ।

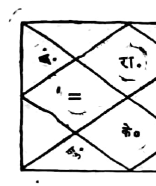
✱ अथ दर्शिद्वादशनक्षत्रेषु रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादिनवसु लौहपादे जन्मबोध्यम् । अथ तेषांफलम्—स्वर्णपादेऽत्युत्कृष्टं रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं लौहपादे च हीनफलमिति ।

ति.दि	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि.	योगा: द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: रा.	सौ.	अं.
१ म.	२२।२८	दि २।१५	श्र.	४२।२८	रा. १।३	प्री. ४०।१४	को २२।२८	मकर	अहो०	३।५।३३।१३	३३।३८	५।१६	६।४४	३१	६	२२
२ बु.	१८।१५	,, १२।३५	ध.	४७।३८	,, १२।२०	आ. ३४।३१	ग. १८।१५	म. १८।३३	दि. १२।४२	३।६।३०।१६	३३।३६	५।१७	६।४३	१	७	२३
३ बृ.	१४।५६	,, ११।१५	श.	४६।४४	,, ११।५६	सो. २६।३४	वि. १४।५६	कुम्भ	अहो.	३।७।२७।१६	३३।३४	५।१७	६।४३	२	८	२४
४ शु.	१२।४०	,, १०।२२	पूभा.	४६।५६	,, १२।६	शो २५।२७	बा. २२।४०	कु. ३१।५५	सा. ६।४	३।८।२४।२२	३३।३२	५।१८	६।४२	३	९	२५
५ श.	११।३८	,, ९।५७	उभा.	४८।३०	,, १२।४२	अतं २२।१८	तै. ११।३८	मीन	अहो०	३।९।२१।२५	३३।३०	५।१८	६।४२	४	१०	२६
६ र.	११।५१	,, १०।३	रे.	५१।१६	,, १।४३	सु० २०।१०	व. ११।५१	मी, ५१।१६	रा. १।४६	३।१०।१८।२८	३३।२८	५।१९	६।४१	५	११	२७
७ च.	१३।२८	,, १०।४२	अ.	५५।१५	,, ३।२५	धृ. १९।५	ब. १३।२८	मेष	अहो.	३।११।१५।३१	३३।२५	५।१९	६।४१	६	१२	२८
८ मं.	१६।८	,, ११।४७	भ.	६०।००	अहो०	शू. १८।५१	को. १६।८	,,	अहो.	३।१२।१२।३४	३३।२२	५।२०	६।४०	७	१३	२९
९ बु.	२१।५६	,, १।१८	भ.	०।१८	प्रा. ५।२७	गं. १९।३०	ग. १९।५६	मे. १६।४६	दि. १।२	३।१३।९।४४	३३।१९	५।२०	६।४०	८	१४	३०
१० बृ.	२४।२७	,, ३।८	कृ.	९।१०	दि. ७।४६	वृ. २०।४१	वि. २४।२७	वृष	अहो ०	३।१४।६।५५	३३।१६	५।२१	६।३९	९	१५	३१
११ शु.	२६।२६	प्रा. ५।७	रो.	१२।३४	,, १०।२३	ध्रु. २२।१५	बा. २६।२६	वृ. ४५।५०	रा ११।४८	३।१५।४।१६	३३।१३	५।२१	६।३९	१०	१६	१
१२ श.	३४।३१	रा ७।१०	मृ.	१६।६	,, १।००	व्या. २३।५२	को. ५।५	मिथुन	अहो	३।१६।१।१७	३३।१०	५।२२	६।३८	११	१७	२
१३ र.	३६।६	,, ९।१	आ.	२५।१६	,, ३।३१	ह. २४।१३	ग. ६।३४	,,	,,	३।१६।५८।२८	३३।७	५।२३	६।३७	१२	१८	३
१४ च.	४२।५८	,, १०।३४	पुन.	३०।५४	,, ५।४५	व. २६।३	वि ११।२	मि. १४।३१	दि. ११।११	३।१७।५५।३९	३३।४	५।२३	६।३७	१३	१९	४
३० म.	४५।४३	,, ११।४१	पु.	३५।२६	रा. ७।३६	सि. २६।८	च. १४।२०	कर्क	अहो०	३।१८।५२।५०	३३।०	५।२४	६।३६	१४	२०	५

श्रावणकृष्णपक्ष: संवत् २०५३, शक: १९०८, सन् १९८४ साल, दि. २२ ७।५६ त: ५।८।८६ प.वत पश्चिमे कान: । वक्री पूर्वोदितो, गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, अगुद: वर्षर्त.: ओमगात्र:, ये.स्थानञ्च ।

अशून्यशयनव्रत, पूर्वोदता बुध: ३६।२८, पञ्चकारम्भ: रात्रौ घ. १ मि. ३ उ., उत्तरा विना यात्रा द्वितीयायां श्रवणायां तत: ×
पूर्वयात्रा द्वितीयायां, गृहारम्भो धनिष्ठाया, (२-३) एकोदिष्टम् भ. ४६।३५ उ. । ×पूर्वं यात्रा, श्रावणेवर्जयेच्छाकम् ।
गृहारम्भस्तृतीयायां, श्रीगणेश ४ व्रतं, भ. १४।४६ या ।
उत्तरयात्रापूर्वभाद्रे मीनस्थिते चन्द्रे ।
मौना ५,मनसा देव्युत्थापनं तत्पूजनञ्च मधुश्रावणी पूजारम्भ:, मार्गी बुध: १३।४३, द. ति. ११।३८ उ. ।
उत्तर यात्रा रेवत्यां सप्तम्यां तत: पश्चिमां विना यात्रा, पञ्चकान्त: रात्रौ घं. १ मि. ४९ उ., गं. ३६।१६ उ. ५१।१६ या, △
सोमवासर व्रतं, पूर्वां विना यात्रा चाष्टम्यामश्विन्यां, उत्तर फल्गुन्यां शुक्र: ५६।८ । △भ. ११।२१ उ. ४२।३६ या, द. ति. ११।५१ या ।
मन्वादि:, (९) एकोदिष्टम्
भ. ५२।११ उ. ।
पूर्वं यात्रा रोहिण्यां, (१०) एकोदिष्टम्, भ. २४।२७ या, ।
अगस्त (८) मासारम्भ:, कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, दक्षिणपूर्वयात्रा रोहिण्यां तत: पश्चिमां विना यात्रा, कन्यायां शुक्र; ३९।४३ ।
दूर्वादलेन पारण, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि, कर्के बुध: ३०।४४ ।
प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा पुनवसौ त्रयोदश्यां, श्लेषायां रवि: २७।१२ स्त्री स्त्री योगा, चं चं योगो रासभ वाहनं नारानाडी ×
सोमवासर व्रतं, प्रदोष १४ व्रत मार्गी शनि: २१।२१, भ. ११।२ या । × तदधिपति: शुक्रस्तेन स्वल्प वृष्टि:, भ. ३६।६ उ. ।
श्रावणी ३०, मन्वादि:, वक्रगत्या कुम्भे गुरु: ५३।५६ । पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षञ्च महद्भयम् ।

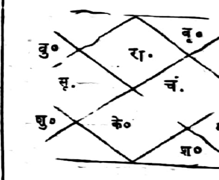
३० कुजेवल्ली ८।३६।६।४३
अयनांशा:-२२।१८।३३



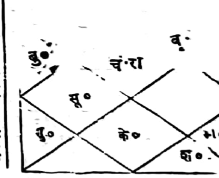
मिश्रम नकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च, दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् =बुचमू

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ मं.	८।१७।३०।३२	२।२६।२६।२१	११।०।५०।३९	४।१९।१८।५	७।१७।५२।१६	६।१३।१४।११	४६।४६	०।५६	२।४६	४।५५	७।१३	९।३०	११।५४	१४।२	१६।२०	१८।३०	२०।२२	२१।५६	२३।२३
२ बु.	८।१७।१९।४३	२।२६।२०।१७	११।०।४७।४०	४।२०।२३।२१	७।१७।५०।२४	६।१३।११।०	४६।४८	०।५२	२।४२	४।५१	७।९	९।२६	११।४१	१३।५८	१६।१६	१८।२६	२०।१८	२१।५२	२३।१९
३ बृ.	८।१७।८।२४	२।२६।१४।१३	११।०।४४।४०	४।२१।२८।३८	७।१७।४६।३३	६।१३।२७।५०	४६।४७	०।४९	२।३९	४।४८	७।६	९।२२	११।३८	१३।५५	१६।१३	१८।२३	२०।१५	२१।४९	२३।१६
४ शु.	८।१६।५८।५	२।२६।८।२	११।०।४१।४०	४।२२।३३।५४	७।१७।४८।१	६।१३।२४।३९	४६।४५	०।४५	२।३५	४।४४	७।२	९।१९	११।३४	१३।५१	१६।९	१८।१९	२०।११	२१।४५	२३।१२
५ श.	८।१६।४७।१५	२।२६।२।१६	११।०।३८।४०	४।२३।३९।१०	७।१७।४६।४९	६।१३।२१।२८	४६।४४	०।४१	२।३१	४।४०	६।५८	९।१५	११।३०	१३।४७	१६।५	१८।१५	२०।७	२१।४१	२३।८
६ र.	८।१६।३६।२८	२।२५।५४।३२	११।०।३५।४०	४।२४।४४।२६	७।१७।४५।२७	६।१३।१८।१७	४६।४३	०।३७	२।२७	४।३६	६।५४	९।११	११।२६	१३।४३	१६।१	१८।११	२०।३	२१।३७	२३।४
७ च.	८।१६।२५।३९	२।२५।४६।५८	११।०।३२।४०	४।२५।४९।४३	७।१७।४४।६	६।१३।१५।७	४६।४२	०।३३	२।२३	४।३२	६।५०	९।७	११।२२	१३।३९	१५।५७	१८।७	१९।५९	२१।३३	२३।००
८ मं.	८।१६।१४।५०	२।२५।३९।२४	११।०।२९।४०	४।२६।५४।५९	७।१७।४२।४४	६।१३।११।५६	४६।४१	०।२९	२।१९	४।२८	६।४६	९।३	११।१९	१३।३५	१५।५३	१८।३	१९।५५	२१।२९	२२।५६
९ बु.	८।१६।८।३८	२।२७।५५।३	११।०।२५।२२	४।२७।५९।७	७।१७।४२।१३	६।१३।८।४५	४६।३९	०।२५	२।१५	४।२४	६।४२	८।५९	११।१५	१३।३१	१५।४९	१७।५९	१९।५१	२१।२५	२२।५२
१० बृ.	८।१६।१।२५	२।२८।४०।४३	११।०।२९।४	४।२९।३।१४	७।१७।४१।४२	६।१३।५।३४	४६।३७	०।२१	२।११	४।२०	६।३८	८।५५	११।१०	१३।२७	१५।४५	१७।५५	१९।४७	२१।२१	२२।४८
११ शु.	८।१५।५६।१३	२।२६।२६।२२	११।०।१६।४५	५।०।७।२२	७।१७।४१।११	६।१३।२।२४	४६।३५	०।१८	२।८	४।१७	६।३५	८।५२	११।७	१३।२४	१५।४२	१७।५२	१९।४४	२१।१८	२२।४५
१२ श.	८।१५।५०।००	३।०।१२।१२	११।०।१२।२६	५।१।११।२९	७।१७।४०।४१	६।१२।५९।१३	४६।३४	०।१४	२।४	४।१३	६।३१	८।४८	११।३	१३।२०	१५।३८	१७।४८	१९।४०	२१।१४	२२।४१
१३ र.	८।१५।४३।४८	३।०।५७।४१	११।०।८।७	५।२।१५।३७	७।१७।४०।११	६।१२।५६।२	४६।३२	०।१०	२।०	४।९	६।२७	८।४४	१०।५९	१३।१६	१५।३४	१७।४४	१९।३६	२१।१०	२२।३७
१४ च.	८।१५।३७।३५	३।१।४३।२२	११।०।३।४४	५।३।१९।४४	७।१७।३९।४१	६।१२।५२।५२	४६।३१	०।६	१।५६	४।५	६।२३	८।४०	१०।५५	१३।१२	१५।३०	१७।४०	१९।३२	२१।६	२२।३३
३० म.	८।१५।३१।२३	३।२।२६।०	१०।२९।५९।२६	५।४।२३।५२	७।१७।४०।२८	६।१२।४९।४१	४६।३०	०।२	१।५२	४।१	६।१९	८।३६	१०।५१	१३।८	१५।२६	१७।३६	१९।२८	२१।२	२२।२९

१ कुजवल्ली ८।३६।६।३६
अयनांशा: २२।१८।३१



८ कुजवल्ली ८।३६।६।३६
अयनांशा: २२।१८।३२



अथ विविध विषया-श्रावणकृष्ण पञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थानं पूजनञ्च कार्यम । अथसोमवासरव्रत:- सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि:-शक्तावुपोषण कार्यमथवा निशिभोजनम् । प्रदक्षिणाविधि:-एका चण्ड्यां रवौ सप्त तिस्रो दद्याच्च विनायके । चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्याद्धं प्रदक्षिणा । आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम् । अथ मांसाभक्षणफलम्महाभारते-मांस मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समा: । न खादति च यो मांस सममेतद्युधिष्ठिर । यस्तु वर्षं शत पूर्णं, तपस्तप्येत सुदारुणम् । यश्च वै वर्जयेन्मांस-समौ तौ न च संशय: कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दिपुराणेकुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम् । उद्यापन विना यत्तु तद्व्रत निष्फलं भवेत् । अथ श्रेष्ठव्रतानि ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम् । व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरियानीति निश्चय: । अथ वृक्षरोपणमन्त्र:-वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च । नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति । अथ दन्तधावन मन्त्र:-आयुर्बलं यशोवर्च्चं प्रजापशुवसूनि च ब्रह्मप्रज्ञां च मेधाञ्च त्वन्नो धेहि वनस्पते ।[illegible]चाराद्य: ।

वातावरणम्—पक्षादित: पञ्चमीं यावद्वायुखण्डवृष्टिमेघच्छायाद्यस्ततो द्वादशी यावत्तापाभ्रच्छायास्वल्पवृष्ट्यस्तत: पक्षान्तं यावद्वायुवृष्टिमेघ-[illegible]
ग्रहस्थिति:—वक्रिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पूर्वोदितो बुध: ५ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, वक्री पूर्वोदित: शनि: १४ तो मार्गी ।

श्रावणशुक्लपक्षः संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३६४ साल, दि० ६।८।८६ त: १९।८।८६ या, पश्चिमे काल: १२ त: उत्तरे काल: ।
वक्री पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, अशुद्ध:, वर्षर्तु :, सौम्यगोल: याम्यायनम् ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ बु०	४७।२६	रा० १२।२५	पू० ३६।०	रा. ६।१	व्य. २५।१६	कि० १६।३६	क. ३६।१०	रा० ६।१	३।१९।५०।१०	३२।५७	५।२५	६।३५	१५	२१	६
२ बृ०	४७।४६	" १२।३१	म० ४१।१३	,, ६।५४	व० २३।२६	ना. १७।२७	सिंह	अहो०	३।२०।४७।३०	३२।५४	५।२५	६।३५	१६	२२	७
३ शु०	४६।५०	,, १२।१०	पू.फ. ४२।६	,, १०।१८	प. २०।४०	तै. १६।१८	सिं० ५७।०६	रा० ४।१६	३।२१।४४।५०	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२३	८
४ श०	४४।४०	,, ११।१८	उ.फ. ४१।५५	" १०।१२	शि: १७।११	व. १६।१५	कन्या	अहो०	३।२२।४२।६	३२।४८	५।२६	६।३४	१८	२४	९
५ र०	४१।२८	,, १०।२	ह० ४०।३३	,, ९।४०	सि० १२।६	व० १३।४	,,	,,	३।२३।३९।२८	३२।४५	५।२७	६।३३	१९	२५	१०
६ चं०	३७।१६	,, ८।२४	चि० ३८।३४	,, ८।५४	सा ६।३३	कौ. ६।२२	क. ६।३३	दि० ६।१७	३।२४।३६।४७	३२।४२	५।२८	६।३२	२०	२६	११
७ मं०	३२।२१	सा० ६।२४	स्वा० ३५।२२	,, ७।३७	शु० ०।१८	ग. ४।५०	तुला	अहो०	३।२५।३४।६	३२।३९	५।२८	६।३२	२१	२७	१२
८ बु०	२६।४६	दि ४।१३	वि० ३१।४७	सा ६।१२	ब्र० ४६।११	व. २६।४६	तु० १७।४०	दि० १२।३३	३।२६।३१।३८	३२।३६	५।२८	६।३१	२२	२८	१३
९ बृ०	२०।५२	,, १।५०	अनु. २७।४७	दि. ४।२६	ऐं० ३८।५८	कौ २०।५२	बृश्चिक	अहो०	३।२७।२९।१०	३२।३३	५।२९	६।३१	२३	२९	१४
१० शु०	१४।४४	,, ११।२४	ज्ये. २३।३६	,, २।५६	वै० ३०।५७	ग. १४।४४	बृ. २३।३६	दि० २।५६	३।२८।२६।४२	३२।३०	५।३०	६।३०	२४	३०	१५
११ श.	८।२२	,, ८।५६	मू० १९।२५	,, १।१७	वि० २३।११	वि. ८।३३	धनु	अहो०	३।२९।२४।१३	३२।२७	५।३१	६।२९	२५	३१	१६
१२ र०	२।३१	प्रा ६।३१	पूषा० १५।३०	,, ११।४३	प्री. १५।५३	बा. २।३१	ध. २६।३७	सा० ५।२२	४।०।२१।४४	३२।२४	५।३१	६।२९	२६	१	१७
१४ चं.	५९।५३	रा २।१७	उषा. ११।५८	,, १०।१६	आ० ८।४८	ग. २४।२५	मकर	अहो	४।१।१९।१५	३२।२१	५।३२	६।२८	२७	२	१८
१५ मं०	४७।३६	,, १२।३६	श्र० ९।१४	,, ६।१०	सौ० २।१५	वि. १९।४६	म. ३८।३	रा० ८।४५	४।२।१६।४६	३२।१८	५।३२	६।२८	२८	३	१९

गं. २८।० उ. ४३।२ या, पुष्ये बुध: २८।६ मार्गी कुज: १५।३५ ।
चन्द्रदर्शनं, मु. ४५ फलं समर्घं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
मधुश्रावणीव्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
दक्षिणयात्राचतुर्थ्यां हस्ते, श्रीगणेश ४ व्रतं, म. १६।१४ उ. ४४।४० या ।
दक्षिण पूर्वयात्रा पञ्चम्यां, नागपञ्चमी, लघुपद्मनामानागराज: श्वेतवर्णः, तक्षकपूजा नागकूपयात्रा च, द्वारमुभयतो भित्यादौ गोमयलिखिता नागा पूज्याः,
गृहप्रवेश: सप्तम्यां, सोमवारव्रतं, हस्ते शुक्र: ११।११, द. ति. ३७।१६ या । द. ति. ४१।२८ उ., कल्कयवतार: ।
शुक्लयोगमानं ५३।११, तुलसीदासजयन्ती, दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वात्यां, म. ३२।११ उ. ५१।३५ या ।
× ।
गृहप्रवेशो दशम्यामनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रा दशम्याम् । × एकोदिष्टम् ।
३६ तम: स्वतन्त्रतादिवस:, गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च मूले, उतराषाढावृश्चिकगे चन्द्रे ततः पूर्वोत्तरयात्रा, गं. १०।३६ उ. ३२।३६ या,म.४१।३६ उ,(१०-११)×
मासान्त:, पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, दोलोत्सवारम्भ:, आश्लेषायां बुध: २१।१०, म. ८।३३ या । △मि. ४४ उ.सायं घं. ६ मि० ८ या, □
त्रयोदशी मानं ५४।२६ अवमं, दुर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, मघायां सिंहे च रवि: २३।३२ विष्णुपदी संक्रान्ति: मु. ४५ फलं समर्घं पुण्यकालो दिवा घं. ११ △
मासादि: प्रदोष १४ व्रतं सोमवासरव्रतं, म. ५१।५३ उ. । □पुंस्त्री योग: चर्च योग: मण्डूकवाहनं नीरानाडी तदधिपति: शुक्रस्तेन मध्यमवृष्टि: सिंहादित्यारम्भ२३।३२ ।
श्रावणी १५ स्नान दानादि: उपाकर्म, रक्षावन्धनं संस्कृतदिवसमहोत्सव:, दोलोत्सवान्त:, हयग्रीवावतार: पञ्चकारम्भ: दि. घं. ६ मि. १० उ, शोभनयोगमानं २४।१, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वं यात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा ।

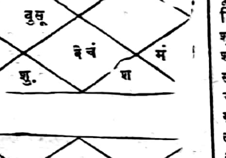
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:
१ बु०	८।१५।३१।५०	३।३।४२।२९	१०।२६।५४।०	५।१५।२५।५३	७।७।४०।३०	६।२।४६।३०
२ बृ०	८।१५।३२।१८	३।४।५५।५२	१०।२६।४८।३२	५।१६।२८।२	७।७।४०।३२	६।२।४३।१९
३ शु.	८।१५।३२।४५	३।६।६।१८	१०।२६।४३।३	५।१७।३०।७	७।७।४०।३४	६।२।४०।८
४ श.	८।१५।३३।१२	३।७।२२।४४	१०।२६।३७।३५	५।१८।३२।१२	७।७।४०।३६	६।२।३६।५८
५ र.	८।१५।३३।३९	३।८।३६।१०	१०।२६।३२।६	५।१९।३४।१७	७।७।४०।३८	६।२।३३।४७
६ चं.	८।१५।३४।७	३।९।४९।३६	१०।२६।२६।३८	५।२०।३६।२२	७।७।४०।४०	६।२।३०।३६
७ मं०	८।१५।३४।३४	३।११।३।१२	१०।२६।२१।९	५।२१।३८।२७	७।७।४०।४२	६।२।२७।२५
८ बु०	८।१५।४०।२५	३।१२।३२।२७	१०।२६।१५।४२	५।२२।३८।२३	७।७।४१।४१	६।२।२४।१४
९ बृ०	८।१५।४६।१५	३।१४।१।५२	१०।२६।१०।१५	५।२३।२८।१२	७।७।४२।४०	६।२।२१।४
१० शु०	८।१५।५२।६	३।१५।३१।१७	१०।२६।४।१८	५।२४।३८।१५	७।७।४३।३९	६।२।१७।५३
११ श०	८।१५।५७।५७	३।१७।०।४२	१०।२८।५४।४१	५।२५।३८।१२	७।७।४४।३८	६।२।१४।४२
१२ र०	८।१६।३।४८	३।१८।३०।७	१०।२८।४८।१४	५।२६।३८।८	७।७।४५।३७	६।२।११।३१
१४ चं०	८।१६।९।३८	३।१९।५९।२१	१०।२८।४१।२७	५।२७।३८।३	७।७।४६।३६	६।२।८।२१
१५ मं०	८।१६।१५।२९	३।२१।२८।५५	१०।२८।३४।५०	५।२८।३८।०	७।७।४७।३५	६।२।५।१०

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन.अं.
१ बु०	४६।२८	२३।५८	१।४८	३।५७	६।१५	८।३२	१०।४७	१३।४	१५।२२	१७।३२	१९।२४	२०।५८	२२।२५
२ बृ०	४६।२७	२३।५४	१।४४	३।५३	६।११	८।२८	१०।४३	१३।०	१५।१८	१७।२८	१९।२०	२०।५४	२२।२१
३ शु.	४६।२५	२३।५०	१।४०	३।४९	६।७	८।२४	१०।३९	१२।५६	१५।१४	१७।२४	१९।१६	२०।५०	२२।१७
४ श.	४६।२४	२३।४७	१।३७	३।४६	६।४	८।२१	१०।३५	१२।५३	१५।११	१७।२१	१९।१३	२०।४७	२२।१४
५ र.	४६।२२	२३।४३	१।३३	३।४२	६।०	८।१७	१०।३२	१२।४९	१५।७	१७।१७	१९।९	२०।४३	२२।१०
६ चं.	४६।२१	२३।३९	१।२९	३।३८	५।५६	८।१३	१०।२८	१२।४५	१५।३	१७।१३	१९।५	२०।३९	२२।६
७ मं०	४६।१९	२३।३५	१।२५	३।३४	५।५२	८।९	१०।२४	१२।४१	१४।५९	१७।९	१९।१	२०।३५	२२।२
८ बु०	४६।१८	२३।३१	१।२२	३।३०	५।४८	८।५	१०।२०	१२।३७	१४।५५	१७।५	१८।५७	२०।३१	२१।५८
९ बृ०	४६।१६	२३।२८	१।१७	३।२६	५।४४	८।१	१०।१६	१२।३३	१४।५१	१७।१	१८।५३	२०।२७	२१।५४
१० शु०	४६।१५	२३।२३	१।१३	३।२२	५।४०	७।५७	१०।१२	१२।२९	१४।४७	१६।५७	१८।४९	२०।२४	२१।५०
११ श०	४६।१३	२३।२०	१।१०	३।१९	५।३७	७।५४	१०।९	१२।२६	१४।४४	१६।५४	१८।४६	२०।२०	२१।४७
१२ र०	४६।१२	२३।१६	१।६	३।१५	५।३३	७।५०	१०।५	१२।२२	१४।४०	१६।५०	१८।४२	२०।१६	२१।४३
१४ चं०	४६।९	२३।१२	१।२	३।११	५।२९	७।४६	१०।१	१२।१८	१४।३६	१६।४६	१८।३८	२०।१२	२१।३९
१५ मं०	४६।६	२३।८	०।५८	३।७	५।२५	७।४२	९।५७	१२।१४	१४।३२	१६।४२	१८।३४	२०।८	२१।३५

७ कुजेवल्ली ८।३६।१६।५० अयनांशा: २३।१८।३४



१५ कुजे वल्लो ८।३६।१६।५७ अयनांशा: २३।१८।३५



अथ विविध विषया:- पञ्चम्यां नागपूजनं-श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्ण पक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वण:। पूज्येद्विधिवद्वीर दधिदुर्वाङ्कुरै:कुशै:। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणै:। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान्भक्तिपुरस्सरा:। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित। अत्र पञ्चम्यां तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम्। शकुनम्-श्रावण शुक्लपञ्चम्यां दक्षिण-पश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्लदलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयो:। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदा:। रक्षासूत्रबन्धनमन्त्र:-येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षमाचल माचल। ग्रहयोगेनवृष्टि विचार:-बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगा:। नि:संशयं तदाकाले जायते वृष्टिरुत्तमा। सामागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयो:। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टि: स्यान्नात्र संशय:। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहा: पृष्ठावलम्बिन:। पुरतो वा यदा यान्ति तदात्वेकार्णवा मही।

वातावरणम्—पक्षादित: पञ्चमीं यावद्वायुवृष्टिमेघचारादयस्तत एकादशीं यावद्वायुमेघचारो तत: पक्षान्तं यावद्वायुवृष्टिमेघच्छायादय:।

ग्रहस्थिति:—वक्री पूर्वोदित: कुज: १ त: मार्गी, मार्गिणौ पूर्वोदितौ बुधशनी, वक्री पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:।

भाद्रकृष्णपक्षः संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, दि. २०।८।८६ तः ४।९।८६ या, उत्तरे कान्तः
वक्री पूर्वोदितो, गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अयुद्धः वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनञ्च ।

ति.दि.	तिथयः घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	घ.प.	घं.मि.	योगाः घ.प	करणानि घ.प.	चन्द्रराशयः रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाकः रा.	सौ.	अं.	भाद्रकृष्णपक्षः
१ बु.	४३।१७	रा ११।१६	ध.	७।३	दि. ८।२२	अप.।५१।२	वा. १५।५८	कुंभ	अहो०	४ । ३।१४।२६	३२।१४	५।३३	६।२७	२६	४	२०	पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
२ गु.	४१।५६	,, १०।२९	श.	५।५३	,, ७।५५	सु. ४६।४०	तै. १३।८	क. ५०।५१	रा. १।५४	४ । ४।१३।१२	३२।११	५।३४	६।२६	३०	५	२१	पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा ।
३ शु.	४०।२३	,, ९।५५	पूभा	३।५०	,, ७।२४	धृ. ४३।१२	व. १९।२६	मीन	अहो.	४ । ५।१६।५५	३२।८	५।३४	६।२६	३१	६	२२	कज्जली ३, विशालाक्षी ३, उत्तरयात्रापूर्वभाद्रे, भ ११।२६ उ. ४०।५३ या ।
४ श.	४।१५	,, १०।१	उभा.	९।४६	,, ८।२३	शू. ४०।५२	व. १०।५६	,,	,,	४ । ६।७।३८	३२।४	५।३५	६।२५	१	७	२३	बहुला ४, श्रीगणेश ४, व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां चतुर्थ्यां, गं ५७।२७ उ. याम्यामगस्त्योदयः ३८।१५ ।
५ र.	४२।३६	,, १०।४०	रे.	६।२६	,, ६।२२	ग. ३६।३२	को ११।५२	मी ६।२६	वि. ६।२२	४ । ७।५।२१	३२।१	५।३६	६।२४	२	८	२४	गुरुवक्रशुद्धिः ५८।१२, पञ्चकान्तः दिवा घ ९ मि २२ उ, उत्तरयात्रारेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा, गं १२।२६, चित्रायां शुक्रः ४०।११ या, मघायां सिंहेच बुधः ५४।१५ ।
६ च.	४२।२६	,, ११।४३	अ.	१३।८	,, १०।२२	वृ. ३१।१	ग. १६।३४	मेष	अहो०	४ । ८।३।४	३१।५७	५।३७	६।२३	३	९	२५	पूर्वां विना यात्रा अश्विन्यां, भ ४५।१६ उ ।
७ मं.	४८।६	,, ११।१५	भ.	१७।५५	,, १२।४७	ध्रु. ३६।२२	वि. १७।११	मे. ३४।२०	रा. ७।२१	४ । ९।०।४६	३१।५४	५।३७	६।२३	४	१०	२६	भ १७।११ या ।
८ बु.	५३।३७	,, ३।५	कृ	२३।३५	,, ३।१४	व्या ४०।२६	वा. २१।२१	वृष	अहो.	४ । ९।५८।४२	३१।५०	५।३८	६।२२	५	११	२७	श्रीकृष्णाष्टमी व्रतं, जयन्तीव्रतं, श्रीकृष्णावतारः तत्पूजनोत्सवश्च, मोहरात्रिनिशीथे शक्तिपूजनं, मन्वादिः ।
९ बृ.	२८।३६	,, ५।१७	रो	२९।५५	,, २।३६	ह. ४१।५२	तै. २६।८	,,	,,	४ ।१०।५६।३८	३१।४६	५।३९	६।२१	६	१२	२८	द. ति. ५८।३९ उ ।
१० शु.	६०।००	अहो	मृ.	३६।२७	रा. ८।१४	व. ४३।२८	व. २१।१२	वृ. ३।११	प्रा. ६।५५	४ ।११।५४।३४	३१।४३	५।३९	६।२१	७	१३	२९	द. ति. ६०।०० भ २१।१२ उ ।
१० श.	३।४६	दि ७।१०	आ	४२।४५	,, १०।४६	सि. ४४।४८	वि. ३।४६	मिथुन	अहो०	४ ।१२।५२।३०	३१।३९	५।४०	६।२०	८	१४	३०	पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ, द. ति. ३।४६ या, भ ३।४६ या ।
११ र.	८।२६	,, ६।१३	पुन.	४८।२६	,, १।१५	व्य. ४५।४२	बा. ८।२६	मि. ३२।३	रा. ६।३०	४ ।१३।५०।२५	३१।३५	५।४१	६।१९	९	१५	३१	दक्षिणयात्रा द्वादश्यां पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा, जया ११ व्रतं सर्वेषां तुलायां शुक्रः ५८।५०, पूर्वफल्गुन्यां रविः १४।३४ स्त्री-स्त्री योगः चं सू योगः मूषिकवाहनं नीरा =
१२ च.	१२।२४	,, १०।४०	पु.	५३।२०	,, ३।२	व. ४५।५३	तै. १९।२४	कर्क	अहो	४ ।१४।४८।२१	३१।३२	५।४२	६।१८	१०	१६	१	सितम्बर (९) मासारम्भः, कुम्भाण्डेन पारणं, पूर्वां विनायात्रा त्रयोदश्यां पुष्ये, पूर्वास्तो बुधः ४५।८ पूर्वफल्गुन्यां बुधः ३४।३० । =नाडी वर्षाधिपतिः शुक्रस्तेन मध्यमवृष्टिः ।
१३ मं.	१५।१८	,, १२।४६	अश्ले.	५७।५	,, ४।३२	प. ४५।१	ब. १५।१८	क. ५७।५	रा. ४।३२	४ ।१५।४६।१७	३१।२८	५।४२	६।१८	११	१७	२	ग ४६।५ उ, द्वापरयुगादिः, प्रदोष १४ व्रतं, दुर्गर १४, श्री भैरवपूजनं, भ १५।१८ उ ४६।१२ या ।
१४ बु.	१७।९	,, १२।३५	म.	६१।३७	,, ५।३४	शि. ४३।३३	श. १७।९	सिंह	अहो०	४ ।१६।४४।२६	३१।२४	५।४३	६।१७	१२	१८	३	ग १५ या ३० एकोदिष्टम् ।
३० बृ.	१७।३६	,, १२।४६	पूफा.	६०।००	अहो०	सि. ४०।५५	ना. १७।३६	,,	,,	४ ।१७।४२।३५	३१।२०	५।४४	६।१६	१३	१९	४	भाद्री कुशोत्पाटनी ३०, कुशोत्पाटनं, स्नानदानादिः पूर्वोत्तरयात्राप्रतिपदि, (१) एकोदिष्टम् ।

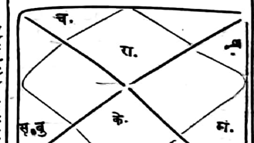
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१ बु.	८।१६।१८।१४	३ ।२३।८।३९	१०।२८।२७।२२	५ ।१९।१५।३१	७ १७ ।४६।१०	६ १२ ।१।५६	४६।७
२ बृ.	८।१६।२१।००	३ ।२४।४८।२२	१०।२८।१६।२३	५ ।२०।१३।२	७ १७ ।५०।४५	६ ११ ।५८।४६	४६।६
३ शु.	८।१६।२३।४५	३ ।२६।२८।६	१०।२८।१२।२५	५ ।२१।१०।३३	७ १७ ।५२।२०	६ ११ ।५५।३८	४६।४
४ श.	८।१६।२६।३१	३ ।२८।७।५०	१०।२८।४।५७	५ ।२२।८।५	७ १७ ।५३।५९	६ ११ ।५२।२७	४६।२
५ र.	८।१६।२८।१६	३ ।२९।४७।३४	१०।२७।५७।२६	५ ।२३।५।३६	७ १७ ।५५।३१	६ ११ ।४९।१६	४६।००
६ च.	८।१६।३२।२	४ ।१।२७।१७	१०।२७।५०।००	५ ।२४।३।७	७ १७ ।५७।६	६ ११ ।४६।६	४५।५९
७ मं.	८।१६।३४।४७	४ ।३।७।१	१०।२७।४२।३२	५ ।२५।०।३८	७ १७ ।५८।४१	६ ११ ।४२।५५	४५।५७
८ बु.	८।१६।५८।४८	४ ।४।५२।२८	१०।२७।३५।३६	५ ।२५।५८।११	७ १८ ।१।८	६ ११ ।३९।४४	४५।५६
९ बृ.	८।१७।२२।५६	४ ।६।३७।५५	१०।२७।२६।४१	५ ।२६।५५।४४	७ १८ ।३।३५	६ ११ ।३६।३४	४५।५४
१० शु.	८।१७।४६।२०	४ ।८।२३।२२	१०।२७।१८।४५	५ ।२७।५३।१७	७ १८ ।६।२	६ ११ ।३३।२३	४५।५२
१० श.	८।१८।१०।५२	४ ।१०।८।४८	१०।२७।१०।५०	५ ।२८।५०।४९	७ १८ ।८।२८	६ ११ ।३०।१२	४५।५०
११ र.	८।१८।३४।५३	४ ।११।५४।१५	१०।२७।२।५५	५ ।२९।४८।२२	७ १८ ।१०।५५	६ ११ ।२७।१	४५।४८
१२ च.	८।१८।५८।५४	४ ।१३।३९।४२	१०।२६।५४।५९	६ ।०।४५।५५	७ १८ ।१३।२२	६ ११ ।२३।५१	४५।४६
१३ मं.	८।१९।२२।५५	४ ।१५।२५।९	१०।२६।४७।३	६ ।१।४३।२८	७ १८ ।१५।४९	६ ११ ।२०।४०	४५।४४
१४ बु.	८।१९।४६।००	४ ।१७।१३।००	१०।२६।३९।५८	६ ।२।४१।१	७ १८ ।१८।१६	६ ११ ।१७।२९	४५।४२
३० बृ.	८।२०।९।१४	४ ।१९।००।५१	१०।२६।३०।५३	६ ।३।३८।३७	७ १८ ।२०।४३	६ ११ ।१४।१८	४५।४०

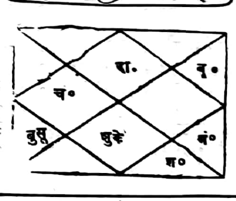
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ बु.	२३।५	०।५५	३।४	५।२२	७।३९	९।५४	१२।११	१४।२९	१६।३९	१८।३१	२०।५	२१।३२
२ बृ.	२३।१	०।५१	३।०	५।१८	७।३५	९।५०	१२।७	१४।२५	१६।३५	१८।२७	२०।१	२१।२८
३ शु.	२२।५७	०।४७	२।५६	५।१४	७।३१	९।४६	१२।३	१४।२१	१६।३१	१८।२३	१९।५७	२१।२४
४ श.	२२।५४	०।४४	२।५३	५।११	७।२८	९।४३	१२।०	१४।१८	१६।२८	१८।२०	१९।५४	२१।२१
५ र.	२२।५०	०।४०	२।४९	५।७	७।२४	९।३९	११।५६	१४।१४	१६।२४	१८।१६	१९।५०	२१।१७
६ च.	२२।४६	०।३६	२।४५	५।३	७।२०	९।३५	११।५२	१४।१०	१६।२०	१८।१२	१९।४६	२१।१३
७ मं.	२२।४३	०।३३	२।४१	५।०	७।१७	९।३२	११।४९	१४।७	१६।१७	१८।९	१९।४३	२१।१०
८ बु.	२२।३९	०।२९	२।३८	४।५६	७।१३	९।२८	११।४५	१४।३	१६।१३	१८।५	१९।३९	२१।६
९ बृ.	२२।३५	०।२५	२।३४	४।५२	७।९	९।२४	११।४१	१३।५९	१६।९	१८।१	१९।३५	२१।२
१० शु.	२२।३२	०।२२	२।३१	४।४९	७।६	९।२१	११।३८	१३।५६	१६।६	१७।५८	१९।३२	२०।५९
१० श.	२२।२८	०।१८	२।२७	४।४५	७।२	९।१७	११।३४	१३।५२	१६।२	१७।५४	१९।२८	२०।५५
११ र.	२२।२४	०।१४	२।२३	४।४१	६।५८	९।१३	११।३०	१३।४८	१५।५८	१७।५०	१९।२४	२०।५१
१२ च.	२२।२१	०।११	२।२०	४।३८	६।५५	९।१०	११।२७	१३।४५	१५।५५	१७।४७	१९।२१	२०।४८
१३ मं.	२२।१७	०।७	२।१६	४।३४	६।५१	९।६	११।२३	१३।४१	१५।५१	१७।४३	१९।१७	२०।४४
१४ बु.	२२।१३	०।३	२।१२	४।३०	६।४७	९।२	११।१९	१३।३७	१५।४७	१७।३९	१९।१३	२०।४०
३० बृ.	२२।१०	०।०	२।९	४।२७	६।४४	८।५९	११।१६	१३।३४	१५।४४	१७।३६	१९।१०	२०।३७

७ कुजेवल्ली ८।३६।१०।४
अयनांशाः २३।१८।३६



१३ कुजेवल्ली ८।३१।१०।११
अयनांशाः २३।१८।३७



अथ विविधविषयाः:–भाद्रकृष्णाष्टम्यां श्रीकृष्णाष्टमीव्रतम् । तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम् । व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम् । तस्मादिद व्रतं सर्वैरावश्यमेव कार्यमिति । भाद्रामायां कुशोत्पाटनमन्त्रः–कुशाग्रे वसतेरुद्रः कुशमध्ये तु केशवः । कुशमूले वसेद्ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि । कुशोसि कुशपुत्रोसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा । देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम् । अवर्ज्यकुशाः–चितिदर्भाः पथिदर्भाः ये दर्भाः यज्ञभूमिषु । स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत् । श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि-मात्स्ये-कुष्माण्डं महिषीक्षीर बिल्वपत्रमगाद्भुजाः । श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः श्राद्धे प्रशस्तानि–उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तञ्च मृत्कर्पटम् । श्राद्धे सप्तपावनानि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः । महिष्यादिप्रसवदोषः–माघे बुधे च महिषी श्रावणे वडवादिवा । सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः ।

वातावरणम्–पक्षादितश्चतुर्थी यावद्वायुवृष्टिमेघचारादयस्ततोदशमी यावत्तापश्छाया खण्डवृष्ट्यस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघचारवायुवृष्टयः ।

ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशनिबुधाः १२ तो पूर्वास्तो बुधः, वक्रीपूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

भाद्रशुक्लपक्ष: संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३६४ साल, दि० ५।१८।८६ त. १८।१।८६ या, उनरे का. । रकी पूर्वोदितो गुरु:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र:, अशुद्ध:, वर्षर्तु:, २४ तत:शरदृतु: सौम्योगल: याम्यायनम ।

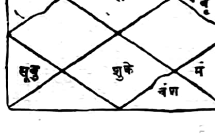
ग.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि.	योग: द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ शु०	१६।४६	दि० १२।२७	पूफा० ०।४६	प्रा. ६।५	सा. ३७।१६	ब० १६।४६	सि. १५।४६	दि० १२।१५	४।१८।४०।४८	३१।१६	५।४५	६।१५	१४	२०	५
२ श०	१४।४४	" ११।४०	उफ. ०।५१	,, ६।६	शु० ३२।४०	कौ. १४।४४	कन्या	अहो०	४।१९।३८।५५	३१।१२	५।४६	६।१४	१५	२१	६
३ र०	११।३७	,, १०।२५	चि. ५७।४४	रा ४।५२	शु० २७।११	ग. ११।३७	क० २८।४३	दि० ५।१५	४।२०।२७।५	३१।८	५।४६	६।१४	१६	२२	७
४ चं०	७।३४	,, ८।४६	स्वा. ५४।४८	" ३।४२	ब्र. २१।८	वि. ७।३४	तुला	अहो०	४।२१।२५।१५	३१।४	५।४७	६।१३	१७	२३	८
५ मं०	०।४३	प्रा ६।१५	वि० ५१।२३	,, २।२१	ऐं० १४।२१	बा० ०।४३	तु. ३७।१४	रा० ८।४२	४।२२।२३।२५	३१।०	५।४८	६।१२	१८	२४	९
७ बु०	५१।२३	रा. ३।२२	अनु० ४७।२५	,, १२।४७	वै. ७।१६	ग० २४।२	वृश्चिक	अहो०	४।२३।२१।५०	३०।५६	५।४९	६।११	१९	२५	१०
८ वृ०	४५।१६	,, ११।५६	ज्ये० ४३।१५	,, ११।८	प्री० ५१।५३	वि. १८।१६	वृ० ४३।१५	रा० ११।८	४।२४।२०।१५	३०।५२	५।५०	६।१०	२०	२६	११
९ शु०	३९।१०	,, ९।३०	मू० ३६।५३	,, ८।३५	आ. ४४।९	बा. १२।१३	धनु	अहो०	४।२५।१८।४०	३०।४९	५।५०	६।१०	२१	२७	१२
१० श०	३३।१४	,, ७।६	पूषा. ३५।१	,, ७।५१	सौ० ३६।३७	तै. ६।२	ध. ४९।७	रा० ११।३०	४।२६।२७।५	३०।४५	५।५१	६।९	२२	२८	१३
११ र०	२७।४०	दि. ४।५६	उषा. ३१।२४	,, ६।२६	शो० २७।३६	ब. ०।२७	मकर	अहो०	४।२७।२५।३०	३०।४१	५।५२	६।८	२३	२९	१४
१२ चं.	२२।३६	,, २।५६	श्र० २८।१९	दि० ५।१२	अगं. २२।२८	ग. २२।३६	म. ५७।१२	रा० ४।४५	४।२८।२३।५५	३०।३८	५।५२	६।८	२४	३०	१५
१३ मं०	१८।२७	,, १।१६	ध० २६।५	,, ४।१९	सु. १६।१७	तै. १८।२७	कुम्भ	अहो	४।२९।२२।१९	३०।३४	५।५३	६।७	२५	३१	१६
१४ वृ.	१५।४	,, ११।५६	श. २४।२	,, ३।३१	धृ० १०।४८	व. १५।४	,,	,,	५।०।२०।४८	३०।३०	५।५४	६।६	२६	१	१७
१५ शु०	१२।४७	,, ११।२	पूभा० २४।१८	,, ३।३८	शू० ६।९	व. १२।४७	कु. ६।१४	दि० ६।३७	५।१।१९।३८	३०।२६	५।५५	६।५	२७	२	१८

चन्द्रदर्शनं, मु ४५ फल समर्घं, पूर्वोत्तरयात्रापूर्वफल्गुन्याम् ।
हस्तमानं ५८।५२, दक्षिणयात्रातृतीयाम् ।
मन्वादि:, दक्षिणपूर्वयात्रातृतीयायां श्रीहरितालिका व्रतं (तीज), उमामहेश्वर पूजनं प्रदोषे रात्रौ जागरणञ्च, वराहावतार:, चतुर्थी चन्द्रपूजनं, म. ३६।३५ उ. ।
श्रीहरितालिकाव्रतपारणं, पश्चिमदक्षिणयात्रास्वात्यां पञ्चम्यां, स्वात्यां शुक्र: ५६।४५, म. ७।३४ या ।
षष्ठोमानं ५६।३० अवमं. ऋषि ५,सप्तर्षिपूजनं पञ्चगव्यप्राशनञ्च, लोलार्क ६. श्रीसूर्यपूजनं, सूर्यकुण्डे स्नानं, कार्त्तिकेयदर्शनं पश्चिमयात्रासप्तम्यां,उत्तरफल्गुन्यांबुध:०।५८।
सन्तानसप्तमी, विष्कुम्भयोगमानं ५२।२८, पश्चिमयात्रा, कन्यायांबुध: ५२।२४ भ.५१।२३ उ. :
राधा८, दूर्वा८, श्रीमहालक्ष्मी व्रतं (अद्यारभ्यषोडशदिनं यावन्महालक्ष्मीव्रतं कार्यम्)पश्चिमोत्तरयात्रावृश्चिकगे चन्द्रे तत:पूर्वोत्तर यात्रा । गं ३७।१५ उ.५२।१५ या,भ.१८।१९या।
पूर्वोत्तरयात्रा नवम्यां, द. ति. ३९।१० उ. ।
उत्तरयात्रैकादश्यां पूर्वाषाढे, उत्तरफल्गुण्यां रवि: ५९।१२, पुंस्त्री योग: चंसू योगोऽश्ववाहनं नीरानाडी तद्विपति: शुक्रस्तेन सुवृष्टि:, द. ति. ३३।१४ या ।
पार्श्वपरिवर्तनी ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, भ. ०।२७ उ. २७।४० या ।
श्रीवामन १२, कुष्माण्डेन पारणं, वामनावतार:, इन्द्रपूजारम्भ:, पञ्चकारम्भ: दिवा घं. ५ मि. १२ उ. प्रदोष १३ व्रतं; पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्यां श्रवणायां तत: + मासान्त:, प्रदोष १४ व्रतं, (१३)-एकोदिष्टम् । + पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ।
अनन्तचतुर्दशी व्रतं,तत्पुजनं, डोरकबन्धनञ्च, विश्वकर्मपूजनं, (१४-१५)-एकोदिष्टम्, कन्यायां रवि: २३।४८, मु. १५ फलं महर्घं, षडशीतिमुखसंक्रान्ति: पुण्यकालो दिवा = भाद्री १५, अगस्त्यार्घदानं, पितृपक्षीयपार्वणारम्भ:, (१)एकोदिष्टम्, मासादि:। = घं. ३ मि २५ उ., सिंहादित्यसमाप्ति: २३।४८ शुद्धारम्भ:, म. १५।४ उ. ४३।५५ या ।

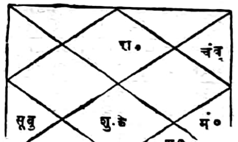
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन.अं.
१ शु०	८।२०।२६।९	४।२०।४८।४२	१०।२६।२२।४८	६।१४।११।५६	७।८।२४।५५	६।१।११।१७	४५।३८	२३।६	२३।५६	२।१५	४।२३	६।४०	८।४५	११।१२	१३।३०	१५।४०	१७।३२	१९।९	२०।३२
२ श०	८।२०।४७।१३	४।२२।३६।३४	१०।२६।१४।४२	६।१४।४०।४६	७।८।२७।५८	६।१।७।५७	४५।३६	२३।२	२३।५२	२।११	४।१९	६।३६	८।४१	११।८	१३।२६	१५।३६	१७।२८	१९।२	२०।२९
३ र०	८।२१।८।१८	४।२४।२४।२५	१०।२६।६।३७	६।१५।३६।३५	७।८।३१।१०	६।१।१४।४६	४५।३४	२२।५९	२३।४९	१।५८	४।१६	६।३३	८।४८	११।५	१३।२३	१५।३३	१७।२५	१८।५९	२०।२६
४ चं०	८।२१।२८।२२	४।२६।१२।११	१०।२५।५८।३२	६।१६।२८।२५	७।८।३४।२	६।१।११।३५	४५।३२	२२।५५	२३।४५	१।५४	४।१२	६।२९	८।४४	११।१	१३।१९	१५।२९	१७।२१	१८।५५	२०।२२
५ मं०	८।२१।५०।२७	४।२८।०।७	१०।२५।५०।२७	६।१७।१७।२४	७।८।३७।४	६।१०।५८।२४	४५।३०	२२।५१	२३।४१	१।५०	४।८	६।२५	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।२५	१७।१७	१८।५१	२०।१८
७ बु०	८।२२।१२।१२	४।२९।४७।३७	१०।२५।४२।४	६।१८।०।३४	७।८।४०।४८	६।१०।५५।१३	४५।२९	२२।४८	२३।३८	१।४७	४।५	६।२२	८।३७	१०।५४	१३।१२	१५।२२	१७।१४	१८।४८	२०।१५
८ वृ०	८।२२।३६।४६	५।१।३५।१७	१०।२५।३३।४०	६।१८।४३।५४	७।८।४४।३२	६।१०।५२।३	४५।२७	२२।४४	२३।३४	१।४३	४।१	६।१८	८।३३	१०।५०	१३।८	१५।१८	१७।१०	१८।४४	२०।११
९ शु०	८।२३।४।४१	५।३।२२।३७	१०।२५।२५।१७	६।१९।२७।१४	७।८।४८।१६	६।१०।४८।५२	४५।२५	२२।४०	२३।३०	१।३९	३।५७	६।१५	८।२९	१०।४६	१३।४	१५।१४	१७।६	१८।४०	२०।७
१० श०	८।२३।२६।२५	५।५।१०।७	१०।२५।१६।५३	६।२०।१०।३	७।८।५१।५९	६।१०।४५।४१	४५।२२	२२।३७	२३।२७	१।३६	३।५४	६।११	८।२६	१०।४३	१३।१	१५।११	१७।३	१८।३७	२०।४
११ र०	८।२३।५४।१०	५।६।५७।३७	१०।२५।८।३०	६।२०।५३।५४	७।८।५५।४३	६।१०।४२।३०	४५।२१	२२।३३	२३।२३	१।३२	३।५०	६।७	८।२२	१०।३९	१२।५७	१५।७	१६।५९	१८।३३	२०।०
१२ चं०	८।२४।१८।२४	५।८।४५।७	१०।२५।०।६	६।२१।३७।१४	७।८।५९।२७	६।१०।३९।१९	४५।१९	२२।२९	२३।१९	१।२८	३।४६	६।३	८।१८	१०।३५	१२।५३	१५।३	१६।५५	१८।२९	१९।५९
१३ मं०	८।२४।४३।३९	५।१०।३२।२७	१०।२४।५१।४३	६।२२।२०।३४	७।९।३।११	६।१०।३६।९	४५।१७	२२।२६	२३।१६	१।२५	३।४३	६।०	८।१५	१०।३२	१२।५०	१५।०	१६।५२	१८।२६	१९।५३
१४ बु०	८।२५।९।२८	५।१२।२०।५८	१०।२४।४३।४६	६।२३।५५।६	७।९।७।२०	६।१०।३३।५८	४५।१५	२२।२२	२३।१२	१।२१	३।३९	५।५६	८।११	१०।२८	१२।४६	१४।५६	१६।४८	१८।२२	१९।४९
१५ शु०	८।२५।३५।१७	५।१४।१।१५	१०।२४।३५।४९	६।२३।२९।३९	७।९।११।२९	६।१०।२९।४८	४५।१३	२२।१८	२३।८	१।१७	३।३५	५।५२	८।७	१०।२४	१२।४२	१४।५२	१६।४४	१८।१८	१९।४५

५ कुजेवल्ली ८।३६।१०।२८
अयनांशा: २३।१८।३८



१२ कुजे वल्लो ८।३६।१०।२५
अयनांशा: २३।१८।३६



अथविविधविषया:—चतुर्थ्यां त्तरोहणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च पश्येत्तन्मन्त्र:—सिंह: प्रसेनमवधीत सिंहो जाम्बवताहत: । सुकुमारक मारोदीस्तवह्य षस्यमन्तक: । प्रार्थनामन्त्रश्च-दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । एकादश्यां विष्णो: पार्श्वपरिवर्त्तनमन्त्रा:—प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि । कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तति । वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव । पार्श्वं संपरिवर्त्तस्व सुखं स्वपिहि माधव । त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयिबुद्धयेत जगत्सुप्तं चराचरम् । देवदेवजगन्नाथयोगिगम्य निरञ्जन । कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे ।। अनन्तधारणमन्त्रा: अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरुपाय नमो नमस्ते । अगस्त्यार्घदानमन्त्रा:—कुम्भयोनि समुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । खंडपुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।काशपुष्पप्रतिकाश वह्निमारुतसंभव । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । प्रार्थनामन्त्र:—आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबल । समुद्रं शोषितो येन स मेऽगस्त्य: प्रसीदतु । ० यावदभ्रच्छायावायुवृष्टय: ।

वातादरणम-पक्षादितो नवमीं यावन्मेघचार खण्डवृष्टिवायवस्तत: पक्षान्तं० ग्रहस्थिति:—मार्गिणो पूर्वोदितो कुजशनी, मार्गी पूर्वास्तो बुध:, वक्री पूर्वोदितो गुरु:, मार्गीपश्चिमोदित: शुक्र: ।

आश्विनकृष्णपक्षः

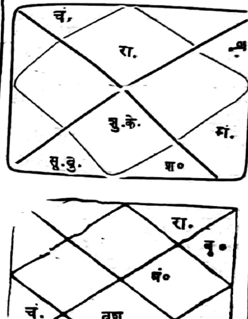
संवत् २०५३ शक: १९१८, सन् १३१४ साल, दि १६।२।८६ तः ३।१०।८६ या, उत्तरे कालः
वक्री पूर्वोदिता, गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अनुदः शरदृतुः, दौर्गगानः, याम्यायनञ्च।

ति.दि.	तिथयः द.प.	तिथयः घं.मि.	नक्षत्राणि न.	नक्षत्राणि द.प.	नक्षत्राणि घं.मि.	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाकः रा.	सौ.	अं.	आश्विनकृष्णपक्षः
१ शु	११।४३	दि १०।३७	उभा.	२५।१०	दि. ४।००	गं. २।२५	को. ११।४३	मान	अहो०	५ । २।१८।१८	३०।२२	५।५६	६।४	२८	३	१९	दुर्धुर रजेदाश्विने, वृद्धियोगमानं ५७।१८ (२) पार्वणम्।
२ श.	११।५६	,, १०।४२	रे.	२७।१६	,, ४।५०	ध्रु. ५८।१	ग. ११।५६	मी.२७।१६	दि. ४।५०	५ । ३।१६।५८	३०।१८	५।५६	६।४	२९	४	२०	पञ्चकान्तो दि. घं. ४ मि. ५० उ, पश्चिमोत्तरयात्रा मीनस्थे चन्द्रे ततः पूर्वां विना यात्रा, गं १५।१६ उ, ३०।१६ या, म ४२।४२ उ।
३ र.	१३।२८	,, ११।२०	अ.	३०।४१	रा. ६।१३	व्या. ५७।१४	वि. १३।२८	मष	अहो.	५ ।१४ ।११।३८	३०।१४	५।५७	६।३	३०	५	२१	इन्द्रविसर्जनं, श्रीगणेश ४ व्रतञ्च, उत्तराषाढे कुजः १५।३३, पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायां, म १३।२८ या।
४ च.	१६।८	,, १२।२५	भ.	३७।१८	,, ८।५३	ह. ५७।२२	वा. १६।८	मे. ५३।८	रा. ३।१३	५ ।१५ ।१४।१८	३०।१०	५।५८	६।२	३१	६	२२	(५ एकोदिष्टम्
५ मं	२०।००	' १।५९	कृ.	४०।४०	" १०।१५	व. ५८।११	तै. २०।००	वृष	अहो०	५ ।१६ ।१२।५८	३०।६	५।५९	६।१	१	७	२३	वसुन्धरा पञ्चमी।
६ बु	२४।३८	,, ३।५१	रो.	४६।५१	,, १२।४४	सि. ५९।२८	व. २४।३८	वृष	,,	५ ।१७ ।११।५२	३०।२	६।००	६।००	२	८	२४	कपिलाषष्ठीव्रतं चित्रायां बुधः ७।३४ पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा, म २४।३८ उ. ५७।११ या, (६) एकोदिष्टम्।
७ बृ.	२९।४४	,, ५।५४	मृ.	५३।२२	', ३।२१	व्य. ६०।००	व. २९।४४	वृ, २०।७	दि. २।३	५ ।१८ ।१०।४६	२९।५८	६।००	६।००	३	९	२५	महालक्ष्मीव्रतं, दक्षिणां विना यात्रा सप्तम्यां द. ति. २९।४४ उ।
८ शु	३५।५७	रा. ८।१०	आ.	५९।४७	,, ५।५६	व्य. ०।५८	को. २।२०	मिथुन	अहो.	५ ।१९ ।९।४०	२९।५४	६।१	५।५९	४	१०	२६	जीवत्पुत्रिका (जीमूतवाहन) व्रतं, शाकाष्टका, पश्चिमोदितो बुधः ३९।१४, द. ति. ३५।५७ या।
९ श	३९।४२	" ९।५५	पुन.	६०।००	अहो०	व. २।१	ग. ७।१९	मि ४६।१२	रा. १।४३	५ ।१०।८।३४	२९।५०	६।२	५।५८	५	११	२७	जीमूतवाहनव्रतपारणं, मातृनवमी, अन्वष्टकाश्राद्धञ्च। म ३९।४२ उ, हस्ते रविः ३५।१८, स्त्री-स्त्री योगः चं सू. योगोऽश्वा वाहनं नीरा नाड़ी तदधिपतिः शुक्रस्तेन □
१० र.	४३।४८	" ११।२४	पुन.	५।४१	दि. ८।१९	प. ३।१९	वि. ११।४५	कर्क	अहो ०	५ ।२१।७।२८	२९।४६	६।३	५।५७	६	१२	२८	उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां, कन्यायां केतुः मीने राहुश्च ६।५४, मकरे कुजः १७।६, तुलायां बुधः १२।३ म ११।४५ या।
१० च	४६।४८	,, १२।४७	पु	१०।४९	,, १०।२४	शि. ३।४०	वा. १५।१८	कर्क	,,	५ ।२२।६।२२	२९।४२	६।४	५।५६	७	१३	२९	इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये। □ स्वल्पवृष्टिः, दक्षिणपश्चिमयात्रा नवम्याम्।
१२ मं.	४८।४५	,, १।३४	आश्ले.	१४।५०	" १२।००	सि. ३।६	तै. १७।४६	क. १४।५०	दि. १२।०८	५ ।२३।५।१७	२९।३८	६।४	५।५६	८	१४	३०	गुरुद्वेत पारणं, गं ३।५० उ. १८।५० या।
१३ बु	४९।१८	" १।४८	म.	१७।४०	,, १।९	सा. १।४३	व. १८।३१	सिंह	अहो	५ ।२४।४।३०	२९।३४	६।५	५।५५	९	१५	१	अक्टुबर (१०) मासारम्भः, प्रदोष १३ व्रतं, गजच्छायायोगो मघायां, मधुघृतपायसैरन्न श्राद्धम्। ज्येष्ठपुत्रवता पिण्डरहितमेव श्राद्धं कार्यम्—"मघायां पिण्डदानेन ज्येष्ठः ×
१४ बृ	४८।३४	,, १।३२	पूफ	१९।१४	,, १।४८	शु. ५५।५०	श. १८।५६	सिं.३४।१६	रा. ७।५०	५ ।२५।३।४३	२९।३०	६।६	५।५४	१०	१६	२	गान्धिजयन्ती शस्त्रहतश्राद्धम, प्रदोष १४ व्रत, स्वात्यां बुधः २९।५८। × पुत्रो विनश्यतीत्यनिष्टश्रवणात्" शुभयोगमानं ५७।३३, म १८।३१ उ. ४६।१८ या।
३० शु	४६।३८	,, १२।४६	उफ	१९।३४	,, १।५७	ब्र. ५१।१३	च. १७।३६	कन्या	अहो०	५ ।१९।२।५६	२९।२६	६।७	५।५३	११	१७	३	आश्विनी ३० पार्वणं, महालया ३०, पितृपक्षीय पार्वणान्तः स्नानदानादिः।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान	म.अ.	वृ.अ.	मि.अं.	क.अ.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.लं.	मी.अ.
१ शु.	८।२६।११ ।१६	५ ।१५।४५।३६	१०।२४।२७।५२	६ ।१४।४ ।११	७ १६ ।१५।३८	६ १० ।२६।३७	४५।११	२१।५४	२३। ४	१ ।१३	३ ।३१	५ ।४८	८ । ३	१०।२०	१२।३८	१४।४८	१६।४०	१८।१४	१९।४१
२ श.	८।२६।२६।५४	५ ।१७।२९।५६	१०।२४।१९।५६	६ ।१५।३८।४३	७ । ९।१९।४८	६ १० ।२३।२६	४५। ९	२१।११	२३। १	१ ।१०	३ ।२८	५ ।४५	८ । ०	१०।१७	१२।३५	१४।४५	१६।३७	१८।११	१९।३८
३ र.	८।२६।५२।४३	५ ।१९।१४।२०	१०।२४।११।५९	६ ।१५।१३।१५	७ १६ ।२३।५७	६ १० ।२०।१५	४५। ७	२१। ७	२२।५७	१ । ६	३ ।२४	५ ।४१	७ ।५६	१०।१३	१२।३२	१४।४१	१६।३३	१८।७	१९।३४
४ च.	८।२७।१८।३२	५ ।२०।५८।४०	१०।२४।४ ।२	६ ।१५।४७।४८	७ १६ ।२८। ६	६ १० ।१७। ५	४५। ५	२१। ३	२२।५३	१ । २	३ ।२०	५ ।३७	७ ।५२	१०। ९	१२।२८	१४।३७	१६।२९	१८। ३	१९।३०
५ म.	८।२७।४४।२१	५ ।२२।४३।१	१०।२३।५६।५	६ ।१६।२२।२०	७ १६ ।३२।१५	६ १० ।१३।५४	४५। ३	२१। ०	२२।५०	० ।५९	३ ।१७	५ ।३४	७ ।४९	१०। ६	१२।२५	१४।३४	१६।२६	१८। ०	१९।२७
६ बु.	८।२८।१०।१८	५ ।२४।२७।२०	१०।२३।४८।२६	६ ।१६।५६।२६	७ १६ ।३६।२६	६ १० ।१०।४३	४५। १	२०।५६	२२।४६	० ।५५	३ ।१३	५ ।३०	७ ।४५	१०। २	१२।२०	१४।३०	१६।२२	१७।५६	१९।२३
७ बृ.	८।२८।३५।५४	५ ।२६।११।३९	१०।२३।४०।१८	६ ।१७।३१।३२	७ १६ ।४०।४३	६ १० । ७ ।३२	४४।५९	२०।५२	२२।४२	० ।५१	३ । ९	५ ।२६	७ ।४१	९ ।५८	१२।१६	१४।२६	१६।१८	१७।५२	१९।१९
८ शु	८।२९।१।३४	५ ।२७।३७।२८	१०।२३।३२।१९	६ ।१८।६।३८	७ १६ ।४६।५७	६ १० ।४ ।२१	४४।५७	२०।४८	२२।३८	० ।४८	३ । ६	५ ।२३	७ ।३८	९ ।५५	१२।१३	१४।२३	१६।१५	१७।४८	१९।१६
९ श.	८।२९।४३।२८	५ ।२९।१५।३७	१०।२३।२५।३१	६ ।१८।४५।४४	७ १६ ।५१।११	६ १० । १ ।१०	४४।५५	२०।४५	२२।३५	० ।४४	३ । २	५ ।१९	७ ।३४	९ ।५१	१२। ९	१४।१९	१६।११	१७।४५	१९।१२
१० र	९।०।१३।१५	६ १० ।४२।४६	१०।२३।१७।५२	६ ।१९।२०।५०	७ १६ ।५५।२५	५ ।२९।५७।५९	४४।५३	२०।४१	२२।३१	० ।४०	२ ।५८	५ ।१५	७ ।३०	९ ।४७	१२। ५	१४।१५	१६। ७	१७।४१	१९। ८
१० च.	९।० ।४३।१	६ १२ ।२९।५५	१०।२३।१०।१४	६ ।१९।५४।५६	७ ११०।० ।३९	५ ।२९।५४।४९	४४।५१	२०।३८	२२।२८	० ।३७	२ ।५५	५ ।१२	७ ।२७	९ ।४४	१२। २	१४।१२	१६। ४	१७।३७	१९। ५
१२ म	९।१ ।१२।४८	६ १४ ।१।४	१०।२३।२ ।३५	६ ।२०।२९।२	७ ११०।५ ।२२	५ ।२९।५१।३९	४४।४९	२०।३४	२२।२४	० ।३३	२ ।५१	५ । ८	७ ।२३	९ ।४०	११।५८	१४। ८	१६। ०	१७।३३	१९। १
१३ बु.	९।१ ।४१।३५	६ १५ ।३८।५	१०।२२।५५।३६	६ ।२१।३।१३	७ ११०।१०।१८	५ ।२९।४८।२८	४४।४७	२०।३०	२२।२०	० ।२९	२ ।४७	५ । ४	७ ।१९	९ ।३६	११।५४	१४। ४	१५।५६	१७।२९	१८।५७
१४ बृ.	९।२ ।१९।२१	६ १७ ।१६ ।११	१०।२२।४८।३६	६ ।२१।३३।२५	७ ११०।१।१९	५ ।२९।४५।१७	४४।४५	२०।२७	२२।१७	० ।२६	२ ।४४	५ । १	७ ।१६	९ ।३३	११।५१	१४। १	१५।५३	१७।२६	१८।५४
३० शु.	९।२ ।४८।८	६ १८ ।३४।१५	१०।२२।४१।३७	६ ।२२।४४।३६	७ ११०।२९।३२	५ ।२९।४२। ६	४४।४३	२०।२३	२२।१३	४ ।२२	२ ।४०	४ ।५७	७ ।१२	९ ।२९	११।४७	१३।५७	१५।४९	२१।२३	१८।५०

५ कुजेवल्ली ८।३६।१०।३२
अयनांशाः २३।५८।४०



११ कुजेवल्ली ८।३६।१०।३९
अयनांशाः २३।५८।४१



अथ विविधविषयाः—आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमः कल्पः। पञ्चमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयः कल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयः कल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तत्रापि एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। हेमाद्रौ आषाढ्याः पञ्चमे पक्षे कन्यस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकास्मिन्नापि वासरे। तस्य सम्वत्सरं याव त्संतृप्ताः पितरो ध्रुवम्। श्राद्धकालः—पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। जीमूतवाहनव्रतं भविष्ये:-इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता या जीवपुत्रिका। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः सनारिभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया। हस्तार्के खञ्जनदर्शनमन्त्रः—नीलग्रीवस्व रूपेण सर्वकामफलप्रदा पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते। तद्दर्शनाकाशपूर्व पश्चिमोत्तरवायव्यादिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। पुनश्च अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेश तुषलोमनखेषु दृष्टो दुःख ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

वातावरणम्—पक्षादितः सप्तमीं यावत्खण्डवृष्टितापमेघचारादयस्ततः पक्षान्तं यावद्वायुखण्डवृष्टिमेघचारपशुरोगादयः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ८ तः पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ	अं
१ श०	४३।३७	रा० ११।३५	हृ० १८।४४	कि. १।३८	[illegible] ४५।०	किं० १५।७	क. ४७।४६	रा० ११।१६	५।१७।२।१।६	२९।२२	६।८	५।५२	१२	१८	४
२ र०	३६।४०	,, ९।१०	चि. १६।५४	,, १२।५४	वै० ४०।९	बा ११।३८	तुला	अहो०	५।१८।१।२२	२९।१८	६।८	५।५२	१३	१९	५
३ चं०	३४।५२	,, ८।६	स्वा. १५।१४	,, ११।४१	वि. ३३।२८	तै. ७।१६	तु० ५८।४३	रा० ४।५०	५।१९।०।३५	२९।१४	६।९	५।५१	१४	२०	६
४ मं०	२९।३०	सा ५।१८	वि० १०।५३	" १०।३१	प्री० २६।१६	व. २।११	वृश्चिक	अहो०	५।१९।५९।४८	२९।१०	६।१०	५।५०	१५	२१	७
५ बु०	२३।४३	दि. ३।४०	अनु० ७।२	,, ९।०	आ० १८।४५	बा० २३।४३	,,	,,	५।२०।५९।१६	२९।६	६।११	५।४९	१६	२२	८
६ बृ०	१७।४३	,, १।१७	ज्ये० २।५४	,, ७।२२	सौ ११।२	तै० १७।४२	वृ. २।५४	दि० ७।२२	५।२१।५८।४३	२९।२	६।१२	५।४८	१७	२३	९
७ शु०	११।४०	,, १०।५२	पूषा. ५४।३५	रा. ४।२	शो० ३।८	व० ११।४०	धनु	अहो०	५।२२।५८।१०	२८।५९	६।१२	५।४८	१८	२४	१०
८ श०	५।४७	,, ८।३२	उषा. ५०।५०	,, २।३३	सु. ४७।५५	व. ५।४७	ध. ८।३६	दि० ६।४१	५।२३।५७।३७	२८।५५	६।१३	५।४७	१९	०५	११
९ र०	०।१९	,, ६।२२	श्र० ४७।३६	,, १।१६	धृ० ४०।५२	कौ. ०।१९	मकर	अहो०	५।२४।५७।४	२८।५१	६।१४	५।४६	२०	२६	१२
११ चं०	५१।१४	रा. २।४५	ध० ४५।१०	,, १२।१८	शू० ३८।२५	ब. २३।२७	म. १६।२३	दि० १२।४७	५।२५।५६।३१	२८।४८	६।१४	५।४६	२१	२७	१३
१२ मं.	४७।५५	,, १।२५	श. ४३।२०	,, ११।३९	गं. २८।३८	ग. १९।३८	कुम्भ	अहो०	५।२६।५५।५८	२८।४४	६।१५	५।४५	२२	२८	१४
१३ बु०	४५।४३	,, १२।३३	पूभा० ४२।५४	,, ११।२६	वृ. २३।४१	कौ. १९।४९	कु. २८।३	दि० ५।२६	५।२७।५५।४१	२८।४०	६।१६	५।४४	२३	२९	१५
१४ बृ.	४४।४३	,, १२।२०	उभा. ४३।३०	,, ११।४१	ध्रु. १९।३६	ग. १५।१२	मीन	अहो	५।२८।५५।२४	२८।३६	६।१७	५।४३	२४	३०	१६
१५ शु०	४५।०	,, १२।१८	रे० ४५।२०	,, १२।२६	व्या० १६।३७	वि. १४।५१	मी० ४५।२०	रा० १२।१६	५।२९।५५।७	२८।३२	६।१८	५।४२	२५	३१	१७

आश्विनशुक्लपक्षः | संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, दि० ४।१०।८६ तः १७।१०।८६ या, उत्तरे काल: । वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र: ५तो वक्री,शुद्धः, शरद् : सौम्यगोल: याम्यायनम । | **१६**

शारदीय नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गोत्सवश्च, तुरङ्गारुढायाः भगवत्या आगमनफलमशुभं, दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा ।
रेमन्तपूजा, दक्षिणयात्रा, चन्द्रदर्शनं मु १५ फलं महार्घं, विशाखायां शुक्र: ७।१२ ।
दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वात्याम् ।
मीने मध्यमो गुरुः ७।११ तत एव विक्रमनामा चतुर्दशमध्यमगुरुसंवत्सरारम्भश्च, श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमयात्राऽनुराधायां, भ. २।११ उ. २६।३० या ।
उपाङ्गललितावतं, पश्चिमयात्रा, वक्री शुक्रः ३३।३०
बिल्वाभिमन्त्रण, गजपूजनं, सरस्वत्या आवाहनञ्च । पश्चिमोत्तरयात्रा वृश्चिकस्थे चन्द्रे ततः पूर्वोत्तरयात्रा, मूलमानं ५५।४६, गं ११।५४ या ।
महारात्रिनिशापूजा, पत्रिकाप्रवेशश्च, चित्रायां रवि: ६।३५ पुंस्त्री योगः चं सू योगः महिषवाहनं, सौम्यानाडी तदधिपतिः गुरुस्तेन सुवृष्टियोगः । (७-८) △
महाष्टमीव्रतं, महानवमीव्रतं त्रिशूलिनीपूजा, दीक्षाग्रहणमन्नपूर्णा परिक्रमा च, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, द ति. ५।४७ या ।
विजया १०, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, सरस्वतीविसर्जन, यात्रा, नीलकण्ठदर्शनं, जयन्तीधारणञ्च, महिषारूढायाः भगवत्याः गमनफलमशुभं, पश्चिमां ×
पाशांकुशा ११ व्रत स्मार्त्तानां, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे धनिष्ठायां, भ २३।२७ उ ५१।१४ या ।
वैष्णवानां पाशांकुशैकादशीव्रतं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, पद्मनाभ १२, गुडेनपारणम । △एकोदिष्टम, अतिगण्डमानं ५२।१५, द.ति. ११।४८ उ,भ ११।४० उ३८।४३ या ।
प्रदोष १३ व्रतम् । × विना यात्रा दशम्यां, स्वात्यां शुक्र: १४।५, विशाखायां बुधः २३।२७ पञ्चकारम्भः रा.घं. १ मि. १६, मन्वादि: दशमीमानं ५४।३२ ।
प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, श्रवणायां कुज: ४४।३४, भ ४४।४३ उ ।
आश्विनी १५, स्नानदानादिः कोजागरा, प्रदोषे श्रीमहालक्ष्मीपूजन, कौमुदीमहोत्सवः, दीक्षाग्रहणञ्च, मासान्तः, पञ्चकान्त: रा. घं १२ मि. १६ उ, गं ३३।२० उ. ४८।२० या मु. १५ फलं महर्घं, भ १८।११ या तुलायां रवि: ४९।३६ चन्द्रग्रहण विवरणमन्तिम पृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

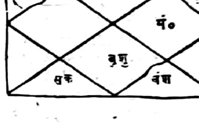
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ श०	६।३।१६।५६	६।१०।२।२०	१०।२२।३४।३७	६।१६।५५।४८	७।१०।२६।४६	५।२६।३५।५५
२ र०	६।३।५१।४२	६।११।३०।२३	१०।२२।२७।३८	६।२०।६।५६	७।१०।३१।७	५।२२।३५।४४
३ चं	६।४।२३।२८	६।१२।५८।२६	१०।२२।२०।३८	६।२०।१८।१०	७।१०।३७।२८	५।२९।३२।३३
४ मं	६।४।५५।१५	६।१४।२९।२८	१०।२२।१३।४०	६।२०।२८।२९	७।१०।४३।५	५।२९।२९।२३
५ बु.	६।५।२८।५२	६।१५।३८।१२	१०।२२।७।४०	६।२०।३२।४६	७।१०।४८।५६	५।२९।२६।१२
६ बृ.	६।६।१२।३०	६।१६।४६।५५	१०।२२।१।४८	६।२०।२६।१७	७।१०।५५।३	५।२९।२३।२
७ शु०	६।६।३६।८	६।१८।११।३८	१०।२१।५५।५३	६।२०।६।४५	७।११।१।९	५।२९।१९।५०
८ श०	६।७।९।४७	६।१९।९।२१	१०।२१।४९।५८	६।२०।३।१३	७।११।७।१४	५।२९।१६।३९
९ र०	६।७।४३।२२	६।२०।२५।४	१०।२१।४४।३	६।१९।५७।४१	७।११।१३।२१	५।२९।१३।२८
११ चं०	६।८।१६।५६	६।२१।३६।४७	१०।२१।३८।८	६।१९।५९।१०	७।११।१९।२७	५।२९।१०।१८
१२ मं०	६।८।५०।३६	६।२२।४८।३०	१०।२१।३२।१३	६।१९।४३।३९	७।११।२५।३३	५।२९।७।८
१३ बु.	६।९।२५।२३	६।२३।३९।५०	१०।२१।२७।३२	६।१९।२९।१६	७।११।३१।३९	५।२९।३।५७
१४ बृ०	६।१०।०।१०	६।२४।२६।१८	१०।२१।२२।४१	६।१८।५८।५४	७।११।३७।२८	५।२९।०।४६
१५ शु०	६।१०।३४।५७	६।२५।४।३०	१०।२१।१८।१०	६।१८।३६।३२	७।११।४३।३५	५।२८।५७।३५

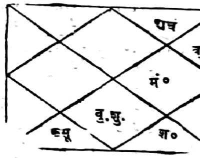
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ श०	४४।४१	२०।१६	२२।६	०।१८	२।३६	४।५३	७।८	९।२५	११।४३	१३।५३	१५।४५	१७।१९	१८।४६
२ र०	४४।३९	२०।१६	२२।६	०।१५	२।३३	४।५०	७।५	९।२२	११।४०	१३।५०	१५।४२	१७।१६	१८।४२
३ चं	४४।३७	२०।१२	२२।२	०।११	२।२९	४।४६	७।१	९।१८	११।३६	१३।४६	१५।३८	१७।१२	१८।३९
४ मं	४४।३५	२०।८	२१।५८	०।७	२।२५	४।४२	६।५७	९।१४	११।३२	१३।४२	१५।३४	१७।८	१८।३५
५ बु.	४४।३३	२०।५	२१।५५	०।४	२।२२	४।३९	६।५४	९।११	११।२९	१३।३९	१५।३१	१७।५	१८।३२
६ बृ.	४४।३१	२०।१	२१।५१	२४।०	२।१८	४।३५	६।५०	९।७	११।२५	१३।३५	१५।२७	१७।१	१८।२८
७ शु०	४४।२९	१९।५७	२१।४७	२३।५६	२।१४	४।३१	६।४६	९।३	११।२१	१३।३१	१५।२३	१६।५७	१८।२४
८ श०	४४।२७	१९।५४	२१।४४	२३।५३	२।११	४।२८	६।४३	९।०	११।१८	१३।२८	१५।२०	१६।५४	१८।२१
९ र०	४४।२५	१९।५०	२१।४०	२३।४९	२।७	४।२४	६।३९	८।५६	११।१४	१३।२४	१५।१६	१६।५०	१८।१७
११ चं०	४४।२३	१९।४६	२१।३६	२३।४५	२।३	४।२०	६।३५	८।५२	११।१०	१३।२०	१५।१२	१६।४६	१८।१३
१२ मं०	४४।२२	१९।४३	२१।३३	२३।४२	२।०	४।१७	६।३२	८।४९	११।७	१३।१७	१५।९	१६।४३	१८।१०
१३ बु.	४४।२०	१९।३९	२१।२९	२३।३८	१।५६	४।१३	६।२८	८।४५	११।३	१३।१३	१५।५	१६।३९	१८।६
१४ बृ०	४४।१८	१९।३५	२१।२५	२३।३४	१।५२	४।९	६।२४	८।४१	१०।५९	१३।९	१५।१	१६।३५	१८।२
१५ शु०	४४।१६	१९।३२	२१।२२	२३।३१	१।४८	४।६	६।२१	८।३८	१०।५५	१३।६	१४।५८	१६।३२	१७।५९

४ कुजेवल्की ८।३६।१०।४६
अयनांशा: २३।१८।४२



१२ कुजे वल्की ८।३६।१०।५३
अयनांशा: २३।१८।४३



अथ विविधविषया:-प्रतिपदि कलशस्थापनन्ततो देवी पूजनपूर्वकं नवदिनं यावच्छप्तशतीस्तोत्रादिपाठश्च । तत्र दुर्गाऽऽगमन-यानविचार: शशिसूर्ये गजारुढा शनिभौमे तुरगमं । गुरौ शुके च दोलायां बुधे नौका प्राकीर्त्तिता । ततफलम् ।- गजे च जलदा देवी छत्रभङ्गस्तुरगमे । नौकायां सर्वसिद्धि: स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम । अथ विजयदशम्यां देव्यागमन-यानफलम्-शशि सूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा । शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला । बुध शुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा । अथ दुर्गापाठ महत्त्वम-यथाश्वमेध: क्रतुराड् देवानाञ्च यथा हरि: । स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः । चण्डयाः शतावृत्तिपाठात् सर्वा: सिद्ध्यन्ति सिद्धय: । विल्वपत्रत्रोटनमन्त्र:-अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदाप्रिय । क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् । तुलसी पत्रत्रोटनमन्त्र:-तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदाप्रिया । क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् ।

वातावरणम्--पक्षादित: षष्ठीं यावन्मेघचारवायुतापादयस्तत: पक्षान्तं यावद्वायुमेघच्छायावृष्टय: ।

ग्रहस्थिति:–मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र: ५ त: वक्री ।

कार्त्तिककृष्णपक्षः — सम्वत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, वि. १८।१०।८६ तः २।११।८६ या, उत्तरे कान्तः
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पश्चिमोदितः शुक्रः, ६ तःपश्चिमास्तः, शुद्धःस्तोऽशुद्धः मरन्दं ; औष्मगोलः, याम्यानञ्च ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	तिथयः घं.मि.	नक्षत्राणि न.	नक्षत्राणि द.प.	नक्षत्राणि घं.मि.	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाकः रा.	सौ.	अं.
१ श	४६।३८	रा १२।५७	अ.	४८।२७	रा. १।४१	ह. १४।२६	वा. १५।४६	मघ	अहो०	६ । ०।५४।५०	२८।२८	६।१८	५।४२	२६	३१	१८
२ र.	४१।२१	,, ३।३	भ.	५२।४१	,, ३।२३	व. १३।२३	तै. ७१।४६	,,	,,	६ । १।५४।३२	२८।२४	६।१९	५।४१	२७	१	१९
३ च	५३।१६	,, ३।३८	कृ.	५७।५८	,, ५।३१	सि. १३।११	व. २१।१८	मे, ६।०	दि. ६।५६	६ । २।५४।१४	२८।२०	६।२०	५।४०	२८	२	२०
४ मं.	५७।५९	,, ५।३३	रो.	६०।०	अहो०	व्य. १३।४२	व. २४।७	वृष	अहो.	६ । ३।५३।५६	२८।१६	६।२१	५।३९	२९	३	२१
५ बु.	६०।०	अहो	रो.	३।५८	दि ७।५७	व. १४।५३	कौ.२०।२४	वृ. ३७।१२	रा ६।१५	६ । ४।५३।५५	२८।१२	६।२२	५।३८	३०	४	२२
५ बृ.	३।१०	दि. ७।३८	मृ..	१०।२७	,, १०।३३	प १५।१२	तै. ३।१०	मिथुन	अहो०	६ । ५।५३।५३	२८।८	६।२२	५।३८	१	५	२३
६ शु	८।२८	,, ९।४६	आ.	१६।५५	,, १ ।६	शि.१७।४२	व. ८।२८	,,	,,	६ । ६।५३।५१	२८।५	६।२३	५।३७	२	६	२४
७ श	१३।२१	,, ११।४४	पुन	२२।५८	,, ३ ।३५	सि १८।४५	व. १३।२१	मि. ६।२७	दि. ८।५९	६ । ७।५३।४६	२८।१	६।२४	५।३६	३	७	२५
८ र.	१७।२६	" १।२५	पु.	२८।१९	रा. ५।४५	सा. १६।१२	कौ.१७।२६	कर्क	अहो.	६ । ८।५३।४७	२७।५७	६।२५	५।३५	४	८	२६
९ च.	२०।३५	,, २।२९	आश्ले	३३।३५	,, ७।२७	शु. १८।५२	ग. २०।३५	क. ३२।३५	रा. ७।२७	६ । ९।५३।४५	२७।५४	६।२५	५।३५	५	९	२७
१० मं.	२२।३७	,, ३।२९	म.	३५।४२	,, ८।४३	शु. १७।४२	वि. २२।३७	सिंह	अहो०	६ । १०।५३।४३	२७।५०	६।२६	५।३४	६	१०	२८
११ बु	२३।१६	,, ३।४५	पूफ	३७।३६	" ९।२९	ब्र. १५।२९	बा. २३।१६	सि ५२।४५	रा. ३।३३	६ । ११।५३।५०	२७।४६	६।२७	५।३३	७	११	१
१२ बृ	२२।३७	" ३।३०	उफ	३८।१२	,, ९।४४	ऐ. १२।१६	तै. २२।२७	कन्या	अहो	६ । १२।५४।१०	२७।४३	६।२७	५।३३	८	१२	३०
१३ शु	२०।४४	,, २।४६	ह.	३७।३७	,, ९।३१	वै. ८।२	व. २०।४४	,,	,,	६ । १३।५४।२३	२७।४०	६।२८	५।३२	९	१३	३१
१४ श.	१७।४७	,, १।३६	चि.	३९।११	,, ८।५३	वि. २।५८	श. १७।४७	क. ६।४९	दि. ६।१३	६ । १४।५४।३६	२७।३७	६।२९	५।३१	१०	१४	१
३० र.	१३।५५	,, १२।३	स्वा.	३६।१	,, ८।५६	आ. ५०।३१	ना. १३।५५	तुला	अहो०	६ । १५।५४।४९	२७।३४	६।२९	५।३१	११	१५	२

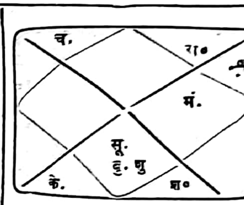
कार्तिके द्विदलं त्यजेत्, विषुवसंक्रान्ति पुण्यकालो दि. घं. १२ मि. ० या ।
क्षीणः शुक्रः ५०।३४, क्षीणशुक्रजन्याशुद्धारम्भः, मासादिः ।
दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, म २१।१८ उ ५३।१६ या ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, करक ४, दक्षिणपूर्वयात्रा ।
गृहारम्भो दक्षिणपूर्वयात्रा च रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा ।
दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि ।
पश्चिमास्तः शुक्रः ५०।३४, स्वात्यां रविः ३०।१०, अशोकचन्दन ६, म ८।२८ उ, ४०।५८ या ।
दक्षिणपश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा, (८) एकोद्दिष्टम् ।
वक्री बुधः, कालाष्टमी, पश्चिमां विना यात्राऽष्टम्याम् ।
(९ एकोद्दिष्टम्, गं २१।३५ उ ३६।३५ या, म ५१।५६ उ. ।
म २२।३७ या । □ अमापार्वणं, प्रीतिमानं ५४।७ दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्याम् ।
रम्भा एकादशीव्रतं सर्वेषां, पश्चिमास्तो बुधः ४५।४६, पूर्वयात्रापूर्वफल्गुन्यां, द. ति. २३।१६ उ, ।
गोवत्सद्वादशी, तुलसीदलेन पारण, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वयात्रा हस्ते, द ति. २२।३७ या ।
धन्वन्तरिजयन्ती, (धनतेरस) प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा, म २०।४४ उ, ४६।१५ या ।
दीपावली, सुखरात्रिः, प्रदोषे श्रीलक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमण, पितृविसर्जनञ्च निशीथे महाकालीपूजा, हनुमज्जन्मोत्सवः, रात्रिशेषे शूर्पवादनं, दरिद्रानिःसारणम्, कार्तिकी □
गोवर्धनपूजनोत्सवः, अन्नकूटः दीक्षाग्रहण, गोक्रीडा, पापाहृत्वात्र गोपूजा, कार्तिकी ३० स्नानदानादिः, वृषभे औषधिदानम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च,

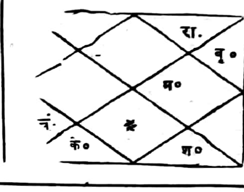
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् — * सू.बु.शु

ति.दि	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.ल.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ श.	८।११।६।४४	६।२५।४९।५०	१०।२१।१३।२९	६।१८।१४।१०	७।११।४९।२२	५।२८।५४।२४	४४।१४	१९।२८	२१।१८	२३।२७	१।४५	४।२	६।१७	८।३४	१०।५२	१३।२	१४।५४	१६।२८	१७।५५
२ र.	८।११।४४।३१	६।२६।३५।१०	१०।२१।८।४९	६।१७।५१।४८	७।११।५५।१९	५।२८।५१।१३	४४।१२	१९।२४	२१।१४	२३।२३	१।४१	३।५८	६।१३	८।३०	१०।४८	१२।५८	१४।५०	१६।२४	१७।५१
३ च.	८।१२।१६।१८	६।२७।२०।२९	१०।२१।१।४९	६।१७।२९।२६	७।१२।१।१६	५।२८।४८।३	४४।१०	१९।२०	२१।१०	२३।१९	१।३७	३।५४	६।९	८।२६	१०।४४	१२।५४	१४।४६	१६।२०	१७।४७
४ मं.	८।१२।४८।४	६।२८।५।४८	१०।२०।५९।२९	६।१७।७।४	७।१२।७।१३	५।२८।४४।५३	४४।८	१९।१६	२१।६	२३।१५	१।३३	३।५०	६।५	८।२२	१०।४०	१२।५०	१४।४२	१६।१६	१७।४३
५ बु.	८।१३।३०।५७	६।२८।२२।५	१०।२०।५५।५६	६।१६।२५।३९	७।१२।१३।२७	५।२८।४१।४२	४४।६	१९।१२	२१।२	२३।११	१।२९	३।४६	६।१	८।१८	१०।३६	१२।४६	१४।३८	१६।१२	१७।३९
५ बृ.	८।१४।७।५०	६।२८।३८।२२	१०।२०।५२।२९	६।१५।४४।१४	७।१२।१९।४१	५।२८।३८।३१	४४।४	१९।८	२०।५८	२३।७	१।२५	३।४२	५।५७	८।१४	१०।३२	१२।४२	१४।३४	१६।८	१७।३५
६ शु.	८।१४।४४।४३	६।२८।५४।३६	१०।२०।४९।०	६।१५।२।४९	७।१२।२५।५४	५।२८।३५।२०	४४।२	१९।४	२०।५४	२३।३	१।२१	३।३८	५।५३	८।१०	१०।२८	१२।३८	१४।३०	१६।४	१७।३१
७ श.	८।१५।२१।३६	६।२९।१०।५५	१०।२०।४५।३१	६।१४।२१।२८	७।१२।३२।७	५।२८।३२।९	४४।०	१९।०	२०।५०	२२।५९	१।१७	३।३४	५।४९	८।६	१०।२४	१२।३४	१४।२६	१६।०	१७।२७
८ र.	८।१५।५८।२९	६।२९।२७।११	१०।२०।४२।२	६।१३।३६।५६	७।१२।३८।२०	५।२८।२८।५८	४३।५८	१८।५६	२०।४६	२२।५५	१।१३	३।३०	५।४५	८।२	१०।२०	१२।३०	१४।२२	१५।५६	१७।२३
९ च	९।१६।३५।२२	६।२९।११।३१	१०।२०।३८।३३	६।१२।५८।३४	७।१२।४४।३३	५।२८।२५।४८	४३।५६	१८।५२	२०।४२	२२।५१	१।९	३।२६	५।४१	७।५८	१०।१६	१२।२६	१४।१८	१५।५२	१७।१९
१० मं.	८।१७।१२।१४	६।२८।५३।४८	१०।२०।३५।४	६।१२।१७।१०	७।१२।५०।४६	५।२८।२२।३८	४३।५५	१८।४८	२०।३८	२२।४७	१।५	३।२२	५।३७	७।५४	१०।१२	१२।२२	१४।१४	१५।४८	१७।१५
११ बु	८।१७।५०।६	६।२८।२१।०	१०।२०।३३।१	६।११।१४।३१	७।१२।५७।९	५।२८।१९।२७	४३।५३	१८।४४	२०।३४	२२।४३	१।१	३।१८	५।३३	७।५०	१०।८	१२।१८	१४।१०	१५।४४	१७।११
१२ बृ.	८।१८।२७।५८	६।२७।५८।१५	१०।२०।३०।५६	६।११।१०।३२	७।१३।३।१२	५।२८।१६।१६	४३।५२	१८।४०	२०।३०	२२।३९	०।५७	३।१४	५।२९	७।४६	१०।४	१२।१४	१४।६	१५।४०	१७।७
१३ शु.	८।१९।५।५०	६।२७।१५।३०	१०।२०।२८।५७	६।१०।३७।१३	७।१३।९।२५	५।२८।१३।५	४३।५०	१८।३७	२०।२७	२२।३६	०।५४	३।११	५।२६	७।४३	१०।१	१२।११	१४।३	१५।३७	१७।३
१४ श.	८।१९।४३।४२	६।२६।४२।४५	१०।२०।२६।५५	६।१०।३।५८	७।१३।१६।१८	५।२८।९।५४	४३।४९	१८।३२	२०।२३	२२।३२	०।५०	३।७	५।२२	७।३९	९।५७	१२।७	१३।५९	१५।३३	१६।५९
३० र.	८।२०।२१।३४	६।२६।१०।१०	१०।२०।२४।५३	६।९।३०।३५	७।१३।२२।४०	५।२८।६।४३	४३।४७	१८।२९	२०।१९	२२।२८	०।४६	३।३	५।१८	७।३५	९।५३	१२।३	१३।५५	१५।२९	१६।५५

४ कुजेवल्ली ८।३६।१२।१० अयनांशः २३।१८।४५



१० कुजेवल्ली ८।३६।१२।१७ अयनांशः २३।१८।४५



अथ विविधविषया:—कार्तिके सकल मासं प्रातः स्नायी जितेंद्रियः । जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ प्रातःस्नानमन्त्रः—कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन । प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह । धात्री महात्म्यम्-धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुक्ते योऽन्नंहि मानवः । ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत् । धात्रीफल लिप्तांगी धात्री फल विभूषितः । धात्रीफल कृताहारो नरो नारायणो भवेत् । उल्काभ्रमणमन्त्रः—शास्त्राशस्त्र हतानांच भूतानां भूतदर्शयोः । उज्ज्वलज्ज्योतिषां देहि निर्दहे व्योमवह्निना ॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । उज्ज्वलज्ज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम् ॥ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये उज्ज्वलज्ज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तु व्रजन्तु ते । तुलासंक्रमणे आकाश दीपदानफलम् तुलायां तिलतैलेन सायं काले समागते । आकाश दीप यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति । महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः ॥ दीपदानमन्त्रः—दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह । प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे ।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चम्यां यावतापमेघच्छायारोगादयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघचारवायुखण्डवृष्टयः ।

ग्रहस्थितिः— मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, ८ तः वक्री ११ तः पश्चिमास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पश्चिमोदितश्च शुक्रः ६ तः पश्चिमास्तः ।

कार्तिकशुक्लपक्षः	संवत २०४३, शक: १९०८, सन् १३६४ साल, दि० ३१।१०।८६ तः १६।११।८६ था, उत्तरकाल: १५ ता पूर्वकाल: । वक्री पूर्वोदितो गुरु ६ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितः शुक्र, अशुद्धः ५ तो शुद्धः, शरदत् :, १५तो हेमन्तत् :, याम्यगोलायने ।

ति.दि	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि.	योगा: द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ ब	७।११	दि० ६।२२	वि. ३०।२२	रा. ६।३६	शो ४३।५	ब० ७।११	तु. १६।११	दि० १२।५८	६।१६।५८।२	२७।३१	६।३०	५।३०	१२	१७	३
२ मं०	३।५०	" ८।१९	अनु. २६।३८	दि. ५।१६	शो० ३५।५१	कौ. ३।५०	वृश्चिक	अहो०	६।१७।५५।१५	२७।२८	६।३०	५।३०	१३	१८	४
४ बु०	५२।१८	रा. ३।२३	ज्ये० २२।३२	,, ३।१२	अयं. २८।५	ब. २५।९	वृ० २२।३२	दि० ३।३२	६।१८।५५।४०	२७।२५	६।३१	५।२९	१४	१९	५
५ बृ.	४६।११	,, १।०	मू. १८।२०	" १।५२	सु० २०।८	ब. १९।१०	धनु	अहो०	६।१९।५६।५	२७।२१	६।३२	५।२८	१५	२०	६
६ शु०	४०।३३	,, १०।४९	पूषा. १४।१९	,, १२।१३	धृ १२।१८	कौ० १३।१६	ध. २८।१४	रा० ५।५०	६।२०।५६।३०	२७।१८	६।३२	५।२८	१६	२१	७
७ श०	३४।५८	,, ८।३२	उषा० १०।२१	,, १०।४१	शू ४।४०	ग० ७।४१	मकर	अहो०	६।२१।५६।५५	२७।१४	६।३३	५।२७	१७	२२	८
८ र०	३०।७	,, ६।३७	श्र० ६।५६	,, ६।२२	वृ० ५०।४४	वि २।२२	म. ३५।३७	रा० ८।४६	६।२२।५७।१६	२७।११	६।३४	५।२६	१८	२३	९
९ चं०	२६।४	दि ५।१	ध० ४।१६	,, ८।१७	ध्रु. ४४।१९	कौ २६।४	कुम्भ	अहो०	६।२३।५७।४३	२७।७	६।३५	५।२५	१९	२४	१०
१० मं०	२२।५४	,, ३।४५	श. २।२५	,, ७।१३	व्या. ३६।२५	ग. २२।५४	कु० ४६।४७	रा० १।१८	६।२४।५८।७	२७।४	६।३५	५।२५	२०	२५	११
११ बु०	२०।४८	,, २।१५	पूभा. १।३४	,, ७।१४	ह० ३५।१२	वि. २०।४८	मीन	अहो०	६।२५।५८।४९	२७।०	६।३६	५।२४	२१	२६	१२
१२ बृ०	१९।५६	,, २।३५	उभा १।५१	,, ७।२१	व. ३१।३४	बा. १९।५६	"	"	६।२६।५९।२५	२६।५७	६।३७	५।२३	२२	२७	१३
१३ शु०	२०।२१	,, २।४५	रे० ३।२३	,, ७।५८	सि. २९।८	तै. २०।२१	मी. ३।२३	दि० ७।५८	६।२८।०।४	२६।५४	६।३७	५।२३	२३	२८	१४
१४ श०	२२।६	,, ३।२८	अ. ६।९	,, ९।६	व्य. २७।४५	व. २२।६	मेष	अहो	६।२९।०।४३	२६।५१	६।३८	५।२२	२४	२९	१५
१५ र०	२४।५८	,, ४।३७	भ० १०।६	,, १०।४०	व० २६।१	व. २४।५८	मे० २६।२१	दि० ५।१८	७।०।१।२२	२६।४८	६।३८	५।२२	२५	३०	१६

पूर्वोदितः शुक्रः ३५।४३, चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महर्घं, चित्रगुप्त पूजनम् ।
तृतीयामानं ५४।१८ अयमं, भ्रातृद्वितीया यमद्वितीया यमुनास्नानं यमदर्शनञ्च, कटमुल्ली ३, पश्चिम यात्रा ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा वृश्चिकगेचन्द्रे ततः पूर्वयात्रा पञ्चम्यां घं १६ ३२ उ० ३१।३२ वा, म, २।१८ उ० ५२।१० या, धान्यच्छेदनं पञ्चम्याम् ।
पुष्ट: शुक्र: शुद्धारम्भश्च ३५।४३, प्रतिहार षष्ठी वर्तस्यैक मुक्तादिकम् (व्रत), पूर्वोत्तरयात्रा, विशाखायां रविः ५७।३४, +शुक्र: ३७।२० ।
प्रतीहारषष्ठी व्रतं सायंकालिकार्घदानञ्च, गृहप्रवेशउत्तराषाढे, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, धनिष्ठायांकुजः२२।५७, धान्यच्छेदनम् । वक्रगत्या चित्रायां+
गण्डयोगमानं ५२।४७, प्रातःकालिकार्घदान पारणञ्च गृहप्रवेशः सप्तम्यां जगद्धातृपूजारम्भः समापूजनारम्भश्च, पूर्वा विनादावाश्रवणायां,
गोप ८, गोपूजनोत्सवः, पञ्चकारम्भः दिवा घं ९ मि. २२ उ. पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, यमदंष्ट्रारम्भस्तत्र स्वल्प भोजी सुखीनरः ।
सत्ययुगादिः, अक्षय ९ स्नानदानादिः गृहप्रवेशो दशम्यां, दीक्षाग्रहणं, पश्चिमयात्रा, मार्गीगुरु: ४५।३८ ।
जगद्धातृविसर्जनं; पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे दशम्यां, पश्चिमास्तः शनिः २२।८; वक्रगत्या स्वात्यां बुधः २।५५,
देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, एकादशीव्रतोद्यापनं, गृहारम्भप्रवेशावुत्तरभाद्रे एकादश्यां, भीष्मपञ्चक व्रतारम्भः, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे धान्यच्छेदनं, द.ति.२० ४८ उ० ।
दामोदर १२,तुलसीदलेन पारण, प्रदोष १३ व्रतं, मन्वादिः, पश्चिमोत्तर यात्रा गृहारम्भः, गृहप्रवेशश्च त्रयोदश्यां, द०ति०१९।२६ या गं० ३१।२३ उ०, ।
प्रदोष १४ व्रतं वैकुण्ठ १४ व्रतं गृहारम्भप्रवेशौ त्रयोदश्यां, श्रीविश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवसः विद्यापतिस्मृतिदिवसः, पञ्चकान्तः दिवा घ. ८ मि.५८ उ., उत्तरयात्रा रेव-
मासान्तः, कार्तिकव्रतोद्यापनं-तुलसीव्रतोद्यापनाकाशदीपदानव्रतोद्यापनं, समाविसर्जनं, म० २।१६ उ० ५३।३२ या ।
पद्मको योगो दि.घं।१० मि. ४० उ. घ ४ मि ३५ यावत्पुष्करे स्नानम्, कार्तिकी १५. स्नानदानादिः, मन्वादि,सर्वदेवदेव्युत्थापनं, कार्तिकेय पूजनोत्सवः, हरिहर क्षे
स्नानं श्री हरिहरनाथदर्शनञ्च, भीष्मपञ्चक व्रतान्त, दीक्षाग्रहणं, वृश्चिके रविः ४२।५ मु. ३० फल साम्यं, विष्णुपदी संक्रान्तिः पुण्यकालो दिवा घं० १२।मि.० उ० ।
त्यां तत पश्चिमा विना यात्रा, पूर्वोदितो बुध: ४५।३६ ।

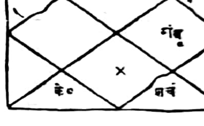
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

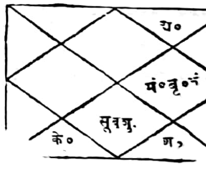
×शु०बृ.१०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ चं०	६।२०।५६।२६	६।२५।३७।१५	१०।२०।२२।५१	६।१८।५७।१७	७।१३।२६।२	५।२८।३।३२	४३।४६	१८।२५	२०।१५	२।२४	०।४२	२।५६	५।१४	७।३१	६।४६	११।५६	१३।५१	१५।२५	१६।५१
२ मं०	६।२१।३७।१७	६।२५।४।३१	१०।२०।२०।४६	६।१८।२३।५६	७।१३।३५।२४	५।२८।०।२२	४३।४४	१८।२१	२०।११	२२।२०	०।३८	२।५५	५।१०	७।२७	६।४५	११।५५	१३।४७	१५।२१	१६।४७
४ बु०	६।२२।१५।५६	६।२४।१६।२१	१०।२०।२०।१८	६।१७।५७।१७	७।१३।४८।६	५।२७।५७।११	४३।४२	१८।१७	२०।७	२२।१६	०।३४	२।५१	५।६	७।२३	६।४१	११।५१	१३।४३	१५।१७	१६।४३
५ बृ.	६।२२।५४।४०	६।२३।२८।११	१०।२०।१९।४७	६।१७।३०।३५	७।१३।४८।४८	५।२७।५४।०	४३।४०	१८।१४	२०।४	२२।१३	०।३१	२।४८	५।३	७।२०	६।३८	११।४८	१३।४०	१५।१४	१६।४०
६ शु	६।२३।३३।२१	६।२२।४०।१	१०।२०।१९।१६	६।१७।३।५३	७।१३।५५।२६	५।२७।५०।४९	४३।३९	१८।१०	२०।०	२२।६	०।२७	२।४४	४।५९	७।१६	६।३४	११।४४	१३।३६	१५।१०	१६।३६
७ श.	६।२४।१२।२	६।२१।५१।४१	१०।२०।१८।४५	६।१६।३७।१२	७।१४।२।१०	५।२७।४७।३८	४३।३७	१८।६	१९।५६	२२।५	०।२३	२।४०	४।५५	७।१२	६।३०	११।४०	१३।३२	१५।६	१६।३२
८ र.	६।२४।५०।४३	६।२१।३।४१	१०।२०।१८।१४	६।१६।१०।३१	७।१४।८।५१	५।२७।४४।२७	४३।३५	१८।३	१९।५२	२२।१	०।१९	२।३६	४।५१	७।८	६।२६	११।३६	१३।२८	१५।२	१६।२८
९ चं०	६।२५।२९।२४	६।२०।१५।३२	१०।२०।१७।४४	६।१५।४३।५०	७।१४।१५।३२	५।२७।४१।१७	४३।३४	१७।५८	१९।४८	२१।५७	०।१५	२।३२	४।४७	७।४	६।२२	११।३२	१३।२४	१४।५८	१६।२४
१० मं०	६।२६।८।५	६।१९।२७।२३	१०।२०।१७।१३	६।१५।१७।६	७।१४।२२।१३	५।२७।३८।७	४३।३२	१७।५४	१९।४४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४३	७।०	६।१८	११।२८	१३।२०	१४।५४	१६।२०
११ बु०	६।२६।४७।२५	६।१८।८।४८	१०।२०।१६।४५	६।१५।७।१	७।१४।२८।२६	५।२७।३४।५६	४३।३१	१७।५०	१९।४०	२१।४९	०।७	२।२४	४।३९	६।५६	६।१४	११।२४	१३।१६	१४।५०	१६।१६
१२ बृ०	६।२७।२६।४५	६।१८।५०।१४	१०।२०।१६।४३	६ ४।५६।५३	७।१४।३५।३६	५।२७।३१।४५	४३।२९	१७।४६	१९।३६	२१।४५	०।३	२।२०	४।३५	६।५२	६।१०	११।२०	१३।१२	१४।४६	१६।१२
१३ शु०	६।२८।६।५	६।१८।३१।४०	१०।२०।१५।४१	६।१४।४६।४५	७।१४।४३।५२	५।२७।२८।३४	४३।२८	१७।४२	१९।३२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३१	६।४८	६।६	११।१६	१३।८	१४।४२	१६।८
१४ श.	६।२८।४५।२५	६।१८।२३।१६	१०।२०।२१।३९	६।१४।३६।३७	७।१४।५१।४	५।२७।२५।२३	४३।२६	१७।३८	१९।२८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।२७	६।४४	६।२	११।१२	१३।४	१४।३८	१६।४
१५ र०	६।२९।२४।४५	६।१७।५४।३२	१०।२०।२२।३७	६।१४।२६।२६	७।१४।५८।१६	५।२७।२२।१२	४३।२५	१७।३४	१९।२४	२१।३४	२३।५२	२।६	४।२४	६।४१	५।५९	११।८	१३।१	१४।३५	१६।१

२ कुजेवल्लो ८।३६।१२।१२४
अयनांशा: २२।१८।४९



१० कुजे वल्ला ८।२६।११।२१
अयनांशा: २२।१८।४७



अथ विविधविषयाः-कार्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या । गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिनिर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत । गांश्च पूजयेत् तत्र गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः-गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारकः। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव । गोपूजनमन्त्रश्चः-लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता । घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु । अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् । भ्रातृ द्वितीयायां भगिन्याः पठनीयो मन्त्रः-भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम् प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः । कनिष्ठ भ्रातरि सति भ्रातस्तवाग्रजाताऽहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम् । प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः । एकादश्यां विष्णुत्थापनमन्त्रः-ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दित वन्दनीयः । प्राप्तातवेयंकिल कौमुदाख्या जागृष्व २च लोकनाथ । मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि । अहं ददानीतिचपुण्यहेतो जागृष्व,२ च लोकनाथ । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यजनिद्रां जगत्पते । त्वया चोत्थीयमानेन चोत्थितं भुवनत्रयम् ।

वातावरणम्-पक्षादितः पञ्चमीं यावत्तापाभ्रच्छाया वायवस्ततो दशमीं यावद्वायु संचार मेघचारखण्डवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावद्वृष्टिमेघचारादयः

ग्रहस्थितिः-मार्गीपूर्वोदितः कुजः वक्रीपश्चिमास्तो बुधः१२तःपूर्वोदितः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः ६ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः १० तो पश्चिमास्तः ।।

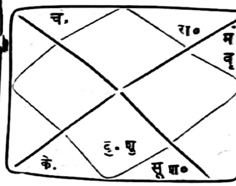
अग्रहायणकृष्णपक्ष: — संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, दि.१७।११।८६ त: १।१२।८६ ता, पूर्वे कान: । मार्गी पूर्वोदितो गुरु:, वक्री पूर्वोदित: शुक्र:, ३ तो मार्गी, बुध: हेमन्तर्तु:याम्यगोलायने ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	तिथय: घं.मि.	नक्षत्राणि न.	नक्षत्राणि द.प.	नक्षत्राणि घं.मि.	योगा: द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	चन्द्रराशय: घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घ.मि	दिनाक: रा.	सौ.	अं.	अग्रहायणकृष्णपक्ष:
१ च	२६।१	रा ६।१५	कृ	१५।८	।द. १२।४२	प. २७।३२	को. २६।१	वृष	अहो०	७ । १।२।१	२६।४५	६।३९	५।२१	२६	१	१७	मासाद., मु ४० फल साम्यं, कुम्भे कुज: ३७।११ ।
२ मं.	३३।४८	,, ८।११	रो.	२१।०	,, ३।४	शि. २८।२७	तै. १।२५	वृ ५४।१२	रा. ४।२१	७ । २।२।३९	२६।४२	६।४०	५।२०	२७	२	१८	मार्गी बुध: १८।१७ पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां, तत उत्तरां विना यात्रा ।
३ बु.	३१।५	,, १०।१८	मृ.	२७।२६	रा. ५।३८	सि. २६।४३	ब. ६।२५	मिथुन	अहो.	७ । ३।३।२६	२६।३९	६।४०	५।२०	२८	३	१९	मुण्डनं निर्वंधविवाहो गृहारम्भश्च मृगशिरसि, धान्यच्छेदनं तृतीयायां अनुराधायां रवि: ५९।३६, मार्गीशुक्र: ५७।२, म ६।२६ उ ३।१४ या।
४ बृ.	४४।२५	,, १२।२७	आ.	३३।५७	,, ८।१६	सा. ३१।७	व. ११।४४	,,	,,	७ । ४।४।१९	२६।३६	६।४१	५।१९	२९	४	२०	पश्चिमयात्रा द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां, श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
५ शु.	४६।२२	,, २।२६	पुन.	४०।८	,, १।४३	शु. ३२।१४	को १६।५३	मि. २३।३५	दि. ४।७	७ । ५।५।१९	२६।३३	६।४१	५।१९	३०	५	२१	वीड पञ्चमी, द्विरागमनं पञ्चम्यां गृहारम्भ: पुनर्वसौ, मुण्डनं, नवान्नपार्वणं, श्रीमनसादेवीगमनं, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ तत: पश्चिमां =
६ श	५३।३५	,, ४।८	पु..	४५।३६	,, १२।५८	शु ३२।५४	ग. २१।२८	कर्क	अहो०	७ । ६।५।५९	२६।३०	६।४२	५।१८	१	६	२२	पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, म ५३।३५ उ । = विना यात्रा धान्यच्छेदनं पुष्ये ।
७ र	५६।४२	,, ५।२४	श्ले	५०।१२	,, २।४८	ब. ३२।४६	वि.२५।८	क. ५०।१२	रा. २।४८	७ । ७।६।४९	२६।२७	६।४३	५।१७	२	७	२३	निर्वंधविवाहो मघायां, धान्यच्छेदनं, गं ३३।२२ उ ५४।२२ या, म २८।८ या ।
८ च	५८।४६	,, ६।१३	म	५३।४०	,, ४।११	ऐ. ३१।५७	बा.२७।४९	सिंह०	अहो.	७ । ८।७।३९	२६।२४	६।४३	५।१७	३	८	२४	निर्वंधविवाहो मघायां, कालभैरवाष्टमीव्रतं, कालभैरवोत्पत्ति:, महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती ।
९ मं	५९।३५	" ६।३०	पूफा.	५५।५०	,, ५।४	वै. २६।५३	तै. २६।१०	,,	"	७ ।९।८।२७	२६।२२	६।४४	५।१६	४	९	२५	अन्वष्टका ९ पूर्वयात्रापूर्वफल्गुन्यां, मार्गी विशाखायां बुध:, पूर्वयात्रापूर्वफल्गुन्यां धान्यच्छेनम् । द. ति. ५९।३५ उ, ।
१० बु.	५८।४७	,, ६।१५	उफा	५६।४४	,, ५।२६	वि.२६।५७	व. २६।६	सि. १।१४	दि. ११।१०	७ ।१०।९।२८	२६।२०	६।४४	५।१६	५	१०	२६	निर्वंधविवाह: पूर्वयात्रा चैकादश्यां, द. ति. ५८।४७ या, म २६।६ उ, ५८।४७ या ।
११ बृ.	५६।५४	,, ५।३०	ह.	५६।२६	,, ५।१८	प्री. २३।१	व. २७।५०	कन्या	अहो०	७ ।११।१०।२९	२६।१९	६।४४	५।१६	६	११	२७	गुरुवेधाद्विवाहो हस्ते गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमश्विन्यां, उत्पन्ना एकादशी व्रतं स्मर्तानां, गुह्ये श्वरीयात्रा, मत्स्यायां कुजा ३८।२९, पूर्वयात्रा ।
१२ शु	५६।०	,, ४।२१	चि.	५५।२	" ४।४६	आ. १८।१०	को. २५।२७	क. २५।४४	दि. ५।३	७ ।१२।११।३०	२६।१७	६।४५	५।१५	७	१२	२८	गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमश्विन्यां, उत्पन्ना एकादशी व्रतं वैष्णवानां, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, गोमूत्रेण पारणम् धान्यच्छेनम् ।
१३ श.	५०।७	" २।४८	स्वा.	५२।५१	,, ३।५३	सौ.१२।२७	ग. २९।३	तुला	अहो	७ ।१३।१२।३१	२६।१६	६।४५	५।१५	८	१३	२९	म ५०।७ उ, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम् ।
१४ र.	४५।२४	,, १२।५५	वि.	४९।४८	,, २।४०	शो ६।४	वि. १७।४५	तु. ३५।३४	रा. ८।५६	७ ।१४।१३।३२	२६।१५	६।४५	५।१५	९	१४	३०	प्रदोष १४ व्रतं, अतिगण्डमानं ५२।५८, ज्येष्ठायां शनि: २६।४२ म १७।४५ या ।
३० चं	४०।६	,, १०।४७	अनु.	४१।११	,, २।१३	सु. ५१ ३३	च. १२।४५	वृश्चिक	अहो०	७ ।१५।१४।२३	२६।१३	६।४५	५।१५	१०	१५	१	निर्वंधविवाहोऽनुराधायां प्रतिपदि, सोमवती अमा व्रतं, दिसम्बर (१२) मासारम्भ:, अग्रहायणी ३०, स्नानदानादि:, स्वात्यां शुक्र: ३।४७, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि ।

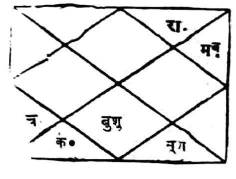
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्**

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ च.	१०।०।४।४	६।१७।३५।५८	१०।२०।२३।२५	६ ।४।१६।२२	७ ।१५।५।२८	५ ।२७।१६।२	४३।२३	१७।३१	१६।२१	२१।३०	२३।४८	२ । ५	४।२०	६।३७	८ ५५	११।५	१२।५७	१४।३१	१५।५८
२ मं.	१०।०।४३।२३	६।१७।१७।२४	१०।२०।२४।३३	६ ।४।६।१५	७ ।१५।१२।४०	५ ।२७।१५।५२	४३।२१	१७।२७	१६।१७	२१।२६	२३।४४	२ । १	४।१३	६।३३	८।५१	११।१	१२।५३	१४।२७	१५।५४
३ बु.	१०।१।२३।१३	६।१७।४।१६	१०।२०।२६।५२	६ ।४।१२।१२	७ ।१५।१९।५०	५ ।२७।१२।४१	४३।१९	१७।२२	१६।१२	२१।२१	२३।३९	१ ।५६	४।११	६।२८	८।४६	१०।५६	१२।४८	१४।२२	१५।४९
४ बृ.	१०।२।३।३	६।१८।४।४८	१०।२०।२९।११	६ ।।१८।९	७ ।१५।२७।०	५ ।२७।९।३०	४३।१८	१७।१८	१६।८	२१।१७	२३।३५	१ ।५२	४। ७	६।२४	८।४२	१०।५२	१२।४४	१४।१८	१५।४५
५ शु	१०।२।४२।५२	६।१८।२८।३०	१०।२०।३१।३०	६ ।४।२४।६	७ ।१५।३४।१०	५ ।२७।६।१९	४३।१७	१७।१४	१६।४	२१।१३	२३।३१	१ ।४८	४। ३	६।२०	८।३८	१०।४८	१२।४०	१४।१४	१५।४१
६ श.	१०।३।२२।४१	६।१८।५२।१२	१०।२०।३३।४९	६ ।४।३०।३	७ ।१५।४१।२०	५ ।२७।३।८	४३।१५	१७।९	१८।५९	२१ ८	२३।२६	१ ।४३	३।५८	६।१५	८।३३	१०।४३	१२।३५	१४।९	१५।३६
७ र.	१०।४।२।३०	६।१९।१५।५४	१०।२०।३६।७	६ ।४।३५।५९	७ ।१५।४८।३०	५ ।२६।५९।५७	४३।१४	१७।५	१८।५५	२१ ४	२३।२२	१ ।३९	३।५४	६।११	८।२९	१०।३९	१२।३१	१४।५	१५।३२
८ च.	१०।४।४२।१९	६।१९।३९।३६	१०।२०।३८।२५	६ ।४।४१।५५	७ ।१५।५५।४०	५ ।२६।५६।४७	४३।१३	१७।१	१८।५१	२१।०	२३।१८	१ ।३५	३।५०	६।७	८।२५	१०।३५	१२।२७	१४।१	१५।२८
९ मं	१०।५।२२।८	६।२०।३।१८	१०।२०।४०।४३	६ ।४।४७।५१	७ ।१६।२।५०	५ ।२६।५३।३७	४३।११	१६।५६	१८।४६	२०।५५	२३।१३	१ ।३०	३।४५	६।२	८।२०	१०।३०	१२।२२	१३।५६	१५।२३
१० बु.	१०।६।२।३९	६।२१।०।९	१०।२०।४४।५१	६ ।५।८।५४	७ ।१६।१०।४२	५ ।२६।५०।२६	४३।१०	१६।५२	१८।४२	२०।५१	२३। ९	१ ।२६	३।४१	५।५८	८।१६	१०।२६	१२।१८	१३।५२	१५।१९
११ बृ.	१०।६।४३।१०	६।२१।५७।०	१०।२०।४८।५९	६ ।५।२९।५७	७ ।१६।१८।३४	५ ।२६।४७।१५	४३।९	१६।४८	१८ ३८	२०।४७	२३। ५	१ ।२२	३।३७	५।५४	८।१२	१०।२२	१२।१४	१३।४८	१५।१५
१२ शु	१०।७।२३।४१	६।२२।५३।२१	१०।२०।५३।७	६ ।५।५१।०	७ ।१६।२६।२६	५ ।२६।४४।४	४३।८	१६।४३	१८।३३	२०।४२	२३। ०	१ ।१७	३।३२	५।४९	८।७	१०।१७	१२।९	१३।४३	१५।१०
१३ श.	१०।८।४।१२	६।२३।५०।४२	१०।२०।५७।१५	६ ।६।१२।३	७ ।१६।३४।१८	५ ।२६।४०।५३	४३।८	१६।३९	१८।२९	२०।३८	२२।५६	१ ।१३	३।२८	५।४५	८।३	१०।१३	१२।५	१३।३९	१५।६
१४ र.	१०।८।४४।४३	६।२४।४७।३२	१०।२१।१।२२	६ ।६।३३।६	७ ।१६।४२।९	५ ।२६।३७।४२	४३।८	१६।३५	१८।२५	२०।३४	२२।५२	१ । ९	३।२४	५।४१	७।५९	१०।९	१२।१	१३।३५	१५।२
३० चं.	१०।९।२५।१४	६।२५।४४।२२	१०।२१।५।२९	६ ६।५४।९	७ ।१६।५०।०	५ ।२६।३४।३२	४३।७	१६।३०	१८।२०	२०।२९	२२।४७	१ । ४	३।१९	५।३६	७।५४	१०।४	११।५६	१३।३०	१४।५७

१ कुंजवल्ली ८।३।६।११।३५ अयनांशा: २२।१८।४६



२ कुंजवल्ली ८।३।६।१७।२८ अयनांशा: २२।१८।४८



अथ विविधविषया:—मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्ति दिनमतस्तद्दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्य: पञ्चोपचारपूजा-गन्ध: पुष्पं च धूपञ्च दीपो नैवेद्यमेव च । पञ्चोपचारा: कथिता देवानां प्रीतिहेतव: । षोडशोपचार-पूजा-आसन स्वागतञ्चार्घ्यं पाद्यमाचमन तथा । मधुपर्काचमनंस्नानवसनाभरणानि च । गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्य चन्दनं तथा । पञ्चगव्यं-गोमूत्र गोमयं क्षीरं दधिसर्पि: कुशोदकम् । पञ्चगव्यमिदं प्रोक्त महापातकनाशनम् । पञ्चामृतम् शर्करामधुदुग्धं च घृतं दधि समांशकम् । पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते । पञ्चरत्नानि वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् । पञ्चरत्न मिद प्रोक्त मन्त्रै: कुम्भेषु निक्षिपेत् । सप्तमृत्तिका-गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ह्रद गोकुलात् । राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् । पञ्चपल्लवा:-अश्वत्थोदुम्बर प्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवा: । पञ्चपल्लव इत्युक्त: सर्वकर्मसु शोभन: । सप्तधान्यम्—यवगोधूमधान्यानि तिला: कंकुस्तथैवच । श्यामकं चणक नैव सप्तधान्यमुदाहृतम् । सर्वौषधि:-मुरामांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् । शुण्ठी चम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगण:स्मृत: ।

वातावरणम—पक्षादितस्तृतीयां यावद्वायुचारशीताभ्रच्छायादयस्तत एकादशीं यावदभ्रच्छाय।शीतवायुसंचारादयस्तत: पक्षान्तं यावच्छीतमेघचारवायव: ।

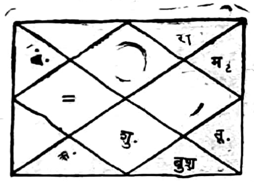
ग्रहस्थिति:—मार्गिणो पूर्वोदितो कुजगुरू, वक्री पूर्वोदितो बुध: २ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदित: शुक्र: ३ त: मार्गी, मार्गी पश्चिमास्त.शनि: ।।

अग्रहायणशुक्लपक्षः संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३६४ साल, दि० २।१२।८६ तः १६।१२।८६ या, पूर्वकाल: । मार्गिणो पूर्वोदितो गुरुशुक्रो, शुक्र:, हेमन्तर्तु: याम्यगोलायने ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ	अं
१ मं०	३४।२४	रा० ८ ।३२	ज्ये० ४२।१०	रा. ११।३८	धृ. ४३।४६	कि० ७।१५	वृ. ४२।१०	रा० ११।३८	७ ।१६।१५।३४	२६।१२	६।४६	५।१४	११	१६	२
२ बु०	२८।३०	" ६ ।११	मू. ३७।५५	,, ९ ।५६	शू० ३३।४८	बा. १ ।२७	धनु	अहो०	७ ।१७।१६।४२	२६।१०	६।४६	५।१४	१२	१७	३
३ बृ.	२२।३५	दि. ३ ।४८	पूषा. ३३।४५	,, ८ ।१६	गं. २८।२	ग. २२।३५	ध० ४७।४६	रा० २।५२	७ ।१८।१७।५१	२६। ९	६।४६	५।१४	१३	१८	४
४ शु०	१६।५१	,, १ ।३०	उषा० २६।५०	" ६ ।४२	वृ० २०।१६	वि १६।५१	मकर	अहो०	७ ।१९।१८।५६	२६। ८	६।४६	५।१४	१४	१९	५
५ श०	११।३४	,, ११।२५	श्र० २६।१८	,, ५ ।१८	ध्रु. १२।५२	बा० ११।३४	म. ५४।५२	रा० ४।४४	७ ।२०।२०।८	२६।७	६।४७	५।१३	१५	२०	६
६ र०	६ ।४८	,, ९।२०	ध० २३।२५	दि ४ । ९	व्या ५।२७	तै० ६ ।४८	कुम्भ	अहो०	७ ।२१।२१।१७	२६। ६	६।४७	५।१३	१६	२१	७
७ चं०	२ ।५२	,, ७ ।५६	श. २१।२५	,, २ ।२१	व० ५४।१६	व २ ।५२	,,	,,	७ ।२२।२२।२५	२६। ५	६।४७	५।१३	१७	२२	८
९ मं०	५७।५६	रा० ५ ।५७	पूभा. २०।१५	,, २।५३	सि. ४६।२२	बा. २८।५४	कु. ५।३२	दि० ९। ०	७ ।२३।२३।३३	२६। ४	६।४७	५।१३	१८	२३	९
१० बु०	५७।१३	,, ५।४०	उभा २०।१५	,, २।५३	व्य० ४५।३४	तै. २७।३८	मीन	अहो०	७ ।२४।२४।४०	२६। ३	६।४७	५।१३	१९	२४	१०
११ बृ०	५७।४७	,, ५।५५	रे० २१।२५	.. ३।२२	व० ४२।४७	व. २७।३०	मी २१।२५	दि० ३ ।२२	७ ।२५।२६। ७	२६। १	६।४८	५।१२	२०	२५	११
१२ शु०	५२।४५	,, ६ ।४२	अ० २३।५५	,, ४।२२	प. ४१। ४	ग. २८।४६	मेष	अहो०	७ ।२६।२७।२४	२६। ०	६।४८	५।१२	२१	२६	१२
१३ श०	६०।००	अहो०	भ० २७।३८	रा ५।५१	शि. ४०।८	को. ३१।१६	मे. ४३।५०	रा० १२।२०	७ ।२७।२८।४०	२५।५८	६।४८	५।१२	२२	२७	१३
१३ र०	२ ।४७	दि. ७।५६	कृ. ३२।२७	,, ७।४८	सि. ४०।१०	तै २ ।४७	वृष	अहो	७ ।२८।२९।५६	२५।५७	६।४९	५।११	२३	२८	१४
१४ चं०	६ ।५८	,, ९।३६	रो० ३८। ७	,, १०।४	सा० ४०।५२	त ६ ।५८	,,	,,	७ ।२९।३१।१२	२५।५५	६।४९	५।११	२४	२९	१५
१५ म.	११।५४	,, ११।३५	मृ० ४४।२७	,, १२।३६	शु० ४२। १	व० ११।५४	वृ० ११।१७	दि० ११।२८	७ । ०।३२।२८	२५।५४	६।४९	५।११	२५	१	१६

पश्चिमयात्रा द्वितीयायां वृश्चिकगे चन्द्रे ततः पूर्वयात्रा । म. २।५२ उ. ३२।४८ या ।
निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च मूले, नवान्नपार्वणं, हरिशो व्रतं ज्येष्ठायां रवि: ७।४, चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्यं पूर्वयात्रा द्वितीयायाम् ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायां, म ४६।४३ उ. ।
निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, वृश्चिके बुध: १५।३५, म १८।५१ या ।
विवाहपञ्चमी श्री सीतारामविवाहोत्सव: जनकपुरे श्री सीतारामदर्शनं स्कन्द षष्ठीव्रतञ्च, पञ्चकारम्भो ग.घं ५ मि. १८ उ.; पूर्वां विना यात्रा षष्ठ्यां +
निर्वेधविवाहो धनिष्ठायां द्विरागमनं सप्तम्यां, षाण्मासिकरविव्रतारम्भः, अनुराधायां बुध: ४८।५९, हर्षणमानं ५३।४४ ।
मुण्डन गृहप्रवेशश्च सप्तम्यां, द्विरागमनमष्टम्यां शतभिषायां, पश्चिमयात्रापूर्वभाद्रे अष्टमीमानं ५७।०० अवमं,
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, द ति. ५७।५६ उ. । +श्रवणायां, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे (५-६) एकोदिष्टम् ।
द्विरागमनमेकादश्यां, द. ति. ५७।१३ या ।
निर्वेधविवाहो द्विरागमनं गृहप्रवेशश्च दिवारात्रौ, मुण्डनं, गीताजयन्ती, मोक्षदा एकादशीव्रतं स्मार्तानां, पञ्चकान्तो =
निर्वेधविवाहो गृहप्रवेशश्चाश्विन्यां मोक्षदा एकादशीव्रतं वैष्णवानां, केशव १२, गोमूत्रेण पारणम् ।
प्रदोष १३ व्रतम् । =दि.घ. ३ मि २२ उ, दक्षिणां विनायात्रा अश्विन्यां, म २७।३० उ. ५७।४७ या, ग ६।१५ उ, २४।१५ या ।
प्रदोष १४ व्रतम् ।
मासान्त म ६।५८ उ, ३६।२६ या । × ज्येष्ठायां बुध: ५०।३ ।
मूले धनुषिरवि: ११।६, मु ३० फलं साम्यं, षडशीतिमुख संक्रान्ति: पुण्यकालो दि. घं ११ मि. १७ उ. दि.घं.५ मि ११-
-या, धनुरादित्याद्शुद्धारम्भ: ११।६ उ. (१) एकोदिष्टं,दत्तात्रेयावतार:, क्षेत्रस्नानं, मार्गी १५, स्नानदानादि:, ×

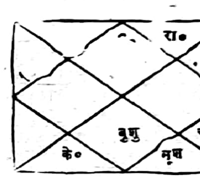
१५ कुजेवली ८।३६।११।५६
अयनांश:-२२।१८।५२



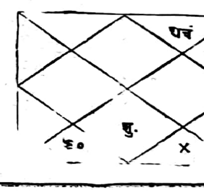
मिश्रमानकालिक दैनिकमगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम** =र: पक्षान्तं यावच्छीतरोगभय मेघचारादय: । × बु.सू०श०

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ मं०	१०।१०।१५।४५	६ ।२६।४१।१२	१०।२१।९ ।३६	६ ।७ ।१५।१२	७।१६।५७।५१	५ ।२६।३१।२२	४३। ६	१६।२६	१८।१६	२०।२५	२२।४३	१ १०	३ ।१५	५ ।३२	७ ।५०	१० । ०	११।५२	१३।२६	१४।५३
२ बु०	१०।१०।४६।२२	६ ।२७।५८।२५	१०।२१।१४।४८	६ ।७ ।४८।२९	७।१७। ४। ४	५।२६।२८।११	४३। ६	१६।२२	१८।१२	२०।२१	२२।३९	० ।५६	३ ।११	५ ।२८	७ ।४६	९ ।५६	११।४८	१३।२२	१४।४९
३ बृ.	१०।११।२६।५६	६ ।२९।१७।३८	१०।२१।२०। ०	६ ।८ ।२२।४६	७।१७।१०।१६	५।२६।२५। ०	४३। ५	१६।१७	१८। ७	२०।१६	२२।३४	० ।५१	३ । ६	५ ।२३	७ ।४१	९ ।५२	११।४३	१३।१७	१४।४४
४ शु	१०।१२।७ ।३६	७ ।० ।३५।४९	१०।२१।२५।१२	६ ।८ ।५५।२	७।१७।१६।२८	५।२६।२१।४९	४३। ५	१६।१३	१८। ३	२०।१२	२२।३०	० ।४७	३ ।२	५ ।१९	७ ।३७	९ ।४७	११।३९	१३।१३	१४।४०
५ श.	१०।१२।४८।१३	७ ।१ ।५४।१४	१०।२१।३०।२३	६ ।९ ।२८।१८	७।१७।२२।४०	५।२६।१८।३८	४३। ५	१६। ८	१७।५९	२०। ८	२२।२६	० ।४३	२ ।५८	५ ।१५	७ ।३३	९ ।४३	११।३५	१३। ९	१४।३६
६ र.	१०।१३।२८।४८	७ ।३ ।१२।१७	१०।२१।३५।३४	६ ।१० ।१ ।३४	७।१७।२८।५२	५।२६।१५।२७	४३। ४	१६। ४	१७।५४	२०। ३	२२।२१	० ।३८	२ ।५३	५ ।१०	७ ।२८	९ ।३८	११।३०	१३। ४	१४।३१
७ चं०	१०।१४।९ ।२५	७ ।४ ।३०।२६	१०।२१।४०।४५	६ ।१०।३४।५०	७।१७।३५। ४	५।२६।१२।१६	४३। ४	१६। ०	१७।५०	१९।५९	२२।१७	० ।३४	२ ।४९	५ । ६	७ ।२४	९ ।३४	११।२६	१३। ०	१४।२७
९ मं०	१०।१४।५०। १	७ ।५ ।४८।४१	१०।२१।४५।५६	६ ।११।८ ।६	७।१७।४१।१६	५।२६। ९। ६	४३। ३	१५।५६	१७।४६	१९।५५	२२।१३	० ।३०	२ ।४५	५ । २	७ ।२०	९ ।३०	११।२२	१२।५६	१४।२३
१० बु०	१०।१५।३०।३७	७ ।७ ।२०।१२	१०।२१।५१। ०	६ ।११।४१।२२	७।१७।४८।२८	५।२६।५ ।५५	४३। २	१५।५१	१७।४१	१९।५०	२२। ८	० ।२५	२ ।४०	४ ।५७	७ ।१५	९ ।२५	११।१७	१२।५१	१४।१८
११ बृ०	१०।१६।११।२३	७ ।८ ।५१।४२	१०।२१।५८। ४	६ ।१२।१४।३८	७।१७।५४।४२	५।२६।२ ।४४	४३। १	१५।४७	१७।३७	१९।४६	२२। ४	० ।२१	२ ।३६	४ ।५३	७ ।११	९ ।२१	११।१३	१२।४७	१४।१४
१२ शु०	१०।१६।५१।३४	७ ।१०।२३।१२	१०।२२।३ । ८	६ ।१२।४७।५४	७।१८।२ ।५५	५।२५।५९।३३	४३। ०	१५।४३	१७।३३	१९।४२	२२। ०	० ।१७	२ ।३२	४ ।४९	७ । ७	९ ।१७	११। ९	१२।४३	१४।१०
१३ श.	१०।१७।३२।४४	७ ।११।५४।४२	१०।२२।८ ।१२	६ ।१३।२१।१०	७।१८।१० ।७	५।२५।५६।२२	४२।५९	१५।३८	१७।२८	१९।३७	२१।५५	० ।१२	२ ।२७	४ ।४४	७ ।२	९ ।१२	११। ४	१२।३८	१४। ५
१३ र०	१०।१८।१२।५४	७ ।१३।२६।१२	१०।२२।१३।१६	६ ।१४।३७।१३	७।१८।१७।१९	५।२५।५३।१२	४२।५९	१५।३४	१७।२४	१९।३३	२१।५१	० । ८	२ ।२३	४ ।४०	६ ।५८	९ । ८	११। ०	१२।३४	१४। १
१४ चं०	१०।१८।५३।४	७ ।१४।५७।४२	१०।२२।१८।२०	६ ।१५।१२।२	७।१८।२४।३१	५।२५।५०।२	४२।५८	१५।३०	१७।२०	१९।२९	२१।४७	० । ४	२ ।१९	४ ।३६	६ ।५४	९ । ४	१०।५६	१२।३०	१३।५७
१५ मं.	१०।१९।३३।१४	७ ।१६।२९।१२	१०।२२।२३।२४	६ ।१६।० ।४९	७।१८।३१।४३	५।२५।४६।५२	४२।५७	१५।२६	१७।१६	१९।२५	२१।४३	२४। ०	२ ।१५	४ ।३२	६ ।५०	९ । ०	१०।५२	१२।२६	१३।५३

१ कुजेवल्ली ८।३६।१२।१४२
अयनांशः २२।१८।५०



६ कुजे वल्ली ८।३६।११।४६
अयनांशः २२।१८।५१



अथ विविधविषया:- रविवासरे त्याज्यावस्तूनि-क्षौरं तैलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम् । रति:स्नानञ्च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत् । मार्गादि मासे रविव्रतभक्ष्याणि-पत्रत्रित्व तु ल्यादिश्रपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टिनात्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथादुग्धकं गोमयञ्च । त्रित्वं तोयाञ्जलीनां त्रिमरीचकमथोत्रि: पला: शक्तव: स्यु: । गोमूत्रं शर्करा सद्भिरिति विधिना मासुद्वारे क्रमेण । रात्रौ लग्नज्ञानम् ध्रुवस्परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेत-वर्णा चैकाऽन्यातारा मेषान्मीन यावद्भ्रमति । तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं उत्तरस्यां कर्कसिंहौ ईशाने कन्या पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ अग्निकोणे धनु:, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नैऋत्याञ्च मीनराशिर्वर्तते । यदा यत्र रक्तवर्णाशूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति । चन्द्रोदयास्तं साधनम्—तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं पमरहितं सहितं सितपक्षे । बाण-शशाङ्कविभाजित एवं भवति विधूदयमस्तमयञ्च । यथा-अग्रहायणशुक्ल ५ रात्रि मान ३३।२६ तदोक्तप्रकारेण,(३३।५३)५=१६९।२५।।१६९।२५+२१००=१७१।२५।।१७१।२५÷१५=११।२५ दण्डात्मकं फलम् । सूर्यास्तात्परं फलतुल्यकालानन्तरं चन्द्रास्तमानमर्थात् सूर्यास्तमाने (५।१३) फलस्य घटात्मकमान (४।३४) योजनेन ९।४७ चन्द्रास्तमानं लब्धमिति । एवमेव कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानं स्थूलदिशेति ।

वातावरणम्-पक्षादितो दशमीं यावदभ्रच्छायाखण्डवृष्टि शीतादयस्त = ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजबुधगुरुशुक्रा:,मार्गी पश्चिमास्त: शनि: ।

पौषकृष्णपक्षः

संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, वि. १७।१२।८६ तः ३१।१२।८६ या, पूर्व कालः । मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्कः रा.	सौ.	अं.
१ बु.	१७।१७	दि १।४५	आ.	५।११	रा. ३।१३	शु ४३।२२	कौ. १७।१७	मिथुन	अहो०	८।१।३३।५०	२५।५३	६।५०	५।१०	२६	२	१७
२ बृ.	२२।४१	„ ३।५४	पुन.	५७।२४	„ ५।४८	ब्र. ४४।३६	ग. २२।४१	मि ४०।४८	रा. १।१६	८।२।३५।११	२५।५१	६।५०	५।१०	२७	३	१८
३ शु.	२७।३९	„ ५।५४	पु.	६०।००	अहो	ऐं. ४४।३५	वि. २७।३६	कर्क	अहो.	८।३।३६।२२	२५।५०	६।५०	५।१०	२८	४	१९
४ श.	३१।५०	रा ७।३४	पु	३।८	दि ८।५	वै. ४५।३२	बा ३१।५०	„	„	८।४।३७।४३	२५।४८	६।५०	५।१०	२९	५	२०
५ र.	३४।५३	„ ८।४८	श्ले.	७।५६	„ १०।३	वि. ४४।३२	कौ ३।	क. ७।५०	दि. १०।३	८।५।३९।१४	२५।४७	६।५१	५।९	३०	६	२१
६ चं.	३६।५२	„ ९।३६	म..	११।४७	„ ११।३४	प्री. ४३।१३	ग. ५।५२	सिंह०	अहो०	८।६।४०।३६	२५।४५	६।५१	५।९	१	७	२२
७ मं.	३७।२७	„ ९।५०	पूफ	१४।१७	„ १२।३४	आ ४०।३५	वि. ७।९	सिं. २१।३५	दि. ६।४१	८।७।४१।५८	२५।४४	६।५१	५।९	२	८	२३
८ बु	३६।४६	„ ९।३३	उफ	१५।२०	„ १।३	सौ. ३६।५७	बा. ७।६	कन्या	अहो.	८।८।४३।२२	२५।४५	६।५१	५।९	३	९	२४
९ बृ	३४।५०	„ ८।४७	ह.	१५।३३	„ १।४	शो. ३२।२२	तै. ५।४८	क ४४।५६	रा. १२।५१	८।९।४४।४६	२५।४६	६।५१	५।९	४	१०	२५
१० शु.	३१।५१	„ ७।३१	चि.	१४।२५	„ १२।४८	अगं २६।५१	व. ३।२०	तुला	अहो०	८।१०।४६।११	२५।४८	६।५०	५।१०	५	११	२६
११ श.	२७।५६	„ ६।००	स्वा.	१२।२५	„ ११।४८	धु. २०।४६	बा. ३७।५६	तु. ५५।१७	रा. ४।५७	८।११।४७।३६	२५।४६	६।५०	५।१०	६	१२	२७
१२ र.	२३।१२	दि ४।७	वि.	९।३५	„ १०।४०	धृ. १३।५८	तै. २३।१२	वृश्चिक	अहो	८।१२।४९।१	२५।५१	६।५०	५।१०	७	१३	२८
१३ च	१७।५३	„ १।५६	अनु.	६।६	„ ९।२५	शू. ६।३७	व. १७।५३	„	„	८।१३।५०।२६	२५।५२	६।४९	५।११	८	१४	२९
१४ मं.	१२।१३	„ ११।४२	ज्ये	२।१२	„ ७।४२	वृ. ५।१३	श. १२।१३	वृ. २।१२	दि. ७।४२	८।१४।५२।५१	२५।५४	६।४९	५।११	९	१५	३०
३० बु.	६।२२	„ ६।२२	पूषा.	५३।५२	रा ४।२२	ध्रु. ४३।१८	ना. ६।२२	धनु.	अहो०	८।१५।५३।१७	२५।५६	६।४९	५।११	१०	१६	३१

पूर्वास्तो बुधः ४७।१२, पूर्वभाद्रे कुजः १४।३७, द. ति. १७।१७ उ. ।
पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तृतीयायां, ततः पश्चिमोत्तरयात्रा कर्कस्थे चन्द्रे, ततः दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये ।
श्रीगणेश ४ व्रत, पश्चिमां विना यात्रा, म २७।३६ या ।
पूर्वां विना यात्रा पुष्ये ।
विशाखायां शुक्रः ३४।५५, गं ५९।५९ उ ।
उत्तरयात्रा षष्ठ्यां पूर्वफल्गुन्यां, पूर्वोदितः शनिः ५५।३९, गं ११।५६ या, म ३६।५२ उ ।
म ७।६ या, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां ।
शाकाष्टका, मूले धनुषिच बुधः ४८।२७, सप्तम्यां मेघदर्शने श्रावणे तथा आर्द्रायां सुवृष्टिः ।
अन्वष्टका ९, पूर्वयात्रा दशम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा ।
दक्षिणयात्रा दिवारात्रौ, भ ३।२० उ, ३१।५१ या ।
सफला एकादशी व्रतं सर्वेषां, दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वात्याम् ।
गोमयेन पारण, प्रदोष १३ व्रतं, उत्तरयात्राऽनुराधायाम् । ★पश्चिमास्तः शनिः ६ तः पूर्वोदितः ।
प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, गण्डयोगमानं ५२।१८, पूर्वाषाढे रविः १३।११, गं ५६।१२ उ, म २७।५३ उ ४५।१३ या ।
दशहरकारम्भः २।१२, पश्चिमयात्रा वृश्चिकगे चन्द्रे, ततः पूर्वयात्रा चतुर्दश्यां, (१४-३०) एकोद्दिष्टं, मूलमानं ५५।५२, गं ११।१२ या ।
पौषी ३०, स्नानदानादिः, पूर्वयात्रा प्रतिपदि पूर्वाषाढ, मीने कुजः ४४।४४ ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च,

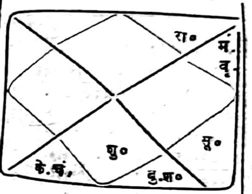
ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बु.	१०।२०।१९।३०	७।१८।८।४५	१०।२२।३६।२३	६।१६।५०।१०	७।१८।३८।५२	५।२५।४३।४१
२ बृ.	१०।२१।०।४६	७।१९।४८।१८	१०।२२।४४।२२	६।१७।३६।१६	७।१८।४६।००	५।२५।४०।३०
३ शु.	१०।२१।४२।२	७।२१।२७।५१	१०।२२।५२।२१	६।१८।२८।१७	७।१८।५३।८	५।२५।३७।१६
४ श.	१०।२२।२३।१८	७।२३।७।२४	१०।२३।०।२०	६।१९।१७।२५	७।१९।०।१६	५।२५।३४।८
५ र.	१०।२३।४।३४	७।२४।४६।५७	१०।२३।८।१६	६।२०।९।३३	७।१९।७।२४	५।२५।३०।५७
६ चं.	१०।२३।४५।५०	७।२६।२६।३०	१०।२३।१६।१७	६।२०।५५।४१	७।१९।१४।३२	५।२५।२७।४७
७ मं.	१०।२४।२७।६	७।२८।६।३	१०।२३।२४।१५	६।२१।४४।४९	७।१९।२१।४०	५।२५।२४।३७
८ बु.	१०।२५।८।३३	७।२९।४५।५१	१०।२३।३२।१६	६।२२।३३।३८	७।१९।२८।४८	५।२५।२१।२६
९ बृ	१०।२५।४९।५९	८।१।२४।३९	१०।२३।४०।१४	६।२३।२२।२७	७।१९।३५।५६	५।२५।१८।१५
१० शु.	१०।२६।३१।२५	८।३।१८।५७	१०।२३।४८।१६	६।२४।१२।१६	७।१९।४३।२२	५।२५।१५।४
११ श.	१०।२७।१२।५१	८।५।३।२५	१०।२३।५८।५६	६।२५।२।३	७।१९।४७।५५	५।२५।११।५३
१२ र.	१०।२७।५४।१७	८।६।४७।३२	१०।२४।७।३६	६।२६।१२।५४	७।१९।५४।२८	५।२५।८।४२
१३ च.	१०।२८।३५।४३	८।८।३१।४६	१०।२४।१६।१६	६।२७।०।३२	७।२०।१।१	५।२५।५।३१
१४ मं.	१०।२९।[illegible]	८।१०।१६।६	१०।२४।२४।१६	६।२८।१।३०	७।२०।७।३४	५।२५।२।२१
३० बु.	१०।२९।[illegible]	८।१२।१।२५	१०।२४।३२।३०	६।२८।५६।३७	७।२०।१४।००	५।२४।५९।१०

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

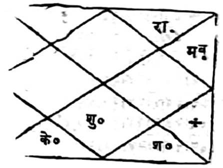
+ न.मू.बु.

ति.दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ बु.	४२।५७	१५।२१	१७।११	१९।२०	२१।३८	२३।५५	३।१०	४।२७	६।४५	८।५५	१०।४७	१२।२१	१३।४८
२ बृ.	४२।५१	१५।१६	१७।६	१९।१४	२१।३३	२३।५०	३।५	४।२२	६।४०	८।५०	१०।४२	१२।१६	१३।४३
३ शु.	४२।५५	१५।१२	१७।२	१९।११	२१।२९	२३।४६	३।१	४।१८	६।३६	८।४६	१०।३८	१२।१२	१३।३९
४ श.	४२।५४	१५।७	१६।५७	१९।६	२१।२४	२३।४१	२।५६	४।१३	६।३१	८।४१	१०।३३	१२।७	१३।३४
५ र.	४२।५३	१५।३	१६।५३	१९।२	२१।२०	२३।३७	२।५२	४।९	६।२७	८।३७	१०।२९	१२।३	१३।३०
६ चं.	४२।५२	१४।५८	१६।४८	१८।५७	२१।१५	२३।३२	२।४७	४।४	६।२२	८।३२	१०।२४	११।५८	१३।२५
७ मं.	४२।५२	१४।५४	१६।४४	१८।५३	२१।११	२३।२८	२।४३	४।०	६।१८	८।२८	१०।२०	११।५४	१३।२१
८ बु.	४२।५३	१४।४९	१६।३९	१८।४८	२१।६	२३।२३	२।३८	३।५५	६।१३	८।२३	१०।१५	११।४९	१३।१६
९ बृ	४२।५३	१४।४५	१६।३५	१८।४४	२१।२	२३।१९	२।३४	३।५१	६।९	८।१९	१०।११	११।४५	१३।१२
१० शु.	४२।५४	१४।४०	१६।३०	१८।३९	२०।५७	२३।१४	२।२९	३।४६	६।४	८।१४	१०।६	११।४०	१३।७
११ श.	४२।५५	१४।३६	१६।२६	१८।३५	२०।५३	२३।१०	२।२५	३।४२	६।०	८।१०	१०।२	११।३६	१३।३
१२ र.	४२।५५	१४।३१	१६।२१	१८।३०	२०।४९	२३।५	२।२०	३।३७	५।५५	८।५	९।५७	११।३१	१२।५८
१३ च.	४२।५६	१४।२६	१६।१६	१८।२५	२०।४३	२३।०	२।१५	३।३२	५।५०	८।०	९।५२	११।२६	१२।५३
१४ मं.	४२।५७	१४।२२	१६।१२	१८।२१	२०।३८	२२।५६	२।११	३।२८	५।४६	७।५६	९।४८	११।२२	१२।४९
३० बु.	४२।५७	१४।१७	१६।७	१८।१६	२०।३३	२२।५१	२।६	३।२३	५।४१	७।५१	९।४३	११।१७	१२।४४

७ कुजवल्ली ८।३६।१२।१३ अयनांशा: २२।१८।५१



१४ कुजवल्ली ८।३६।१२।१० अयनांशा: २२।१८।५४



अथविविधविषयाः दशतारकविचारः– पौषे मूलभरण्यन्त चन्द्रचारेण गर्भति । आर्द्रादितो विशाखान्तः सूर्यचारेण वर्षति । एवचंत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः । आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम् । तत्र गर्भपुष्टिविचारः–वातभ्रगर्जतडितोदकानि हिमप्रपातः कारकावघातः । अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भा । तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यम वृष्टिर्हीने चाल्प वृष्टिरिति । गोचरशनिविचारः–द्विजन्मान पञ्चमसप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः । तत्र शनिविशेषः–यदि स्वजन्मराशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रे निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पादानि भवेयुः जन्माङ्गरुद्रे षु सुवर्णपाद द्विपञ्चनन्दे रजतस्यपादम् । त्रिसप्तदिक ताम्रपद वदन्ति वेदाष्टचवर्केऽविह लोहपादम्-तत्फलम् लोहे वित्त विनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च कांचने । ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्य राजते भवेत । अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः लोहधारण च कार्यम्, शनावश्वत्थमूले जलादिभिःपूजन शनिस्तवश्च पठितव्यः । शनिस्तवः नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाक्षाय ते नम नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरयेविभो । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकायः च । नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चरनमोऽस्तुते । प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे च । तावरणम्-पक्षादितो नवमीं यावच्छीताधिककवायुचारमेघच्छायादयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघचारशीता धिक्यवायवः ।

ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदितः कुजगुरुशुक्र, मार्गी पूर्वास्तो बुधः मार्गी★

पौषशुक्लपक्षः — संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, दि० १।१।८७ तो १४।१।८७ या, पूर्वाकाल: । मार्गिणी पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, अशुद्धः, हेमन्तऋतुः, १५ तः शिशिरऋतुः याम्यगोलायने १५ तो सौम्यानम् ।

ति.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.घ.प.	घं.मि.	योगा: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ बृ०	०।२७	८० ७।०	उषा ४६।५३	रा० २।४७	व्या० ३५।१२	व० ०।२७	घ० ७।५५	दि० ६।२६	८।१६।५४।४३	२५।५७	६।४९	५।११	११	१७	१
३ शु०	४६।२३	रा० २।२७	श्र० ४६।१६	" ११।९	ह० २९।४७	तै० २७।१०	मकर	अहो०	८।१७।५६।५	२५।५८	६।४८	५।१२	१२	१८	२
४ श०	४४।५०	" १२।४४	ध० ४३।१६	,, १२।६	व० २०।४२	व० १७।११	म० १४।४६	दि० १२।४२	८।१८।५७।३५	२६।०	६।४८	५।१२	१३	१९	३
५ र०	४१।१	,, ११।१२	श० ४१।७	,, ११।२५	सि० १४।१०	व० १२।३५	कुम्भ	अहो०	८।१९।५८।११	२६।१	६।४८	५।१२	१४	२०	४
६ चं०	३८।८	१०।२	पूभा० ३६।४४	,, १०।४१	व्य० ८।१९	कौ० ६।३४	कु० २५।५	दि० ४।४९	८।२१।०।२६	२६।३	६।४७	५।१३	१५	२१	५
७ मं०	३६।१९	,, ९।२९	उभा ३६।३९	,, १०।३५	व० ३।१९	ग० ६।१३	मीन	अहो०	८।२२।१।५१	२६।४	६।४७	५।१३	१६	२२	६
८ बु०	३५।४३	,, ९।४	रे० ४०।५	,, १०।५७	शि० ५६।२	वि० ३।२४	मि० ४०।२५	रा० १०।५७	८।२३।३।१५	२६।५	६।४७	५।१३	१७	२३	७
९ बृ०	३६।२५	,, ९।[illegible]	अ० ४२।३८	, १०।५०	सि० ३।५१	वा० ६।४	मेष	अहो०	८।२४।४।३९	२६।७	६।४७	५।१३	१८	२४	८
१० शु०	३८।३	,, १०।११	भ० ४६।७	,, ११।१३	सा० ५२।४४	तै० ७।२९	"	"	८।२५।६।३	२६।८	६।४६	५।१४	१९	२५	९
११ श०	४१।४१	, ११।२६	कृ० ५०।४३	,, ३।१३	शु० ५२।२२	ब० १०।६	मे० २।१६	दि० ७।४०	८।२६।७।२७	२६।९	६।४६	५।१४	२०	२६	१०
१२ र०	४५।५८	,, २।९	रो० ५६।१६	,, ५।१६	शु० ५२।२८	ब० १३।४९	वृष	अहो०	८।२७।८।५१	२६।१०	६।४६	५।१४	२१	२७	११
१३ चं०	५०।५९	,, ३।१०	मृ० ६०।००	अहो०	ब्र० ५४।१	कौ० १८।१८	वृ० २६।२२	रा० ६।३१	८।२८।१०।१५	२६।११	६।४६	५।१४	२२	२८	१२
१४ मं०	५६।२५	,, ५।२०	मृ० ०।२९	दि० ७।४९	ऐं० ५५।२२	ग० २३।४२	मिथुन	अहो	८।२९।११।३८	२६।१२	६।४५	५।१४	२३	२९	१३
१५ बु०	६०।०	अहो	आ० ९।३	,, १०।२२	वै० ५६।३९	वि० २६।१७	मि० ५८।५५	रा० ६।१९	९।०।१२।५८	२६।१३	६।४५	५।१५	२४	३०	१४
१५ बृ०	१।४८	दि ७।[illegible]	पुन० १५।३२	,, १२।५८	वि० ५७।४०	व० १।४८	कर्क	अहो०	९।१।१४।१८	२६।१५	६।४५	५।१५	२५	१	१५

द्वितीयामानं ५४।२० अवमं, १ जनवरी १९८७ ख्रीष्टाब्दारम्भः, चन्द्रदर्शन मु० ३० फलं साम्य, वृश्चिके शुक्रः ४५।८, पूर्वाषाढे बुधः २७।४४, द० ति० ०।२७ उ० = =५४।४७ या ।
पञ्चकारम्भो रात्री घं० १ मि० १९, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वे यात्रा ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे चतुर्थ्यां, म० १७।१९३०४।५० या ;
उत्तराषाढे कुजः ३३।१४ ।
पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा षष्ठ्यां, अनुराधायां शुक्रः ११।५१, मूलक षष्ठी ।
परिघमानं ५६।२१, पूर्वपश्चिमयात्रा रेवत्यां, म० ३६।१९ उ० ।
पञ्चकान्तः रात्रौ घं० १० मि० ५७ उ०, नं० २८।२५ उ० ४३।२५ या, म० २।२४ या ।
दशतारकान्तः ४२।३८उ०, दक्षिणां विना यात्रा दशम्यामश्विन्याम् ।
कर्क १०, विश्वकर्मपूजन, उत्तराषाढे बुधः ५।१२ ।
मन्वादिः पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, म० १०।६३०४१।४१ या ।
श्रीनारायण १२, सोमयेन पारणं, दक्षिणपूर्वयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा, उत्तराषाढे रविः १४।५२, मकरे बुध. ०।३३ ।
प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्याम् ।
मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतं, म० ५६।२५ उ० ।
मकरे रविः ३०।२६, मु० ४५ फलं समर्घं, सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा घं० १२ मि० उ०, म० २६।७ या, धनुरादित्यसमाप्तिः शुभारम्भः ३०।२६ उपरि ।
माघादिः, पौषी १५, कौशिकीस्नानं, दानादिः । कौशिकीस्नानमन्त्रः-गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुने: स्वसः । ऋचीकभार्ये सतोये पापम्मे हर कौशिकि ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

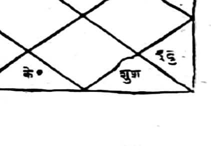
ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं
१ बृ	११।०।४३।२३	८।१३।४६।४४	१०।२४।४।१४	६।२९।५७।४४	७।२०।२०।२६	५।२४।५५।५६	४२।५८
३ शु	११।१।२९।२६	८।१५।३०।३	१०।२४।१३।२८	७।०।५५।५१	७।२०।२६।१२	५।२४।५२।४८	४२।५९
४ श०	११।२।३।३५	८।१७।१७।२२	१०।२५।३।१२	७।१।५३।५८	७।२०।३३।१८	५।२४।४९।३७	४३।०
५ र०	११।२।४५।११	८।१९।२।४१	१०।२५।१२।४६	७।२।५३।४	७।२०।३९।४४	५।२४।४६।२६	४३।०
६ चं०	११।३।२६।४७	८।२०।४८।०	१०।२५।२२।१९	७।३।५०।१०	७।२०।४६।१२	५।२४।४३।१६	४३।१
७ मं०	११।४।८।२३	८।२२।३३।१९	१०।२५।३१।५२	७।४।४८।१६	७।२०।५२।३६	५।२४।४०।६	४३।२
८ बु	११।४।५०।१२	८।२४।१७।२६	१०।२५।४१।२४	७।५।४६।१७	७।२०।५८।२३	५।२४।३६।५५	४३।२
९ बृ	११।५।३२।१	८।२६।१।३२	१०।२५।५०।५६	७।६।५०।१८	७।२१।५।१०	५।२४।३३।४४	४३।३
१० शु	११।६।१३।५०	८।२७।४५।३८	१०।२६।०।२८	७।७।५१।१९	७।२१।११।२७	५।२४।३०।३३	४३।४
११ श०	११।६।५५।३९	८।२९।२९।४४	१०।२६।१९।५९	७।८।५३।२०	७।२१।१७।४४	५।२४।२७।२२	४३।४
१२ र०	११।७।३७।२७	९।१।१३।५०	१०।२६।२४।३०	७।९।५३।२०	७।२१।२४।१	५।२४।२४।११	४३।५
१३ चं०	११।८।१९।१५	९।२।५७।५६	१०।२६।३५।१	७।१०।५४।२०	७।२१।३०।१८	५।२४।२१।०	४३।५
१४ मं०	११।९।१।३	९।४।४२।२	१०।२६।४५।३२	७।११।५५।२१	७।२१।३६।३४	५।२४।१७।५१	४३।६
१५ बु०	११।९।४२।५२	९।६।२२।१३	१०।२६।५६।५६	७।१२।५६।१५	७।२१।४२।२७	५।२४।१४।४०	४३।६
१५ बृ०	११।१०।२३।२१	९।८।२।२४	१०।२७।८।२६	७।१४।२।५०	७।२१।४८।२०	५।२४।११।२९	४३।७

दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

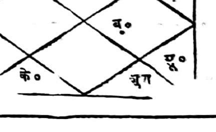
× रा०+श०+चं०

ति.दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ बृ	१४।१३	१६।३	१८।१२	२०।२९	२२।४७	१।२	३।१९	५।३७	७।४७	९।३९	११।१३	१२।४०
३ शु	१४।८	१५।५८	१८।७	२०।२४	२२।४२	०।५७	३।१४	५।३२	७।४२	९।३४	११।८	१२।३५
४ श०	१४।४	१५।५४	१८।३	२०।२०	२२।३८	०।५३	३।१०	५।२८	७।३८	९।३०	११।४	१२।३१
५ र०	१३।५९	१५।४९	१७।५८	२०।१५	२२।३३	०।४८	३।५	५।२३	७।३३	९।२५	१०।५९	१२।२६
६ चं०	१३।५५	१५।४५	१७।५४	२०।११	२२।२९	०।४४	३।१	५।१९	७।२९	९।२१	१०।५५	१२।२२
७ मं०	१३।५०	१५।४०	१७।४९	२०।६	२२।२४	०।३९	२।५६	५।१४	७।२४	९।१६	१०।५०	१२।१७
८ बु	१३।४५	१५।३५	१७।४४	२०।१	२२।१९	०।३४	२।५१	५।९	७।१९	९।११	१०।४५	१२।१२
९ बृ	१३।४०	१५।३१	१७।३९	१९।५६	२२।१४	०।२९	२।४६	५।४	७।१४	९।६	१०।४०	१२।७
१० शु	१३।३६	१५।२६	१७।३५	१९।५२	२२।१०	०।२५	२।४२	५।०	७।१०	९।२	१०।३६	१२।३
११ श०	१३।३१	१५।२१	१७।३०	१९।४७	२२।५	०।२०	२।३७	४।५५	७।५	८।५७	१०।३१	११।५८
१२ र०	१३।२७	१५।१७	१७।२६	१९।४३	२२।१	०।१६	२।३३	४।५१	७।१	८।५३	१०।२७	११।५४
१३ चं०	१३।२२	१५।१२	१७।२१	१९।३८	२१।५६	०।११	२।२८	४।४६	६।५६	८।४८	१०।२२	११।४९
१४ मं०	१३।१८	१५।८	१७।१७	१९।३४	२१।५२	०।७	२।२४	४।४२	६।५२	८।४४	१०।१८	११।४५
१५ बु०	१३।१३	१५।३	१७।१२	१९।२९	२१।४७	०।२	२।१९	४।३७	६।४७	८।३९	१०।१३	११।४०
१५ बृ०	१३।९	१४।५९	१७।८	१९।२५	२१।४३	२३।५८	२।१५	४।३३	६।४३	८।३५	१०।९	११।३६

७ कुजेवल्ली ८।२६।१२।१७ अयनांशा: २३।१८।५४



१४ कुजे वल्ली ८।२६।१२।२४ अयनांशा: २३।१८।५१



अथविविधविषया: वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णय:- दशमीपञ्चपञ्चाशत् घटिका चेत्प्रदृश्यते । तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशी समुपोषयेत् । दशमी पलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथि: । मदिराबिन्दुपातेन त्याज्यो गङ्गाघटो यथा । नारदपुराणे-क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये । उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम् । कौर्मे-तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत् । दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन । भविष्ये-दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदय: । वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम् । अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्तित: । अरुणोदयकालो ब्रह्मार्यवर्त्तो-चत्वारो घटिका: प्रागरुणोदय उच्यते । यतीनां स्नानकालोऽयं गङ्गाम्भ: सदृशं फलम् । अथैकादश्यां त्याज्यवस्तूनि-कांस्य मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा । शाकं मधुपरान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुनम् । वैष्णवान्नं परान्नं नेत्याहु-गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वशुरान्नंतथैव च । पितु: पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृति: । वातावरणाम्-पक्षादिषु: सप्तमीं यावन्मोघच्छायाशीतवायुरुष्णवृष्टयस्ततस्त्रयोदशीं यावच्छीताधिक्यवायुधारादयस्ततः पक्षान्तं यावन्मोघधारखण्डवृष्टिवायुशीतादय: ।

ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनय:, मार्गी पूर्वास्त: बुध: ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि.	योगा: द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: रा.	सौ.	अं.
१ शु.	६।४१	दि ६।२५	पु.	२५।२७	दि. ४।५६	प्री. ५८।४	को. ६।४१	कर्क	अहो०	६।२।१५।३८	२६।१६	६।४५	५।१५	२६	२	१६
२ श.	१०।५१	,, ११।४	श्ले.	२६।३३	सा ५।२१	आ. ५७।३६	ग. १०।५१	क २६।३३	सा. ५।२१	६।३।१६।५८	२६।१८	६।४४	५।१६	२७	३	१७
३ र.	१३।४६	,, १२।१६	म.	३०।३३	रा. ६।५७	सौ. ५६।२६	वि. १३।४६	सिंह.	अहो०	६।४।१८।१८	२६।१९	६।४४	५।१६	२८	४	१८
४ चं.	१५।४१	,, १।०	पूफा	३३।२३	,, ८।५	शो. ५४।११	बा. १५।४१	सि. ४८।४७	रा. २।१५	६।५।१९।३८	२६।२१	६।४४	५।१६	२९	५	१९
५ मं.	१६।११	,, १।१२	उफा.	३४।५७	,, ८।४३	अतं. ५०।५५	तै १६।११	कन्या	अहो.	६।६।२०।५७	२६।२२	६।४४	५।१६	३०	६	२०
६ बु	१५।२४	,, १२।५३	ह..	३५।१७	,, ८।५०	सु ४६।४१	व. १५।२४	कन्या	"	६।७।२२।२१	२६।२४	६।४३	५।१७	१	७	२१
७ बृ.	१३।२३	,, १२।४	चि.	३४।२७	,, ८।३०	धृ. ४१।३४	ब. १३।२३	क. ४।५२	दि ८।४०	६।८।२३।४५	२६।२७	६।४३	५।१७	२	८	२२
८ शु	१०।१६	,, १०।५०	स्वा.	३२।३६	,, ७।४६	शू ३५।४०	को. १०।१६	तुला	अहो०	६।९।२४।३६	२६।३०	६।४२	५।१८	३	९	२३
९ श.	६।२०	" ९।१४	वि.	२९।५८	,, ६।४१	गं० २९।४	ग. ६।२०	तु० १३।२८	दि. १२।५	६।१०।२५।५३	२६।३३	६।४२	५।१८	४	१०	२४
१० र.	१।३२	,, ७।१८	अनु.	२६।३८	सा ५।२०	वृ. २१।५५	वि. १।३२	वृश्चिक	अहो.	६।११।२७।७	२६।३६	६।४१	५।१९	५	११	२५
१२ च.	५०।३०	रा ३।५३	ज्ये.	२२।५०	दि. ३।४९	ध्रु. १४।२३	को २३।२१	वृ. २२।५०	दि ३।४९	६।१२।२८।२१	२६।३९	६।४०	५।२०	६	१२	२६
१३ मं.	४४।३७	,, १२।३१	मू..	१८।४६	,, २।१०	व्या. ६।३६	ग १७।३३	धनु	अहो०	६।१३।२९।३५	२६।४२	६।४०	५।२०	७	१३	२७
१४ बु.	३८।४५	" १०।९	पूषा	१४।३२	,, १२।२८	व. ५०।५१	वि. ११।४१	ध० २८।३३	सा. ६।४	६।१४।३०।४२	२६।४५	५।३९	५।२१	८	१४	२८
३० बृ	३३।१८	,, ७।५४	उषा	१०।३१	,, १०।५१	सि ४३।१६	च. ५।५६	मकर	अहो	६।१५।३१।४८	२६।४८	५।३८	५।२२	९	१५	२९

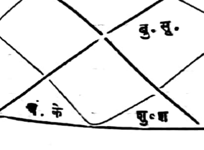
माघकृष्णपक्षः संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, वि.१६।१।८७ त:२६।१।८७ या, पूर्वं कान: । मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, बुध:, शिशिरर्तु:, सौम्यगोल: सौम्यायनञ्च ।

लक्ष्मण सं ८७८ आरम्भ:, मुण्डन द्वितीयायां पुष्ये, श्रवणायां बुध: ५३।३१, मु ४५ समर्घ, पश्चिमां विना यात्रा प्रतिपदि ।
ग १५।३३ उ० ३०।३३ या, म ४२।२० उ ।
बुधवेधाद्विवाहो मध्यमस्तृतीयायां, श्रीगणेश ४ व्रतं, श्रीगणेशावतार:, श्रीगणेशपूजनोत्सव:, ज्येष्ठायां शुक्र: ११।६, पश्चिमोदितो बुध: ६।५८, म १३।४७ या।
निर्वेध विवाह उत्तरफल्गुन्यां, उत्तरयात्रापञ्चम्यां, पूर्वफल्गुन्याम् ।
×
कुजवेधाद्धस्ते विवाहो नैव, गुरुवेधाद्विवाहोमध्यमश्चित्रायां, दक्षिणपूर्वयात्रा दिवारात्रौ, म १५।२४ उ, ४४।२३ या ।
अपूपाष्टका, गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमश्चित्रायां, निर्वेधविवाह: स्वात्याम् ।
अन्वष्टका, निर्वेधविवाहोऽष्टम्यां, दक्षिणयात्रा स्वात्याम् ।
श्रवणायां रवि: १७।५५, रेवत्यां कुज: ६५।५५ म ३३।५६ उ ।
निर्वेध विवाहोऽनुराधाया, एकादशीमान ५४।४० अवमं, षट्तिला ११ व्रत स्मार्त्तानां, उत्तरयात्रा दशम्यां, द० ति० १६।१२ उ, म० १।३२ या ।
निर्वेधविवाहो मूले, "गणतन्त्रदिवस:", षट्तिला ११ व्रतं वैष्णवानो, गोदुग्धेन पारणं, उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, धनिष्ठायां बुध: १५।२४, ग१६।५०उ, ३१।५० या, ★
प्रदोष १३ व्रतं, हर्षणमानं ५२।४, म ४४।३७ उ पूर्वयात्रा दिवारात्रौ । ★ द० ति० ५०।३० या ।
नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतं, प्रदोष: घं० ६ मि० ५७ यावत्, ग ११।४१ या ।
निर्वेधविवाह: प्रतिपदि, माघी ३०, मौनी ३०, स्नानदानादि:, कुम्भे बुध: २३।४९, कलियुगादि:, दक्षिणां विना यात्रा प्रतिपदि ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्**

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ शु.	११।१०।५ ।०	९।९ ।४२।३५	१०।२७।९।६।५२	७।१५।६ ।३५	७ ।२१।५४।१३	५ ।२४।८ ।१८	४३। ८	१२।५	१४।५५	१७। ४	१९।१७	२१।३६	२३।५४	२ ।११	४ ।२९	६ ।३९	८ ।३१	१०।५	११।३२
२ श.	११।११।४६।३९	९।११।२२।४६	१०।२७।३।११८	७।१६।१०।१९	७ ।२२।० ।१६	५ ।२४।५ ।१७	४३। ९	१२। ०	१४।५०	१६।५९	१९।२२	२१।३४	२३।४९	२ । ६	४ ।२४	६ ।३४	८ ।२६	१०।०	११।२७
३ र.	११।१२।२८।१८	९।१३।२ ।५६	१०।२७।४२।४४	७।१७।१४।३	७ ।२२।५ ।५८	५ ।२४।१ ।५६	४३। ९	११।५६	१४।४६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।४५	२ । २	४ ।२०	६ ।३०	८ ।२२	९ ।५६	११।२३
४ चं.	११।१३।९ ।५७	९।१४।४३।६	१०।२७।५४।१०	७।१८।१९।४७	७ ।२२।११।५०	५ ।२३।५८।४६	४३।१०	११।५२	१४।४२	१६।५१	१९। ९	२१।२६	२३।४१	१ ।५८	४ ।१६	६ ।२६	८ ।१८	९ ।५२	११।१९
५ मं.	११।१३।२१।३५	९।१६।२३।१६	१०।२८।५ ।३६	७।१९।२१।३१	७ ।२२।१७।४२	५ ।२३।५५।३६	४३।११	११।४७	१४।३७	१६।४७	१९। ४	२१।२१	२३।३६	१ ।५३	४ ।११	६ ।२१	८ ।१३	९ ।४७	११।१४
६ बु	११।१४।२३।१४	९।१७।५५।३०	१०।२८।१७।२९	७।२०।२७।९	७ ।२२।२३।४६	५ ।२३।५२।२५	४३।१२	११।४३	१४।३३	१६।४२	१९। ०	२१।१७	२३।३२	१ ।४९	४ । ७	६ ।१७	८ । ९	९ ।४३	११।१०
७ बृ.	११।१५।१४।५३	९।१९।२७।४४	१०।२८।२९।२२	७।२१।३२।४७	७ ।२२।२९।५०	५ ।२३।४९।१४	४३।१४	११।३९	१४।२९	१६।३८	१८।५६	२१।१३	२३।२८	१ ।४५	४ । ३	६ ।१३	८ । ५	९ ।३९	११।६
८ शु.	११।१५।५६।३२	९।२०।५९।५९	१०।२८।४१।१५	७।२२।३८।२५	७ ।२२।३५।५४	५ ।२३।४६।३	४३।१५	११।३४	१४।२४	१६।३३	१८।५१	२१।८	२३।२३	१ ।४०	३ ।५८	६ । ८	८ । ०	९ ।३४	११। १
९ श	११।१६।३८।११	९।२२।३२।१७	१०।२८।५३।८	७।२३।४४।३	७ ।२२।४१।५८	५ ।२३।४२।५२	४३।१७	११।३०	१४।२०	१६।२९	१८।४७	२१।४	२३।१९	१ ।३६	३ ।५४	६ । ४	७ ।५६	९ ।३०	१०।५७
१० र.	११।१७।१९।५०	९।२४।४ ।२३	१०।२९।५ ।१	७।२४।४९।४१	७ ।२२।४८। २	५ ।२३।३९।४१	४३।१८	११।२६	१४।१६	१६।२५	१८।४३	२१।०	२३।१५	१ ।३२	३ ।५०	६ । ०	७ ।५२	९ ।२६	१०।५३
१२ च.	११।१८।१।२९	९।२५।३६।३६	१०।२९।१६।५४	७।२५।५५।१९	७ ।२२।५४।६	५ ।२३।३६।३०	४३।१९	११।२१	१४।११	१६।२०	१८।३८	२०।५५	२३।१०	१ ।२७	३ ।४५	५ ।५५	७ ।४७	९ ।२१	१०।४८
१३ मं.	११।१८।४३।७	९।२७।८ ।४९	१०।२९।२८।४७	७।२७।० ।५६	७ ।२३। ०।१०	५ ।२३।३३।२०	४३।२१	११।१७	१४। ७	१६।१६	१८।३४	२०।५१	२३। ६	१ ।२३	३ ।४१	५ ।५१	७ ।४३	९ ।१७	१०।४४
१४ बु.	११।१९।२४।३९	९।२८।४०।३५	१०।२९।४०।४०	७।२८।६ ।३४	७ ।२३। ६।१४	५ ।२३।३०।१०	४३।२३	११।१३	१४। ३	१६।१२	१८।३०	२०।४७	२३।२	१ ।१९	३ ।३७	५ ।४७	७ ।३९	९ ।१३	१०।४०
३० बृ.	११।२०।६ ।१०	९।२९।५९।२१	१०।२९।५२।३३	७।२९।१२।१२	७ ।२३।१२।१८	५ ।२३।२६।५९	४३।२५	११। ८	१३।५८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२२।५७	१ ।१४	३ ।३२	५ ।४२	७ ।३४	९ । ८	१०।३५

१ कुजबल्ली ८।३६।१२।३१ अयनांशा: २२।१८।४७



१२ कुजबल्ली ८।३६।१२।३८ अयनांशा: २२।१८।४८



अथ विवध विषया:-माघे प्रात:स्नानफलम्-यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताम्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे । उद्धृत्यसप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ । मकरार्के प्रात: स्नानमन्त्रा:- मकरस्थेरवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव । प्रात: स्नानेन मे देव यथोक्तफलदोभव । दु:खदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च । प्रात:स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम् । माघे कुत्रापि स्नानफलम् स्वर्गलोके चिरंवासो येषां मनसि वर्तते । यत्र क्वापि जलंतत्तु स्नातव्यं मृगभास्करे । चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्ति:-सर्वदेवमय: साक्षात्सर्वमंगलकारक: । माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिप: । तत्रगणेशमूर्त्तिंनिर्माय यथोपचारै: संम्पूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत् । मोदकादिकं च दद्यात् । चतुर्दश्यांनरकनिवारणं चतुर्दशीव्रतम्-चतुर्दश्या सम नास्ति व्रतं पापक्षयापहम् । यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय: । अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा ।
वातावरणम्- पक्षादित: षष्ठीं यावच्छीतवायुमेघादयस्ततस्त्रयोदशीं यावच्छीताल्पत्ववायुचारादयस्तत: पक्षान्तं यावत्स्वल्पवृष्टिवायु शीतादय: ।
ग्रहस्थिति:-मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनय:, मार्गी पूर्वास्तो बुध: ३ त: पश्चिमोदित: ।

माघशुक्लपक्षः संवत २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, दि० ३०।१।८७ तः १३।२।८७ या, पूर्वकालः १४ ता दक्षिणेकालः ।
मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरु शुक्रौ, शुद्धः, शिशिरर्त्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

ति.दि	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
१ शु०	२७।५१	सा० ९ ।४७	श्र. ६।४८	दि. ६ ।१९	व्य. ३६।३१	कि० ०।३२	म. ३५।१३	रा० ८ ।४३	९ ।१६।३२।५४	२६।५२	६।३७	५।२३	[illegible]	१६	३०
२ श०	२३।१९	दि० ३ ।५७	ध. ३ ।३८	" ८ । ४	व० २९।१९	को. २३।१९	कुम्भ	अहो०	९ ।१७।३४।०	२६।५६	६।३७	५।२३	११	१७	३१
३ र०	१९।२६	" २ ।२६	श० १ ।१५	" ६ ।५४	प. २३।१६	ग. १९।१६	कु० ४५। ५	रा० १२।३८	९ ।१८।३५।१६	२६।४९	६।३६	५।२४	१२	१८	१
४ चं०	१५।२६	" १ ।१८	पूभा. ५६।१०	रा ६ ।१३	शि० १८।२	वि. १६।४६	मीन	अहो०	९ ।१९।३६।१२	२७। १	६।३६	५।२४	१३	१९	२
५ मं०	१५। २	" १२।३६	रे. ५६।५१	प्रा ६।३१	सि. १३।४८	वा० १५।२	मी. ५९।५१	प्रा० ६।३१	९ ।२०।३७।१८	२७। ६	६।३५	५।२५	१४	२०	३
६ बु०	१४।३१	" १२।२२	अ० ६०।००	अहो०	सा. १०।१२	तै० १४।३१	मेष	अहो०	९ ।२१।३८।१६	२७। ८	६।३४	५।२६	१५	२१	४
७ बृ०	१५।१७	" १२।४१	अ० १ ।४७	दि. ७ ।१६	शु० ७ ।२७	व. १५।१७	"	"	९ ।२२।३९।१४	२७।१२	६।३४	५।२६	१६	२२	५
८ शु०	१७।२८	" १।३२	भ० ५ ।१	" ८।३३	शु. ६ ।२४	ब. १७।२८	मे. १९।२४	दि० २।१९	९ ।२३।४०।१२	२७।१५	६।३३	५।२७	१७	२३	६
९ श०	२०।४२	" २।४९	कृ. ९ ।३४	" ७।३४	ब्र. ५ ।४९	को. २०।४२	वृष	अहो०	९ ।२४।४१।१०	२७।१८	६।३२	५।२८	१८	२४	७
१० र०	२५। १	" ४।३२	रो. १४।४३	" १२।२५	ऐ० ६ ।११	गं. २५।१	वृ० ४७।४६	रा० १ ।३८	९ ।२५।४२। ८	२७।२२	६।३२	५।२८	१९	२५	८
११ ब०	३०। २	रा. ६।३२	मृ० २०।४९	२।५१	वै. ७ ।७	बि. ३०।२	मिथुन	अहो०	९ ।२६।४३। ६	२७।२५	६।३१	५।२९	२०	२६	९
१२ मं०	३५।२८	" ८।४१	आ० २७।२५	सा ५।२८	वि. ८।२३	त. ३ ।००		"	९ ।२७।४४। ३	२७।२८	६।३०	५।३०	[illegible]	२७	१०
१३ बु०	४०।४८	" १०।४१	पुन. ३३।५६	रा ८। ४	प्री. ९ ।५०	को. ८। ८	मि. १७।१८	दि० १ ।२५	९ ।२८।४४।४९	२७।३१	६।३०	५।३०	२२	२८	११
१४ बृ०	४५।२८	" १२।४४	पु० ४०।००	" १०।२९	आ० १०।५७	श १३ ।१३	कर्क	अहो	९ ।२९।४५।३५	२६।३४	६।२९	५।३१	२३	२९	१२
१५ शु०	४९।४१	" २।३१	आश्ले. ४५।२२	" १२।२७	सौ० ११।३८	वि. १७।३६	क० ४५।२२	रा० १२।३७	१०।०।४६।२१	२७।३७	६।२९	५।३१	२४	३०	१३

मीने गुरुः ११।५३, शिशिरनवरात्रारम्भः, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, निर्बन्धविवाहो दिवारात्रौ, पञ्चकारम्भः दि घं ८ मि ३२ उ, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः × वदर ३. पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां. चन्द्रदर्शनं मु ४५ फलं समर्घम् । × पूर्वयात्रा प्रतिपदि, चित्रायां केतुः ५५।५, मूले धनुषि च शुक्रः २३।२६ ।
बदर ४ श्रीगणेश ४ व्रतं, प्रदोषत्वाद्नुपनयनं नैव, कुन्द ४, कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, फरवरी (२) मासारम्भः, पूर्वभाद्रमानं ५८।२६, भ ४८।११ उ ।
भ १६।४६ या ।

वसन्तपञ्चमी, श्रीसरस्वतीपूजनं, सौर ५, पश्चिमाभिमुखहलप्रवाहः, छन्दोगानामुपनयनं, पञ्चकान्तः रा घं.६ मि. ३१ उ, शतभिषायां बुधः ५८।४०, गं४७।५१उ, +
निर्बन्धविवाहो दिवारात्रौ. मुण्डनं सप्तम्यां, देवादिप्रतिष्ठा, उत्तरां विना यात्रा, ग २।५१ या । + पूर्वपश्चिमयात्रा पञ्चम्याम् ।
मुण्डनमश्विन्यां, माघी ७ स्नानदानादिः, प्रयागस्नानं महापुण्यप्रदं, दक्षिणां विना यात्राऽश्विन्यां, मन्वादिः, भ १५।१७ उ ४६।२२ या ।
भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणं, धनिष्ठायां रविः २३।२२ ।

दक्षिणयात्रा नवम्यां रोहिण्याम् ।
निर्बन्धविवाहो दिवारात्रौ, उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, दक्षिणपूर्वयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां, भ ५७।३१ उ. ।
निर्बन्धविवाहो मुण्डनञ्च मृगशिरसि, उपनयनं, रात्रौ एकादशीव्रतोद्यापनं, भैमी ११ व्रतं, देवादिप्रतिष्ठावापीकूपतडागखननञ्च मृगशिरसि, द.ति. ३०।२ उ,भ.३८।२या,=
प्रदोषत्वाद् व्रतबन्धं नैव, श्रीमाधव द्वादशी, गोदुग्धेन पारणं, पश्चिमदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, द. ति ३५।२८ या ।, = पूर्वां विनायात्रा, मृगशिरसि ।

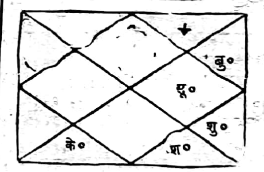
मुण्डने देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वाबाढे शुक्रः ११।२२, प्रदोष १३ व्रतम् ।
प्रदोष १४ व्रतं, अश्विन्यां मेषे च कुज ५१।५७, मासान्तः, कुम्भेरविः ५७।४१, मु.३०,फलं साम्यम् ।
विष्णुपदीसंक्रान्तिः पुण्यकालोदि घं १२ मि. ० या, माघी १५, स्नानं वस्त्रान्नदानादिः, भ १७।३६ या, गं ३४।२२ उ, ४६।२२ या । मगदेव या. केलडन्ती [illegible]
प्रातःकाल ६।३५ दिन [illegible]

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

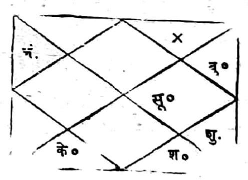
+ रा.च.मं.वृ. × रा०मं०वृ०

ति.दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सिं.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मी.लं.
१ शु०	११।२०।४७।४१	१०।११।५।७	११।१०।१६।२८	८।१०।२२।२१	७।२३।१५।२२	५।२३।२३।४८	४३।२६	११।४	१३।५७	१६।३	१८।२१	२०।३८	२२।५१	१।१०	३।२८	५।३७	७।३०	९।४	१०।३१
२ श०	११।२१।२६।१२	१०।१२।२३।५३	११।१०।१९।१५	८।११।२६।३२	७।२३।२०।२९	५।२३।२०।३७	४३।२८	११।०	१३।५०	१५।५२	१८।१०	२०।३४	२२।४९	१।६	३।२४	५।५४	७।२९	९।०	१०।२७
३ र०	११।२२।१०।४३	१०।१३।४२।३२	११।१०।३१।५२	८।१२।३६।४२	७।२३।२५।३०	५।२३।१७।२६	४३।३०	१०।५२	१३।४५	१५।५४	१८।१२	२०।२६	२२।४४	१।१	३।१९	५।२९	७।२१	८।५५	१०।२२
४ चं०	११।२२।५२।१४	१०।१५।१।२४	११।१०।४४।२८	८।१३।४३।५०	७।२३।३०।३२	५।२३।१५।१५	४३।३१	१०।५१	१३।४१	१५।४०	१८।८	२०।२५	२२।४०	०।५७	३।१५	५।२५	७।१७	८।५१	१०।१८
५ मं०	११।२३।३३।४१	१०।१६।२०।९	११।१०।५७।४	८।१४।५०।५९	७।२३।३५।३६	५।२३।११।१५	४३।३३	१०।४७	१३।३७	१५।३६	१८।४	२०।२१	२२।३६	०।५३	३।११	५।२१	७।१३	८।४७	१०।१४
६ बु०	११।२४।१६।४५	१०।१७।१९।१९	११।११।१०।१४	८।१५।५९।१९	७।२३।४०।४७	५।२३।७।५४	४३।३५	१०।४८	१३।३३	१५।४१	१७।५९	२०।१६	२२।३१	०।४८	३।६	५।१७	७।८	८।४२	१०।९
७ बृ०	११।२४।५९।४४	१०।१८।३२।२६	११।११।२३।२४	८।१७।७।१९	७।२३।४५।५७	५।२३।४।४३	४३।३६	१०।३८	१३।२८	१५।३७	१७।५५	२०।१२	२२।२७	०।४४	३।२	५।१२	७।४	८।३८	१०।५
८ शु०	११।२५।४२।४३	१०।१९।१८।३८	११।११।३६।३३	८।१८।१५।२९	७।२३।५१।७	५।२३।१।३२	४३।३८	१०।३४	१३।२४	१५।३३	१७।५१	२०।८	२२।२३	०।४०	२।५८	५।८	७।०	८।३४	१०।१
९ श०	११।२६।२५।४२	१०।२०।४।४७	११।११।४९।४२	८।१९।२३।३९	७।२३।५६।१७	५।२२।५८।२१	४३।४०	१०।२९	१३।१९	१५।२८	१७।४६	२०।३	२२।१८	०।३५	२।५३	५।३	६।५५	८।२९	९।५६
१० र०	११।२७।८।४१	१०।२१।१०।५६	११।१२।२।५१	८।२०।३१।४८	७।२४।१।२०	५।२२।५५।१०	४३।४१	१०।२५	१३।१५	१५।२४	१७।४२	१९।५९	२२।१४	०।३१	२।४९	४।५९	६।५१	८।२५	९।५२
११ ब०	११।२७।५१।४०	१०।२१।५७।५	११।१२।१६।१०	८।२१।३९।५७	७।२४।६।३७	५।२२।५२।०	४३।४३	१०।२१	१३।११	१५।२०	१७।३८	१९।५५	२२।१०	०।२७	२।४५	४।५५	६।४७	८।२१	९।४८
१२ मं०	११।२८।३४।३९	१०।२२।५३।१४	११।१२।२९।१९	८।२२।४८।६	७।२४।११।४७	५।२२।४८।४९	४३।४४	१०।१७	१३।७	१५।१६	१७।३४	१९।५१	२२।६	०।२३	२।४१	४।५१	६।४३	८।१७	९।४४
१३ बु०	११।२९।१७।३७	१०।२३।३९।१६	११।१२।४२।३५	८।२३।५७।२२	७।२४।१५।३३	५।२२।४५।३८	४३।४५	१०।१२	१३।२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२।१	०।१८	२।३६	४।४६	६।३८	८।१२	९।३९
१४ बृ०	११।२९।५९।३६	१०।२४।२३।२४	११।१२।५५।१०	८।२५।५।३८	७।२४।१९।१८	५।२२।४२।२७	४३।४७	१०।७	१२।५७	१५।६	१७।२४	१९।४१	२१।५६	०।१३	२।३१	४।४१	६।३३	८।७	९।३४
१५ शु०	०।०।४२।३५	१०।२५।६।२६	११।१३।८।२५	८।२६।१२।५२	७।२४।२३।१३	५।२२।३९।१६	४३।४८	१०।३	१२।५३	१५।२	१७।२०	१९।३७	२१।५२	०।९	२।२७	४।३७	६।२९	८।३	९।३०

५ कुजेवल्ली ८।३६।१२।४५ अयनांशाः २३।१८।३६



१२ कुजे वल्लो ८।३६।१२।५२ अयनांशाः २३।१८।००



अथ विविधविषयाः-अचलासप्तम्यां सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन स्नायात्तात्रस्नानमन्त्राः-यदयज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी । एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः । इति सप्त-विधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके । सप्तव्याहृतिके देवि ! हरमाकरि सप्तमी । ततः सूर्यायार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः-सप्तसप्तेरह प्रीते सप्तलोकप्रदीपन । सप्तमी-सहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर । ततः प्रणमेच्चतन्मन्त्रः-जननी सर्व लोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके । सप्तव्याहृतिके देवी नमस्ते सूर्यमूर्त्तये । ततो दाना-दिकं कुर्यात् । अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्रः-वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्म्मणे । वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च । अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे । भीष्मः शान्तवोवीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः । आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् । अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च । इदं जीवत्पित्रापि कार्यम् ।

वातावरणम्-पक्षादितश्चतुर्थी यावच्छीतातपवत्मेघधारादयस्तत एकादशी यावन्मेघच्छायावायुशीतादयस्ततः पक्षान्तं यावच्छीतातिवाय्वल्पवृष्टिवायवः ।

ग्रहस्थितिः-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ।

फाल्गुनकृष्णपक्ष:	संवत् २०४३, शक: १९०८ सन् १३६४ साल, दि.१४।२।८७ त: २८।२।८७ या, दक्षिणे कान: । मार्गिणो पूर्वोदितो गुरुशुक्रो, मूढ: १४ तोऽशुद्ध:, शिशिरर्त्तु, याम्यगोल: सौम्यायनञ्च ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि	योगा: द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प. ।	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि	दिनाङ्क: रा.	सौ.	अं.
१ श.	५२।३२	रा ३।२६	म.	४६।३८	रा. २।१६	शो. ११।३५	बा. २।१६	सिंह	अहो०	१०।१।१४।७।७	२७।४१	६।२८	५।३२	२५	२	१४
२ र.	५४।१७	,, ४।१०	पूफ	५२।४६	,, ३।३३	अतं. १०।४१	तै. २३।२४			१०।२।१४।७।५३	२७।४४	६।२७	५।३३	२६	३	१५
३ चं.	५५।४०	,, ४।१९	उफ.	५४।३७	,, ४।१८	सु. ८।४६	व. २४।२८	सि. ८।१४	दि. ६।४५	१०।३।१४।८।२९	२७।४७	६।२७	५।३३	२७	४	१६
४ मं.	५३।४५	,, ३।५६	ह.	५५।१४	,, ४।२२	धृ. ५।५७	ब. २४।१२	कन्या	अहो०	१०।४।१४।९।२५	२७।५०	६।२६	५।३४	२८	५	१७
५ बु.	५१।३४	,, ३।३	चि.	५४।१९	,, ४।१७	शू. २।४	को २२।२६	क. २४।५१	दि. ४।२३	१०।५।१५।०।००	२७।५४	६।२५	५।३५	२९	६	१८
६ बृ.	४८।२२	,, १।४५	स्वा.	५३।३	,, ३।३७	वृ. ५१।३८	ग. १९।५८	तुला	अहो	१०।६।१५।०।३४	२७।५८	६।२४	५।३६	३०	७	१९
७ शु.	४४।१७	,, १२।७	वि.	५०।३७	,, २।३९	ध्रु. ४६।४५	वि. १६।२०	तु. ३६।२९	रा. ९।००	१०।७।१५।१।१०	२८।१	६।२४	५।३६	१	८	२०
८ श.	३९।२६	,, १०।९	अनु.	४३।२३	,, १।२०	व्या. ३८।२४	बा. ११।५१	वृश्चिक	अहो०	१०।८।१५।१।४५	२८।५	६।२४	५।३७	२	९	२१
९ र.	३४।४	,, ८।००	ज्ये.	४३।४१	,, ११।५०	ह० ३१।००	तै. ६।४५	वृ. ४३।४१	रा. ११।५०	१०।९।१५।२।२०	२८।९	६।२२	५।३८	३	१०	२२
१० चं.	२८।१७	सा ५।४०	मू.	३६।३८	,, १०।१२	व्र. २३।२०	व. १।१०	धनु	अहो.	१०।१०।१५।२।५५	२८।१३	६।२१	५।३९	४	११	२३
११ मं.	२२।२२	दि ३।१७	पूषा.	३५।२८	,, ८।२१	सि. १५।३०	बा. २२।२२	ध. ४६।२६	रा. २।७	१०।११।१५।३।२९	२८।१६	६।२१	५।३९	५	१२	२४
१२ बु.	१६।२६	,, १२।५६	उषा.	३१।२१	,, ६।५२	व्य. ७।४४	तै. १६।२६	मकर	अहो०	१०।१२।१५।३।५२	२८।२०	६।२०	५।४०	६	१३	२५
१३ बृ.	१०।२१	,, १०।३९	श्र.	२७।३५	दि ५।२१	व. ०।५	व. १०।२१	म० ५५।५७	रा. ४।४२	१०।१३।१५।४।१४	२८।२४	६।१९	५।४१	७	१४	२६
१४ शु.	५।३८	,, ८।३३	ध.	२४।१६	,, ४।२	शि. ४५।५८	श. ५।३८	कुम्भ	अहो	१०।१४।१५।४।३६	२८।२८	६।१८	५।४२	८	१५	२७
३० श.	१।३	,, ६।४२	श.	२१।४५	,, २।५९	सि. ३६।४७	ना १।३	"	"	१०।१५।१५।४।५८	२८।३२	६।१८	५।४२	९	१	२८

मासादि, उत्तरभाद्रे गुरू: ३१।१५, फाल्गुने वाग्मती स्नान पुण्यप्रदं ।
द्विरागमनमुत्तरफल्गुन्यां, उपग्रहराहुवेधाद्विवाहोमध्यम उत्तरफल्गुन्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
उपग्रहराहुवेधाद्विवाहोमध्यम उत्तरफल्गुन्या, द्विरागमनं तृतीयाया, गृहारम्भस्तृतीयायाम्, गृहप्रवेशोमध्यमस्तृतीयायाम्; द. वि. ५४।४८ उ.; म. २४।२८ उ. ५४।४० या ।
श्रीगणेश ४ व्रत, वक्री बुध: १०।२१, पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्या, द. ति. ५३।४५ या ।
निर्वेधविवाहश्चित्रायां, बुधवेधाविवाहो मध्यम: स्वात्यां, द्विरागमनं पञ्चम्यां, मुण्डनं, दक्षिणपूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे, ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, गण्डयोगमानं ५५।१२ ।
बुधवेधाद्विवाहो मध्यमो घं. ७ मि यावद्रात्रौ, पश्चिमयात्रा स्वात्यां, शतभिषायां रवि: २३।३०, म ४८।२२ उ. ।
निर्वेधविवाहोऽनुराधायां, पश्चिमास्तो बुध: ४३।३८, उत्तरयात्रानुराधायां, म १६।२० या ।
पश्चिमोत्तरयात्रा दिवारात्रौ ।
निर्वेधविवाहो मूले, उत्तराषाढे शुक्र: ४०।४०, उत्तरयात्रावृश्चिकस्थे चन्द्रे दशम्यां, तत: पूर्वोत्तरयात्रा मूले; मं. ३७।४१ उ. ५२।४१ या ।
निर्वेधविवाहो मूले, उत्तरयात्रा दिवारात्रौ, म. १।१० ब. २८।१७ या ।
विजया ११ व्रत सर्वेषां, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे द्वादश्याम् ।
निर्वेधविवाहो दिवारात्रौ, गोदष्ना पारण, प्रदोष १३ व्रतं, मकरे शुक्र: ३१।३९ (१३) एकोदिष्टम् ।
निर्वेधविवाहस्त्रयोदश्यां, महाशिवरात्रिव्रतं नक्तव्रतञ्च, शिवपार्वतीविवाहोत्सव:, श्रीसिद्धेश्वर पूजनोत्सव:, प्रदोष १४ व्रतं, पञ्चकारम्भो दि. घं. ५ मि २१ उ. ×
क्षीरोगुरूरशुद्धारम्भश्च २२।५५, श्रीशिवदर्शनम् । ×परिघयोगमान १२।४२, म. १०।५१ उ. ३८।१५ या, वैद्यनाथप्रतिष्ठादिनं, दक्षिणां विना यात्रा त्रयोदशाम ।
फाल्गुनी ३०, गोसहस्रिका ३० मन्वादि, कल्याणेश्वरात जनकपुरस्य परिक्रमारम्भ:, प्रतिमन्मानं ५६।६ नवमं, पश्चिममतात्‌ 'पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षञ्च महद्भयम'—
पूर्वभाद्रे ।

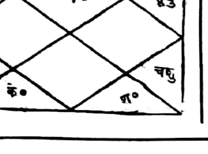
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ श.	०।१।८।३६	१०।१४।१७।३२	११।३।२२।४६	८।१७।२५।१	७।२४।२०।३९	५।२२।३६।५	४३।५०	१०।५९	१२।४९	१४।५८	१७।१६	१९।३३	२१।४८	०।५	२।२३	४।३३	६।२५	७।५९	९।२६
२ र.	०।१।५०।३८	१०।१४।३८।३७	११।३।३६।१४	८।१८।३४।२२	७।२४।२३।२६	५।२२।३२।५५	४३।५१	१०।५५	१२।४५	१४।५४	१७।१२	१९।२९	२१।४४	०।१	२।१९	४।२९	६।२१	७।५५	९।२२
३ चं.	०।२।३२।२३	१०।१४।५९।५२	११।३।४९।३९	८।१९।४३।३८	७।२४।२६।३३	५।२२।२९।४५	४३।५३	१०।५१	१२।४१	१४।५०	१७।८	१९।२५	२१।४०	२३।५७	२।१५	४।२५	६।१७	७।५१	९।१८
४ मं.	०।३।१४।१६	१०।१५।२०।४९	११।४।३।४	८।२०।५२।५३	७।२४।२९।३०	५।२२।२६।३५	४३।५५	१०।४७	१२।३७	१४।४६	१७।४	१९।२१	२१।३६	२३।५३	२।११	४।२१	६।१३	७।४७	९।१४
५ बु.	०।३।५५।२२	१०।१४।५६।१२	११।४।१६।४७	८।२२।३।७	७।२४।४२।३८	५।२२।२३।२४	४३।५७	१०।४३	१२।३३	१४।४२	१७।०	१९।१७	२१।३२	२३।४९	२।७	४।१७	६।९	७।४३	९।१०
६ बृ.	०।४।३६।४६	१०।१४।३७।३६	११।४।३०।३१	८।२३।१३।२१	७।२४।५५।४७	५।२२।२०।१३	४३।५९	१०।३९	१२।२९	१४।३८	१६।५६	१९।१३	२१।२८	२३।४५	२।३	४।१३	६।५	७।३९	९।६
७ शु.	०।५।१७।५६	१०।१४।१९।५	११।४।४४।१४	८।२४।२३।३५	७।२५।८।५५	५।२२।१७।२	४४।००	१०।३५	१२।२५	१४।३४	१६।५२	१९।९	२१।२४	२३।४१	१।५९	४।९	६।१	७।३५	९।२
८ श.	०।५।५६।१२	१०।१३।५४।३०	११।४।५७।५८	८।२५।३३।४९	७।२५।१२।३	५।२२।१३।५१	४४।२	१०।३१	१२।२१	१४।३०	१६।४८	१९।५	२१।२०	२३।३७	१।५५	४।५	५।५७	७।३१	८।५८
९ र.	०।६।४०।२५	१०।१३।३३।५७	११।५।११।२१	८।२६।४४।२	७।२५।१५।२१	५।२२।१०।४०	४४।४	१०।२७	१२।१७	१४।२६	१६।४४	१९।१	२१।१६	२३।३३	१।५१	४।१	५।५३	७।२७	८।५४
१० चं.	०।७।२१।३६	१०।१३।११।२५	११।५।२४।२५	८।२७।५४।१७	७।२५।१८।२०	५।२२।७।३०	४४।६	१०।२३	१२।१३	१४।२२	१६।४०	१८।५७	२१।१२	२३।२९	१।४७	३।५७	५।४९	७।२३	८।५०
११ मं.	०।८।२।५२	१०।१२।४६।५१	११।५।३६।८	८।२९।४।३१	७।२५।२१।२८	५।२२।४।२०	४४।८	१०।१९	१२।९	१४।१८	१६।३६	१८।५३	२१।८	२३।२५	१।४३	३।५३	५।४५	७।१९	८।४६
१२ बु.	०।८।४४।२	१०।१२।२।१६	११।५।५१।२८	९।०।१५।१०	७।२५।२६।१८	५।२२।१।९	४४।१०	१०।१५	१२।५	१४।१४	१६।३२	१८।४९	२१।४	२३।२१	१।३९	३।४९	५।४१	७।१५	८।४२
१३ बृ.	०।९।२५।१३	१०।११।१४।४८	११।६।७।४७	९।१।२५।४८	७।२५।३१।८	५।२१।५७।५८	४४।१२	१०।११	१२।१	१४।१०	१६।२८	१८।४५	२१।०	२३।१७	१।३५	३।४५	५।३७	७।११	८।३८
१४ शु.	०।१०।६।२३	१०।१०।२४।१६	११।६।२२।७	९।२।३६।२७	७।२५।३५।५८	५।२१।५४।४७	४४।१४	१०।८	११।५८	१४।७	१६।२५	१८।४२	२०।५७	२३।१४	१।३२	३।४२	५।३४	७।८	८।३५
३० श.	०।१०।४७।३४	१०।९।३६।४५	११।६।३६।२८	९।३।४७।६	७।२५।४०।४६	५।२१।५१।३६	४४।१६	१०।४	११।५४	१४।३	१६।२१	१८।३८	२०।५३	२३।१०	१।२८	३।३८	५।३०	७।४	८।३१

४ कुजेबल्ली ८।३६।१२।४९ अयनांश: २२।१६।१२



११ कुजेबल्ली ८।३६।१३।३६ अयनांश: २२।१६।१२



अथ विविधविषया:—फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च, ब्रह्माण्डखण्डे—माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी । दत्ते शिव: फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरै: । शिवरात्रिरितिख्याताभत्कलेव पृथक् स्थिता । तथा च-उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम् । यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशय: । वर्षे वर्षे महादेवि नित्य शक्त्याप्रपूजयेत् । सर्पदो यदि वा सूर्यस्तावते ह्विवानपि ; बलन्त्येते कदाचिद्धि निश्चलं च शिवव्रतम् । बलाहोरात्रतं कार्यमशक्ते सति नक्तव्रत कार्यम् । दिवानशनपूर्वकरात्रि भोजनं नक्तव्रतमिति । गङ्गास्नानमन्त्र:—ब्रह्मस्वरुपे हे गंगे स्नानमाचर्यंते मया । त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव । गङ्गासागरसङ्गमस्नानमन्त्र:—त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे । उभयो: संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै । समुद्रस्नानमन्त्र:—त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधा: कामदीपन । प्रधान: सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्यय: । अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपां पते । वृजिनं हर मे सर्वतीर्थराज नमोस्तुते ।

वातावरणम्—पक्षादितश्चतुर्थी यावच्छीतवायुचारादयस्तोदशमीं यावच्छीतालपत्ववायुमेघचारादयस्तत: पक्षान्तं यावत्खण्डवृष्टिवायुचारमेघच्छायादय: ।

ग्रहस्थिति:—मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रशनय:, भार्गी पश्चिमोदितबुध: ४ त: वक्री ७ तो पश्चिमास्त: ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि	योगः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
२ र०	५४।३५	रा० ४।७	पूभा. १६।५८	दि. २।१६	भा० ३४।१८	बा० २५।५७	कु० ८।२७	दि० ६।४०	१०।१६।५५।२२	२८।३६	६।१७	५।४३	१०	[illegible]	१
३ चं०	५२।५४	,, ३।२६	उभा. १६।१५	,, १।५८	शु. २६।४१	तै. २३।४४	मीन	अहो०	१०।१७।५५।२२	२८।४०	६।१६	५।४४	११	१८	२
४ मं०	५२।२३	,, ३।१२	रे० १६।४२	,, २।८	शु २६।०	व. २२।३८	मि० १६।४२	दि० २।८	१०।१८।५६।४	२८।४४	६।१५	५।४५	१२	१९	३
५ बु	५३।१३	,, ३।३१	अ २१।२३	,, २।४६	ब. २३।२०	व. २२।२८	मेष	अहो०	१०।१९।५६।१२	२८।४६	६।१४	५।४६	१३	२०	४
६ बृ०	५५।२५	४।२३	भ. २४।२०	,, ३।५७	ऐ २१।४०	कौ० २४।१६	मे० ३५।३५	रा० ८।२७	१०।२०।५६।१९	२८।५३	६।१३	५।४७	१४	२१	५
७ शु०	५८।५०	,, ५।४४	कृ. २८।२५	,, ३।३४	वै० २०।५४	ग० २७।२	वृष	अहो०	१०।२१।५६।२६	२८।५७	६।१२	५।४८	१५	२२	६
८ श०	६०।०	अहा	रो० ३३।३७	रा ७।३६	वि. २१।१८	वि ३०।४८	,,	,,	१०।२२।५६।३३	२९।१	६।११	५।४९	१६	२३	७
८ र०	२।५७	दि. ७।२२	मृ० ३९।३७	,, १।१२	प्री. २१।५२	बा. २।५७	वृ० ६।३७	दि० ८।५०	१०।२३।५६।४०	२९।६	६।११	५।४९	१७	२४	८
९ चं०	७।५८	,, ९।२१	आ. ४६।८	,, १२।३७	आ. २३।६	कौ ७।५८	मिथुन	अहो०	१०।२४।५६।४७	२९।१०	६।१०	५।५०	१८	२५	९
१० मं०	१३।१८	,, ११।२८	पुन. ५२।४२	,, ३।१४	सौ. २४।३७	ग. १३।१८	मि० ३६।४	रा० ८।३५	१०।२५।५६।५४	२९।१४	६।९	५।५१	१९	२६	१०
११ बु०	१८।३२	,, १।३३	पु: ५८।५३	,, ५।४१	शो. २५।५८	बि. १८।३२	कर्क	अहो०	१०।२६।५६।४७	२९।१८	६।८	५।५२	२०	२७	११
१२ बृ०	२३।१५	,, ३।२६	श्ले० ६०।००	अहो०	अग २६।५५	वा. २३।१५	,,	,,	१०।२७।५६।४०	२९।२२	६।८	५।५२	२१	२८	१२
१३ शु०	२७।६	,, ४।५६	श्ले. ४।२७	दि.७।५४	सु २७।१२	नै. २७।८	क० ४।२७	दि० ७।५४	१०।२८।५६।३३	२९।२६	६।७	५।५३	२२	२९	१३
१४ श०	२९।५०	सा. ६।२	म० ८।५६	,, ६।४२	धृ० २६।२६	व. २६।५०	सिंह	अहो	१०।२९।५६।२६	२९।३०	६।६	५।५४	२३	३०	१४
१५ र०	३१।२४	रा ६।३६	पूफा. १२।२३	,, १।१२	शू० २५।१८	वि. ०।३७	सि. २७।५५	दि० ५।१५	११।०।५६।१९	२९।३४	६।५	५।५५	२४	१	१५

फाल्गुनशुक्लपक्षः — संवत् २०४३, शक. १९०८, सन् १३९४ साल, दि० ११।३।८७ नौ १४।३।८७ या, दक्षिणकाल: । मार्गी पूर्वोदितो गुरुः १४तः पश्चिमास्तः मार्गी पूर्वोदित शुक्रः, अशुद्धः, शिशिरर्तुः, १४ तोः वसन्तर्तुः, याम्यगोलः सौम्यायन ञ्च।

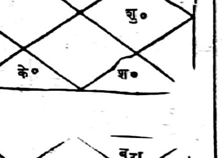
मार्च (३) मासारम्भः, द्विरागमनमुत्तरभाद्रे, उत्तरयात्रा मीनस्थे चन्द्रे पूर्वभाद्रे, चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यम् ।
द्विरागमनं तृतीयायां, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां तृतीयायां, मुण्डनं रेवत्यां, द. ति. ५२।५४ उ. ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पञ्चकान्तो दिवा घं ३ मि. ८ उ., उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्यां, द. ति. ५२।२३ या, गं. ७।४२ उ. २३।४२ या, भ. २२।३८ उ. ५२।२३ या ।
द्विरागमन मुण्डनमुत्तरां विना यात्रा चाश्विन्यां, पूर्वभाद्रे रविः ४८।१०, धनिष्ठायां वक्रगत्याबुधः ४।४३, भरण्यां कुजः २५।५४ ।
× ।
द्विरागमन पूर्वदक्षिणयात्राचाष्टम्यां, श्रवणायां शुक्रः २।१, भ. ५८।४० उ. ।
दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा, भ. ३०।४८ या ।
द्विरागमन पश्चिमां विना यात्रा चाष्टम्यां, पूर्वोदितो बुधः ४६।४१ ।
दक्षिणपश्चिमयात्रा द्विरागमनं गृहारम्भप्रवेशौ च पुनर्वसौ ।
दक्षिणपश्चिमयात्रा दशम्यां, भ. ४५।५५ उ, (११) एकोदिष्टम् ।
आमलकी ११ व्रतं सर्वेषां, जनकपुरस्यान्तर्गृहीय परिक्रमारम्भः, गृहारम्भप्रवेशौ द्विरागमनमुत्तरां विना यात्रा च पुष्ये, मुण्डनमेकादश्यां, भ. १८।३२ या ।
गोविन्द १२, गोदघ्ना पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, मार्गी बुधः २२।७, भं. ५३।२७ उ. (१२) एकोदिष्टम् ।
प्रदोष १४ व्रतं, गं. ८।२७ या ।
मीने रविः ४८।१८, मासान्तः, मु. ३० फलं साम्यं, गुर्वादित्यारम्भः ४८।१८, पश्चिमास्तो गुरुः ३२।५३, भ. २२।५९ उ. ।
फाल्गुनी १५, स्नान दानादिः, षडशीतिसंक्रान्ति पुण्यकालो दिवा घं. १२ मि. ० या, जनकपुरस्य परिक्रमासमाप्तिः, होलिकादाहो घं. ५ मि ५५ उ. घं. ६ मि.२९ यावत्प्रदोषे, भ. ०।३७ या ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

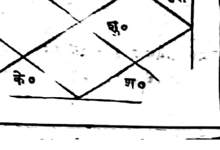
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
२ र	० ११।१२।६।६	१०।८ १५।२।१२	११।१६ १५।०।५७	९ १४।५।५।६	७।२५।१७।३५	५।२१।४८।२५	४४।१८	७।०	११।५०	१३।५२	१६।१७	१८।३४	२०।४६	२३।६	१।२४	३।३४	५।२६	७।१०	८।२७
३ च	० ११।२१।०।२७	१०।८ १४।४१	११।१ १५।१।६	९ १६।५।१६	७।२५।२०।२७	५।२१।४५।१५	४४।२०	६।५६	११।४६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४५	२३।२	१।२०	३।३०	५।२२	६।५६	८।२३
४ मं०	० ११।२।५१।३५	१०।७ १७।१०	११।७ ११।६।२५	९ १७।१५।२३	७।२५।२३।१६	५।२१।४२।५	४४।२२	६।५२	११।४२	१३।५१	१६।९	१८।२६	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।२६	५।१८	६।५२	८।१९
५ बु०	० ११।३।३२।४०	१०।६ १४।६।२५	११।७ १३।३।४०	९ १८।२७।११	७।२५।२६।३७	५।२१।३८।५४	४४।२४	६।४८	११।३८	१३।४७	१६।५	१८।२२	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।२२	५।१४	६।४८	८।१५
६ बृ०	० ११।४।१३।४५	१०।६ १२।१।४०	११।७ १४।७।५५	९ १९।३८।५६	७।२५।२९।५१	५।२१।३५।४३	४४।२६	६।४४	११।३४	१३।४३	१६।१	१८।१८	२०।३३	२२।५०	१।८	३।१८	५।१०	६।४४	८।११
७ शु०	० ११।४।५४।५०	१०।५ १५।३।५५	११।८ १२।१०	९ २०।५०।४७	७।२५।३३।१३	५।२१।३२।३२	४४।२८	६।४०	११।३०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।२९	२२।४६	१।४	३।१४	५।६	६।४०	८।७
८ श०	० ११।५।३५।५५	१०।५ १२।६।१०	११।८ ११।६।२४	९ २२।२।३५	७।२५।३६।३१	५।२१।२९।२१	४४।३०	६।३६	११।२६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२५	२२।४२	१।०	३।१०	५।२	६।३६	८।३
८ र	० ११।६।१७।०	१०।४ १५।८।२५	११।८ १३।८।३८	९ २३।१४।२३	७।२५।३९।४८	५।२१।२६।१०	४४।३२	६।३२	११।२२	१३।३१	१५।४९	१८।६	२०।२१	२२।३८	०।५६	३।६	४।५८	६।३२	७।५९
९ च	० ११।६।५८।५	१०।४ १३।०।४०	११।८।४४।५२	९ २४।२६।११	७।२५।४३।५	५।२१।२२।५९	४४।३४	६।२८	११।१८	१३।२७	१५।४५	१८।२	२०।१७	२२।३४	०।५२	३।२	४।५४	६।२८	७।५५
१० मं०	० ११।७।३९।९	१०।४ १२ १५५	११।८।५८।६	९ २५।३७।५९	७।२५।४६।२२	५।२१।१९।४८	४४।३६	६।२४	११।१४	१३।२३	१५।४१	१७।५८	२०।१३	२२।३०	०।४८	२।५८	४।५०	६।२४	७।५१
११ बु०	० ११।८।१९।५८	१०।४ ११।८।३५	११।९।११।३६	९ २६।४६।२६	७।२५।४६।५६	५।२१।१६।३८	४४।३८	६।२०	११।१०	१३।१९	१५।३७	१७।५४	२०।९	२२।२६	०।४४	२।५४	४।४६	६।२०	७।४७
१२ बृ०	० ११।९।०।४६	१०।४ १३।४।१५	११।९।२८।६	९ २८।१।१५	७।२५।४८।५६	५।२१।१३।२७	४४।४०	६।१६	११।६	१३।१५	१५।३३	१७।५०	२०।५	२२।२२	०।४०	२।५०	४।४२	६।१६	७।४३
१३ शु०	० ११।९।४१।३४	१०।४ १४।६।५५	११।९।४२।३६	९ १२।६।१२।५४	७।२५।५०।१३	५।२१।१०।१६	४४।४२	६।१२	११।२	१३।११	१५।२९	१७।४६	२०।१	२२।१८	०।३६	२।४६	४।३८	६।१२	७।३९
१४ श०	० १२।०।२२।२२	१०।४ १५ १३६	११।९।५७।६	९ १२।०।२४।३३	७।२५।५१।३०	५।२१।७।५	४४।४४	६।८	१०।५८	१३।८	१५।२६	१७।४३	१९।५८	२२।१५	०।३३	२।४३	४।३५	६।९	७।३६
१५ र०	० १२।१ ३।१०	१०।४ १२।१।१६	११।१०।११।३६	९ १२।१।३६।१२	७।२५।५२।४७	७।२१।३।५४	४४।४६	६।५	१०।५५	१३।४	१५।२२	१७।३९	१९।५४	२२।११	०।२९	२।३९	४।३१	६।५	७।३२

४ कुजेवल्ली ८।२६।१३।१२
अयनांशा: २२।१६।१३



१० कुज वल्ली ८।२६।१२।२०
अयनांशा: २२।१६।१४



अथ विविधविषयाः–फाल्गुनपूर्णिमायां होलिकादाहः– तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वाकाममन्त्रं विवर्जयेत् । धृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैः मनोरमैः । तमग्नि त्रिःपरिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च । जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः । अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां स्थापयेत्, मन्त्रः–असृग्भयाभयसन्त्रस्तैः कृतात्वं होलिबालिशैः । अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदाभव । ततो होलिकायै नम इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत् । तत्प्रदीपनमन्त्रः–दीपयाम्यद्य ते घोरां चितिं राक्षसि ते नमः । हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः । ततः परदिने होलिकाभस्मधारणमन्त्र –वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः । अतस्त्वं पाहिनो भीतेर्भूषिताभूतिदा भव । अथ प्रयागे केशवपनफलम्–किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम् । किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि । केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले । तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते । स्थानविशेषमहत्वम्–प्रयागे वपनं गंगायां पिण्डपातनम् । दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत् । गङ्गातोयेऽस्थिप्रक्षेपफलम्– दशाहाभ्यन्तरे यस्य गङ्गातोयेऽस्थि मज्जति । गङ्गायांमरणं यादृक्तादृक्फलमवाप्नुयात् ।
वातावरणम्–पक्षादितोऽष्टमीं यावद्वायुचारतापखण्डवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघच्छायाशीतवृद्धिखण्डवृष्टिवायवः ।।
ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः. १४ तो पश्चिमस्तः गुरुः वक्री पश्चिमास्तो बुधः ८ तो पूर्वोदितः १३ तः मार्गी ।।

ति.दि.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: रा.	सौ.	अं.
१ च	३१।२८	रा ६।३६	उफा.	१४।३०	दि. ११।५२	गं. २१।३७	बा. १। २१	कन्या	अहो०	१११ १५।६।१२	२६।३८	६।४	५।५६	२५	२	१६
२ मं.	३०।२७	,, ६।१६	ह.	१५।२२	,, १२।१३	वृ. १६।७	तै. १।७	क ४५।१२	रा. १२।१६	१११२ १५।६।४	२६।४१	६।४	५।५६	२६	३	१७
३ बु.	२८।२२	दि ५।२४	चि	१५।२	,, १२।८	ध्रु. १३।५१	वि. २८।२२	तुला	अहो०	१११३ १५।५।४२	२६।४५	६।३	५।५७	२७	४	१८
४ बृ.	२५।२	,, ४।३	स्वा.	१३।२७	,, ११।२६	व्या. ६।१८	बा. २५।१	तु. ५६।५५	रा. ८।८	१११४ १५।५।२०	२६।४९	६।२	५।५८	२८	५	१९
५ शु	२०।४८	,, २।२०	वि.	११।२३	,, १०।३४	ह. ३।१५	तै. २०।४६	बृश्चिक	अहो.	१११५ १५।४।५८	२६।५३	६।१	५।५९	२९	६	२०
६ श	१५।४३	,, १२।१८	अनु.	८।१९	,, ६।२१	सि ४६।१८	व. १५।४७	[illegible]	"	१११६ १५।४।३६	२६।५७	६।१	५।५९	३०	७	२१
७ र	१०।२९	,, १०।८	ज्ये.	४।४४	,, ७।५४	व्य. ४१।४५	ब. १०।१६	वृ. ४।४४	दि. ७।५४	१११७ १५।४।१४	३०।१	६।०	६।०	१	८	२२
८ च	४।३०	,, ७।४७	मू.	०।४५	,, ६।१७	व. ३४।२	को. ४।२५	धनु	अहो०	१११८ १५।३।५२	३०।५	५।५९	६।१	२	९	२३
१० मं	५८।३१	रा २।५८	उषा	५२।२९	रा. २।५८	प० २६।१५	व. २५।२३	ध. १०।३३	दि. १०।११	१११९ १५।३।२९	३०।८	५।५८	६।२	३	१०	२४
११ बु.	४८।५२	,, १२।४३	श्र.	४८।३९	,, १ ।२६	शि. १५।३७	व. १६।३४	मकर	अहो.	१११०१५।२।५२	३०।१२	५।५८	६।२	४	११	२५
१२ बृ.	४१।३६	,, १०।२८	ध.	४५।१५	,, १२।२	सि. ११।१५	को १४।७	म. १६।५७	दि. १२।५४	११११।१५।२।१५	३०।१६	५।५७	६।३	५	१२	२६
१३ शु	३६।५६	,, ८।४४	श.	४२।२९	,, १०।५६	सा. ४।२१	ग. ६।१०	कुम्भ	अहो०	१११२।१५।१।३८	३०।२०	५।५६	६।४	६	१३	२७
१४ श.	३३।१२	" ७।१२	पूभा.	४०।३८	,, १०।१०	शु ५२।२५	वि. ४।५८	कु० २६।१६	दि. ४।२१	१११३।१५।१।१	३०।२४	५।५५	६।५	७	१४	२८
३० र	३०।२४	सा. ६।४	उभा.	३६।३८	,, ६।४५	ब्र. ४७।३७	च. १ ।४१	मीन	अहो	१११४।१५।०।२४	३०।२८	५।५४	६।६	८	१५	२९

चैत्रकृष्णपक्षः

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, वि. १६।३।८७ ता: २६।३।-७ या, दक्षिण कान्तः। मार्गीपश्चिमास्तोगुरुः पूर्वोदितश्च शुक्रः, अयुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः सौम्यायनम्।

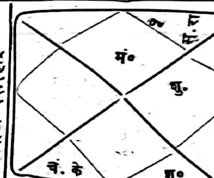
मासादिः, सप्तडोरकबन्धनं, चण्डालस्पर्शः, होलिकाभस्मधारणं, सचैलस्नानं, होली, द. ति. ३१।२८ उ.।
पूर्वदक्षिणयात्राकन्यास्थे चन्द्रे तृतीयायां ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, धनिष्ठायां शुक्रः ११।४८, द. ति. ३०।२७ या, म. ५७।४५ उ.।
श्रीगणेश ४ व्रतं, उत्तरभाद्रे रविः ६।२७, म. २८।२२ या, शतभिषायां बुधः ३८।५७।
×।
वज्रयोगमानं ५१।१७, उत्तरयात्रानुराधायाम्।
पश्चिमोत्तरयात्रा षष्ठ्यां, (६–७) एकोद्दिष्टम्, गं. ५८।४४ उ., न. १५।४७ उ. ४३।१ या।
उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, कुम्भे शुक्रः ४६।५२, गं. १३।४४ या।
नवमीमानं ५३।५८ अवमं, पूर्वाषाढमान ५५।४१, शीतलाष्टमी, उत्तरयात्राऽष्टम्याम्।
म. २५।३२ उ. ५२।२४ या।
पापमोचिनी ११ व्रत सर्वेषां, पञ्चकारम्भः दिवा व. १ मि. २९ उ.; उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा।
गोघृतेन पारणं, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
वारुणी १३, शुभयोगमानं ५३।४२, गंगास्नान, वारुणी यागो दिनं यावद् गंगास्नान, म. ३६।५२ उ.।
प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा चतुर्दश्यां, शतभिषायां शुक्रः १६।४५, वृषे कुजः ५८।३७, म. ४।५८ या।
चैत्री ३०, पार्वणम्।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च △ चं० बु० शु०

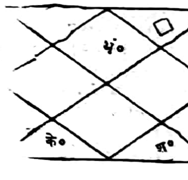
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् □ सू० रा० वृ०

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ चं.	०।२१।४४।५८	१।०।४ ।३६।५६	११।१।०।२६।६	६।२२।४७।५०	७ ।२५।४७।५३	५ ।२१।० ।४४	४४।४८	६।१	१०।५१	१२।१ ०	१५।१८	१७।३५	१९।५०	२२।७	० ।२५	२ ।३५	४ ।२७	६।१	७।२८
२ नं.	०।२२।२४।४६	१।०।५ ।५२।२६	१।०।१०।४०।३५	६।२३।५६।२८	७ ।२५।४६।१९	५ ।२०।५७।३४	४४।५०	८।५८	१०।४८	१२।५७	१५।१५	१७।३२	१६।४७	२२।४	० ।२२	२ ।३२	४ ।२४	५।५८	७।२५
३ बु.	०।२३।५।२५	१।०।६ ।४५।१३	१।१।०।५५।८	६।२५।११।८	७ ।२५।५०।१८	५ ।२०।५४।२३	४४।५२	८।५४	१०।४४	१२।५३	१५।११	१७।२८	१६।४३	२२।०	० ।१८	२ ।२८	४ ।२०	५ ।५४	७।२१
४ बृ.	०।२३।४६।४	१।०।७ ।३७।५०	१।१।१।६।४१	६।२६।२२।४८	७ ।२५।५१।१७	५ ।२०।५१।१२	४४।५४	८।५०	१०।४०	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१६।३९	२१।५६	० ।१४	२ ।२४	४ ।१६	५ ।५०	७।१७
५ शु	०।२४।२६।४३	१।०।८ ।३०।२७	१।१।१।२४।१३	६।२७।३४।२८	७ ।२५।५२।१६	५ ।२०।४८।१	४४।५६	८।४७	१०।३७	१२।४६	१५। ४	१७।२१	१६।३६	२१।५३	० ।११	२ ।२१	४ ।१३	५ ।४७	७।१४
६ श	०।२५।७।२२	१।०।९ ।२३।४	१।१।१।३९।४५	६।२८।४६।७	७ ।२५।५३।१४	५ ।२०।४४।५०	४४।५८	८।४३	१०।३३	१२।४२	१५। ०	१७।१७	१६।३२	२१।४९	० । ७	२ ।१७	४ । ९	५ ।४३	७।१०
७ र.	०।२५।४८।१	१।०।१०।१५।४१	१।१।१।५५।१७	६।२९।५७।४६	७ ।२५।५४।१३	५ ।२०।४१।३९	४५।०	८।३९	१०।२९	१२।३८	१४।५६	१७।१३	१६।२८	२१।४५	० । ३	२ ।१३	४ । ५	५ ।३९	७।६
८ च.	०।२६।२८।३९	१।०।११।८।१९	१।१।२।१०।४९	१०।१।६।२५	७ ।२५।५५।१२	५ ।२०।३८।२८	४५।२	८।३६	१०।२६	१२।३५	१४।५३	१७।१०	१६।२५	२१।४२	२४।०	२ ।१०	४ । २	५ ।३६	७।३
१० म	०।२७।६।१७	१।०।१२।०।५३	१।१।२।२६।२१	१०।२।२१।४	७ ।२५।५६।११	५ ।२०।३५।१६	४५।४	८।३२	१०।२२	१२।३१	१४।४९	१७।६	१६।२१	२१।३८	२३।५६	२ । ६	३ ।५८	५ ।३२	६।५९
११ बु.	०।२७।४६।४७	१।०।१२।५३।११	११।१२।३७।२	१०।३।३३।२६	७ ।२५।५६।१०	५ ।२०।३२।५	४५।६	८।२८	१०।१८	१२।२७	१४।४५	१७।२	१६।१७	२१।३४	२३।५२	२ । २	३ ।५४	५ ।२८	६।५५
१२ बृ.	०।२८।३०।१७	१।०।१४।३७।२६	१।१।१२।५१।४३	१०।४।४५।४४	७ ।२५।५६।१६	५ ।२०।२८।५७	४५।८	८।२५	१०।१५	१२।२४	१४।४२	१६।५९	१६।१४	२१।३१	२३।४९	१ ।५९	३ ।५१	५ ।२५	६।५२
१३ शु	०।२९।१०।४७	१।०।१५।५५।४७	१।१।१३।१६।२४	१०।५।५८।१९	७ ।२५।५६।९	५ ।२०।२५।४६	४५।१०	८।२१	१०।११	१२।२०	१४।३८	१६।५५	१६।१०	२१।२७	२३।४५	१ ।५५	३ ।४७	५ ।२१	६।४८
१४ श.	०।२९।५१।१७	१।०।१७।१४।५	१।१।१३।२१।५	१।७।१०।४४	७ ।२५।५६।२२	५ ।२०।२२।३५	४५।१२	८।१७	१०।७	१२।१६	१४।३४	१६।५१	१६।६	२१।२३	२३।४१	१ ।५१	३ ।४३	५ ।१७	६।४४
३० र.	१।०।३१।४७	१।०।१८।३२।२२	१।१।१३।३५।४५	१०।८।२३।१९	७ ।२५।५६।२५	५ ।२०।१९।२४	४५।१४	८।१४	१०।४	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१६।३	२१।२०	२३।३८	१ ।४८	३ ।४०	५ ।१४	६।४१

२ कुजेवल्ली ८।३६।१३।२७ अयनांशा: २३।१६।१५



१० कुजेवल्ली ८।३६।१३।३४ अयनांशा: २३।१६।१६



अथ विविधविषयाः–चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां वारुणी योगस्तत्र गङ्गास्नान, यथा तिथितत्त्वचिन्तामणौ–वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा। अथ गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन–सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्ट गोक्षुत मरणप्रदम्। अफल तत्क्षुतं वाच्यमन्धपीनसकैतवैः। कैतवः कपटः, पीनसोमुहुर्नासास्रावी। अथ रत्नावली रत्नकलापयोः–प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जात क्षुत कोऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतमावश्य वर्जनीयम्; यथा रत्नकलापे–अग्रे क्षुत चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चाच्छुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताच्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। अथ शुभक्षुतम् – सर्वशाकुने-औषधे च नवारोहे विवाहे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुत सप्तसु शोभनम्।

वातावरणम्–पक्षादितोऽष्टमी यावद्वायुचारतापवृद्धिरोगादयस्ततः यावन्मेघचारखण्डवृष्टिवायवः ॥

ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमा

चैत्रशुक्लपक्षः

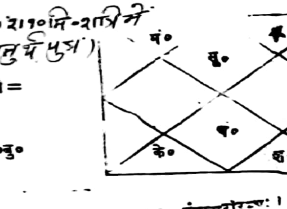
संवत् २०४४. शक. १९०८, सन् १३६४ साल, हि० २०१३।८३ न. १४।३।८७ वा, दाम्नेकाल: । मार्गी पश्चिमास्तो गुरु पूर्वोदितश्च शुक्र: अनुद्ध:, वसन्तर्तु:, य अमगोन: १५ ठ सौम्यगोल: सौम्यायनम् ।

ति.दि.	तिथय: घ.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.घ.प.	घं.मि	योगा: घ.प.	करणानि घ.प.	चन्द्रराशय: रा.घ.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानं घ.प.	सू.उ. घं.मि	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ चं०	२८।४३	दि० ३।२३	रे० ३६।४८	रा. ६।४६	ऐं० ४३।४	ब० २८।३६	मी० ३६।४८	१० ६।४६	११।१३।४६।४७	३०।३२	५।५४	६।६	६	१६	३०
२ मं०	२८।१३	,, ६।१०	अ ४२।४२	" १०।२२	वै. ४०।५०	कौ २८।६	मेष	बहो०	११।१६।४६।६	३०।३६	५।५३	६।७	१०	१७	३१
३ बु०	२२।२	" ३।२६	भ. ४३।१२	,, ११।२२	वि ३८।५५	ग. २६।३	मे० ३६।२०	रा० ५।३६	११।१७।४८।१५	३०।४०	५।५२	६।८	११	१८	१
४ बृ०	३१।१३	रा ६।२०	कृ. ४७।४४	,, १२।२७	प्री. ३८।२	व ०।८	वृष	बहो०	११।१८।४७।२१	३०।४४	५।५१	६।९	१२	१९	२
५ शु०	३४।२७	रा. ७।३७	रो० ५२।४३	,, २।५५	आ ३८।२	ब० २।५०	,,	"	११।१९।४६।२७	३०।४८	५।५०	६।१०	१३	२०	३
६ श०	३८।४१	,, ९।१८	मृ० ५८।३५	,, ३।१६	सौ. ३८।४६	कौ० ६।३४	वृ० २५।३६	दि० ४।६	११।२०।४५।३३	३०।५२	५।५०	६।१०	१४	२१	४
७ र०	४३।३७	,, ११।१६	आ. ६०।०	बहो.	शो. ४०।२८	ग. १।१६	मिथुन	अहो०	११।२१।४४।३६	३०।५६	५।४६	६।११	१५	२२	५
८ चं०	४८।५०	,, १।२०	आ ५।०८	दि ७।४८	अ० ४१।३६	वि. १६।१५	मि० ५७।५७	रा० २।४७	११।२२।४३।४४	३१।०	५।४८	६।१२	१६	२३	६
९ मं०	५३।२२	,, ३।२३	पुन० ११।३५	,, १०।२६	सु. ४३।५	बा. २१।२६	कर्क	बहो०	११।२३।४२।४६	३१।४	५।४७	६।१३	१७	२४	७
१० बु०	५८।३२	,, १।१२	पु: १७।५७	,, ११।२७	धृ ४४।११	तै. ४।३६	,,	,,	११।२४।४१।४०	३१।७	५।४७	६।१३	१८	२५	८
११ बृ०	६०।००	बहो	श्ले. २३।३५	,, ३।१३	शू. ४४।४६	ब. ३०।३८	क० २३।२८	दि० ३।१३	११।२५।४०।३१	३१।१०	५।४६	६।१४	१९	२६	९
१२ शु०	२।२१	दि ६।४१	म० २८।२३	,, ५।६	ग. ४४।२८	वि. ३।२१	सिंह	बहो०	११।२६।३९।२२	३१।१४	५।४५	६।१५	२०	२७	१०
१३ श०	४।५१	,, ७।४२	पूफा. ३२।३	सा ६।३३	वृ. ४३।१८	बा. ४।५५	सि. ४७।३६	रा० १२।४८	११।२७।३८।१३	३१।१८	५।४४	६।१६	२१	२८	११
१४ र०	६।२२	,, ८।१६	उफा. ३४।२६	रा. ७।३१	ध्रु. ४१।५	तै ६।२२	कन्या	बहो	११।२८।३७।४	३१।२२	५।४४	६।१६	२२	२९	१२
१४ चं०	६।३५	,, ८।२	ह. ३५।३४	,, ७।५६	व्या० ३७।२४	व. ६।३३	,,	,,	११।२९।३५।५३	३१।२६	५।४३	६।१७	२३	३०	१३
१५ मं०	५।२८	,, ७।५२	चि ३५।३०	,, ७।५४	ह० ३३।४३	ब. ५।२४	क० ५।३२	दि० ७।५५	०।०।३४।४३	३१।३०	५।४२	६।१८	२४	१	१४

सृष्ट्यादि: २०४४ सवत्सरारम्भ:, बासन्ती नवरात्रारम्भ:, पञ्चकान्त: रात्री घं. १ मि. ४१ उ. पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि पूर्वभाद्रे बुध: ५।२।२६, द. ति. २८।३६ ☐
चन्द्रदर्शनं मु. ३० फल साम्य, उत्तरां विना यात्रा तृतीयायामश्विन्यां, द. ति २८।६ या रेवत्यां रवि: ३६।८ ॥ ☐उ., नं. २७।४८ उ. ४२।४८ वा ।
अशोलमासारम्भ:, मन्वादि:, श्रीगौरीव्रतं, श्रीगणेश ४ व्रतं, उमामहेश्वर दोलोत्सव:, वक्रीशनि: २।३० ।
पूर्वं यात्रा रोहिण्यां, म. ०।८ उ. ३१।१३ वा ।
मीनावतार:, श्रीरामराज्याभिषेकोत्सव:, पूर्वदक्षिण यात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा ।
बासन्ती सूर्य ६ व्रतं, सायंकालिकार्घदानं, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि ।
प्रात: कालिकार्घदानं पारणञ्च, म. ४३।३७ उ. ।
अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं, दक्षिणपश्चिमयात्रा पुनर्वसावष्टम्यां. ब्रह्मपुत्रस्नानं म. १६।१५ वा ।
श्री रामावतार:, श्रीरामनवमीव्रतं, अयोध्यायां साङ्ग श्री रामदर्शनं, हनुमाद्ध्वजारोपणं, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ =
उत्तरां विना यात्रा पुष्ये; पूर्वभाद्रे शुक्र: २।१४४, उत्तरभाद्रे बुध: २८।२५ । =तत उत्तरां विना यात्रा ।
मं० १२।५८ उ. २७।५८ वा, म. ३०।३८ उ. ।
म. २।२१ या. कामदा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् ।
श्री विष्णु १२. गोघृतेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, उत्तरयात्रापूर्वफल्गुन्यां, पूर्वास्तोबुध: ५१।३० ।
प्रदोष १४ व्रतं, श्री महावीर जयन्ती, रेवत्यां गुरु: ३२।३७, रोहिण्यां कुज: ५२।२५ ।
मासान्त:, म. ६।३५ उ. ३५।५६ या ।
चैत्री १५, स्नानदानादि:, मन्वादि:, अश्विन्यां मेषे च रवि: १०।४ मु० ३० फलं साम्यं, विषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा घं ९ मि० ४० तो दिवा घं ४ मि. ८ वा.

*गुवादित्य समाप्ति:- १०।४, १९०१ शक संवत्सरोत्सव: ।

१२ कुजेवल्ली ८।३६।१३।५५
अयनांशा: २२।१६।१६



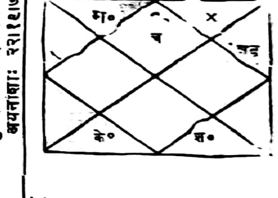
*वृ०रा०बु०

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्**

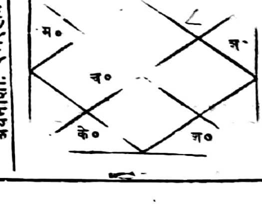
∠ रा०पू०बृ०बु०   × रा०सू०बृ०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सिं.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मीन लं.
१ चं	१।१९।२।५०	१०।१६।५०।३८	११।१३।५७।२५	१०।२।३५।३२	७।२५।५६।२७	५।२०।१६।१५	४५।१६	८।१०	१०।०	१२।१	१४।२७	१६।४४	१८।५६	२१।१६	२३।३३	१।५४	३।३६	५।१०	६।३७
२ मं	१।१९।३९।२५	१०।२२।१८।१६	११।१४।५।१५	१०।१०।४७।५७	७।२५।५६।३०	५।२०।१३।४	४५।१८	८।६	९।५६	१२।७	१४।२३	१६।४०	१८।५५	२१।१२	२३।२९	१।५०	३।३२	५।६	६।३३
३ बु	१।२०।१३।३७	१०।२८।४२।४६	११।१४।१६।२३	१०।१३।०।३४	७।२५।२५।२७	५।२०।१६।५३	४५।२०	८।३	९।५३	१२।२	१४।२०	१६।३७	१८।५२	२१।९	२३।२६	१।३७	३।२६	५।३	६।३०
४ बृ	१।२०।४७।२०	११।२।१६।३६	११।१४।३३।४७	१०।१६।१३।१९	७।२५।५५।२४	५।२०।६।४२	४५।२२	७।५६	९।४९	११।५८	१४।१६	१६।३३	१८।४८	२१।५	२३।२२	१।३३	३।२५	४।५६	६।२६
५ शु	१।२१।२०।५२	११।२५।५०।२६	११।१४।४७।५६	१०।१४।२२।५८	७।२५।५७।१	५।२०।३।११	४५।२४	७।५५	९।४५	११।५४	१४।१२	१६।२६	१८।४४	२१।१	२३।१८	१।२९	३।२१	४।५५	६।२२
६ श	१।२१।५४।१४	११।२७।२।५२	११।१५।२।१३	१०।१५।३८।२६	७।२५।५४।१३	५।२०।०।२०	४५।२६	७।५२	९।४२	११।५१	१४।८	१६।२६	१८।४१	२०।५८	२३।१५	१।२६	३।१८	४।५२	६।१९
७ र	१।२२।२७।२६	११।२८।५।८	११।१५।१६।२५	१०।१६।५९।१२	७।२५।५३।४	५।१६।५७।६	४५।२८	७।४८	९।३८	११।४७	१४।५	१६।२२	१८।३७	२०।५४	२३।११	१।२२	३।१५	४।४८	६।१५
८ चं	१।२२।५९।२९	११।०।३।१५	११।१५।२९।४२	१०।१९।८।३६	७।२५।५३।६	५।१६।५३।५८	४५।३०	७।४४	९।३४	११।४३	१४।१	१६।१८	१८।३३	२०।५०	२३।७	१।१८	३।१०	४।४५	६।११
९ मं	१।२३।३१।२१	११।२।१२।४५	११।१५।४१।२९	१०।१६।२६।१५	७।२५।५२।३५	५।१६।५०।४८	४५।३२	७।४१	९।३१	११।४०	१३।५८	१६।१५	१८।३०	२०।४७	२३।४	१।१५	३।७	४।४१	६।८
१० बु	१।२४।२।५६	११।३।१४।४४	११।१५।५२।३६	१०।२८।२८।४८	७।२५।५१।५	५।१६।४७।३७	४५।३४	७।३७	९।२७	११।३६	१३।५४	१६।११	१८।२६	२०।४३	२३।०	१।११	३।३	४।३७	६।४
११ बृ	१।२४।३४।६	११।५।१३।४२	११।१६।१।४६	१०।२२।४३।२१	७।२५।४९।३५	५।१६।४४।२६	४५।३६	७।३३	९।२३	११।३२	१३।५०	१६।७	१८।२२	२०।३९	२२।५७	१।७	२।५९	४।३३	६।०
१२ शु	१।२५।४।५२	११।७।१।४१	११।१६।१२।२६	१०।२२।५६।२४	७।२५।४८।१६	५।१६।४१।१५	४५।३८	७।३०	९।२०	११।२९	१३।४७	१६।४	१८।१६	२०।३६	२२।५४	१।४	२।५६	४।३०	५।५७
१३ श	१।२५।३५।२०	११।८।११।३६	११।१६।२४।३६	१०।२४।६।२७	७।२५।४६।३७	५।१६।३८।४	४५।४०	७।२६	९।१६	११।२५	१३।४३	१६	१८।१५	२०।३२	२२।५०	१।०	२।५३	४।२६	५।५३
१४ र	१।२६।५।२६	११।१०।४५।३८	११।१६।३१।३६	१०।२५।१८।५५	७।२५।४५।८	५।१६।३४।५३	४५।४२	७।२२	९।१२	११।२१	१३।३६	१५।५६	१८।११	२०।२८	२२।४६	०।५६	२।४८	४।२२	५।४९
१५ चं	१।२६।३५।२६	११।१२।२६।३६	११।१६।३७।२८	१०।२६।२९।२९	७।२५।४३।३६	५।१६।३१।४३	४५।४४	७।१६	९।८	११।१८	१३।३६	१५।५३	१८।८	२०।२५	२२।४३	०।५३	२।४५	४।१६	५।४६
१६ मं	१।२७।५।४८	११।१४।१३।३५	११।१७।२६।३६	१०।२७।४२।१०	७।२५।४२।१०	५।१६।२८।३३	४५।४६	७।१६	९।४	११।१४	१३।३३	१५।५०	१८।५	२०।२२	२२।४०	०।५०	२।४२	४।१६	५।४३

२ कुजेवल्ली ८।३६।१३।४१
अयनांशा: २२।१६।१७



६ कुज पल्ली ८।३६।१२।४८
अयनांशा: २२।१६।१८



अथविविधविषया:-चैत्र शुक्लप्रतिपद: नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सव-स्तव देवीप्रतिमां निर्माय पूजयेत्सप्तशती पाठादिकं च कुर्यात् । चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्र:- त्वमशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव । पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु । एतत्पानफलं लिंगपुराणे-अशोककलिकाश्चाष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ । चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयु: ॥ चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमी-व्रतन्तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्मन्त्र:-दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च । राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च । परित्राणाय साधूनां जातो राम: स्वयं हरि: । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभि: सहितोऽनघ ॥ तत: परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद्ब्राह्मणांश्च भोजयेत् ।

वातावरणम्-पक्षादित: षष्ठीं यावद्धिमवतापयावस्तत: पक्षान्तं यावद्वायुचार खण्डवृष्टि वह्निभयरोगवाधव: ।

ग्रहस्थिति:-मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गीपूर्वोदितो बुध: १२ तो पूर्वास्त:, मार्गी पश्चिमास्तो गुरु:, मार्गी पूर्वोदितश्च शनि: २ तो वक्री ।

वैशाखकृष्णपक्षः

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, वि. १२।४।८७ ह: २८।४।८७ या, दक्षिणे कान: ।
मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, अमूढः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने ।

ति.दि.	तिथयः द.प.	तिथयः घं.मि.	नक्षत्राणि न.	नक्षत्राणि द.प.	नक्षत्राणि घं.मि	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि	दिनांकः रा.	दिनांकः सौ.	दिनांकः अं.
१ बु	३।०	दि ६।५३	स्वा.	३५।१७	रा. ७।४८	व. २८।४१	को ३।०	तुला	अहो०	०।१।३२।१६	३१।३४	५।४१	६।१६	२५	२	१५
३ बृ.	५५।१४	रा ३।४६	वि	३२।१६	,, ६।३४	सि. २२।५३	व. २७।२३	तु १८।१	दि. १२।५२	०।२।३१।५४	३१।३८	५।४०	६।२०	२६	३	१६
४ शु.	५०।१२	रा १।४४	अनु.	२८।२१	द ५।२३	व्य. १६।२३	ब. २२।४३	वृश्चिक	अहो०	०।३।३०।२६	३१।४२	५।४०	६।२०	२७	४	१७
५ श.	४४।२६	,, ११।२८	ज्ये.	२५।४६	,, ३।५८	व. ११।१०	कौ. १७।२४	वृ. २५।४६	दि. ३।५८	०।४।२८।४	३१।४६	५।३६	६।२१	२८	५	१८
६ र.	३८।३९	,, ६।६	मू.	२१।५४	,, २।२४	प ६।५६	ग ११।२८	धनु	अहो	०।५।२७।३९	३१।५०	५।३८	६।२२	२९	६	१९
७ चं	३२।३५	,, ६।३९	पूषा.	१७।४८	,, १२।४४	सि ४६।३६	वि. ५।३७	ध. ३१।४६	रा. ६।१९	०।६।२६।१४	३१।५४	५।३७	६।२३	३०	७	२०
८ मं	२६।३२	दि ४।१२	उषा.	१३।३६	,, ११।५	सा. ३२।१	को २७।८	मकर	अहो०	०।७।२४।४६	३१।५८	५।३६	६।२४	१	८	२१
९ बु	२०।५०	,, १।५६	श्र.	९।४३	,, ९।२९	शु ३१।४०	ग. २०।५०	म० ३७।५९	रा. ८।४८	०।८।२३।१९	३२।२	५।३६	६।२४	२	९	२२
१० बृ	१५।३०	,, ११।४७	ध.	६।१४	.. ८।५	शु० २१।४१	वि. १५।३०	कुम्भ	अहो.	०।९।२१।२९	३२।५	५।३५	६।२५	३	१०	२३
११ शु	१०।५२	,, ९।५५	श.	३।१९	,, ६।५४	ब्र. १८।१५	बा. १०।५२	कु० ४८।४९	दि. ११।३०	०।१०।१९।४९	३२।८	५।३४	६।२५	४	११	२४
१२ श.	७।०	,, ८।५२	पूभा	१।१९	,, ६।६	ऐ. १२।३०	तै. ७।०	मीन	अहो०	०।११।१८।१९	३२।११	५।३४	६।२६	५	१२	२५
१३ र	४।१९	,, ७।१३	उभा.	०।६	,, ५।३५	वै. ७।३५	व ४।१९	,,	,,	०।१२।१६।२८	३२।१४	५।३३	६।२७	६	१३	२६
१४ च	२।३४	,, ६।३५	रे.	०।१	५।३४	वि ०।३१	श २।३४	मीन ०।१	दि. ५।३४	०।१३।१४।४७	३२।१७	५।३३	६।२७	७	१४	२७
३० सं	१।४७	,, ६।१५	अ	१।७	,, ५।५९	प्री. ०।२९	ना. १।४७	मेष	अहो	०।१४।१२।३६	३२।२०	५।३२	६।२८	८	१५	२८

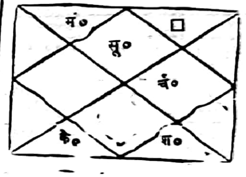
मासादिः, पूर्वोदिता गुरुः ४३।३९, द्वितीयामान ५७।३३ अवम, मु ३० फल साम्यम् ।
पश्चिमोत्तरयात्रा, गृहारम्भो द्विरागमनञ्चानुराधायां तृतीयायां, गृहप्रवेशो मध्यमस्तृतीयामनुराधायां, मीने शुक्रः २७।३५, रेवत्यां बुधः ५।५२, म २७।२३ ह. ५५।१४ या ।
श्री गणेश ४ व्रतं, उत्तरयात्रा दिवारात्रौ ।
ग ११।४९ उ, ३४।४१ या, द. ति. ४८।३६ ह ।
पूर्वोत्तरयात्रा सप्तम्यां, शिवयोगमानं ५२।२२, उत्तरभाद्रे शुक्रः २२।७, द. ति. ३८।४०, म. ३८।४० उ. ।
म. ५।३७ या ।
उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम् ।
पञ्चकारम्भो दि. घ. ९ मि. २९ उ, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे दशम्यां ततः पश्चिमयात्रा, म. ४८।१० उ. ।
पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां, (१०–११) एकोद्दिष्टम्, अश्विन्यां मेषे च बुधः २०।२०, म. १५।३० या ।
वरूथिनी ११ व्रत सर्वेषाम् ।
कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे ।
प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा रेवत्यां त्रयोदश्यां, गं ४८।१३, म. ४।९ उ. ३०।५१ या ।
पञ्चकान्तो दि. घं. ५ मि २३ उ, वैशाखी ३०, पार्वणं, भरण्यां रविः ५१।३१; गं ३।१ या ।
आयुष्मानमानं ५७।५७ वैशाखी ३०, स्नानदानादिः ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

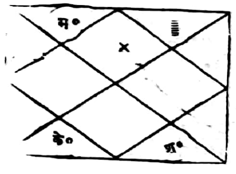
× सू.चं.बु. ||||| शु वृ रा. — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम — □ बु० वृ० शु० रा०

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ बु.	११।११।१५।४४	११।१६।३।२४	११।१७।४०।५४	१०।२८।५७।२	७।२५।४०।५	५।१६।२५।२२	४५।४८	७।१२	६।२	११।११	१३।२९	१५।४९	१८।१	२०।१८	२२।३६	०।४९	२।२८	४।१२	५।३९
३ बृ.	११।१९।५५।४४	११।१७।५३।१३	११।१७।५५।१९	११।०।१०।१	७।२५।३८।१	५।१६।२२।११	४५।५०	७।८	८।५८	११।७	१३।२	१५।४२	१७।५७	२०।१४	२२।३२	०।४१	२।३४	४।८	५।३५
४ शु.	११।२१।३५।४५	११।१८।४३।२	११।१८।९।२४	११।११।२२।५६	७।२५।३५।५६	५।१६।१६।०	४५।५२	७।५	८।५५	११।४	१३।२२	१५।३९	१७।५४	२०।११	२२।२९	०।३९	२।३१	४।५	५।३२
५ श.	११।३।१५।४५	११।२१।३३।५२	११।१८।२३।२६	११।२।३५।५८	७।२५।३३।५१	५।१६।१५।४९	४५।५४	७।१	८।५१	११।००	१३।१८	१५।३५	१७।५०	२०।७	२२।२५	०।३५	२।२७	४।१	५।२८
६ र.	११।३।५५।४६	११।२३।२२।४१	११।१८।३७।५५	११।३।४८।५६	७।२५।३१।४६	५।१६।१२।३८	४५।५६	६।५७	८।४७	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।४६	२०।३	२२।२१	०।३१	२।२३	३।५७	५।२४
७ चं	११।४।३५।४६	११।२५।१२।३०	११।१८।५२।१९	११।५।१।५५	७।२५।२९।४२	५।१६।६।२८	४५।५८	६।५४	८।४४	१०।५३	१३।११	१५।२८	१७।४३	२०।०	२२।१८	०।२८	२।२०	३।५४	५।२१
८ मं.	११।५।१५।४७	११।२७।२।१९	११।१९।६।२४	११।६।१४।५३	७।२५।२७।३७	५।१६।६।१८	४६।०	६।५०	८।४०	१०।४९	१३।७	१५।२४	१७।३९	१९।५६	२२।१४	०।२४	२।१६	३।५०	५।१७
९ बु	११।६।३५।४५	११।२८।५५।२५	११।१९।२०।४५	११।७।२६।५	७।२५।२५।५४	५।१६।३।७	४६।१	६।४६	८।३६	१०।४५	१३।३	१५।२०	१७।३५	१९।५२	२२।१०	०।२०	२।१२	३।४६	५।१३
१० बृ.	११।७।१५।४२	०।०।४८।३०	११।१९।३५।७	११।८।३२।१९	७।२५।२२।२२	५।१५।५९।५६	४६।२	६।४३	८।३३	१०।४२	१३।०	१५।१७	१७।३२	१९।४९	२२।७	०।१७	२।१६	३।४३	५।१०
११ शु.	११।७।५५।४१	०।१।४१।३९	११।१९।४९।२८	११।९।२७।२८	७।२५।१९।२८	५।१५।५६।४५	४६।४	६।३९	८।२९	१०।३८	१२।५६	१५।१३	१७।२८	१९।४५	२२।३	०।१३	२।१५	३।३९	५।६
१२ श.	११।८।३५।३६	०।४।२४।४२	११।२०।३।५०	११।१०।३९।३६	७।२५।१६।४७	५।१५।५३।३४	४६।५	६।३५	८।२५	१०।३४	१२।५२	१५।९	१७।२४	१९।४१	२१।५९	०।९	२।११	३।३५	५।२
१३ र.	११।९।१५।३७	०।६।२७।४८	११।२०।१८।११	११।११।३५।५१	७।२५।१४।४	५।१५।५०।२३	४६।७	६।३२	८।२२	१०।३१	१२।४९	१५।६	१७।२१	१९।३८	२१।५६	०।६	१।५८	३।३२	४।५९
१४ च.	११।९।५५।३५	०।८।२०।५३	११।२०।३२।३३	११।१२।४०।२	७।२५।११।२२	५।१५।४७।१३	४६।८	६।२८	८।१८	१०।२७	१२।४५	१५।२	१७।१७	१९।३४	२१।५२	०।२	१।५४	३।२८	४।५५
३० म.	११।१०।३५।३३	०।१०।१३।५६	११।२०।४६।५४	११।१३।४५।१४	७।२५।८।३२	५।१५।४४।२	४६।१०	६।२४	८।१४	१०।२३	१२।४१	१४।५८	१७।१३	१९।३०	२१।४८	२३।५८	१।५०	३।२४	४।५१

८ कुजवल्ली ८।३६।१२।८।२ अयनांशाः २३।१६।१०



०८ कुजवल्ली ८।३६।१२।३।३६ अयनांशाः २३।१६।११



अथ विविधविषयाः—वैशाखे प्रातः स्नानमन्त्रः—वैशाखे सकलं मास मेष सङ्क्रमणे रवेः प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन । मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् निर्विघ्नमस्तु मे पुण्य वैशाखस्नानमन्वहम् । माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन । प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहम् । प्रातः स्नानं चमत्कारं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम् । सवितर्युदिते भूप ततो हीन प्रकीर्तितम् । वैशाखे त्याज्यवस्तून-कांस्य मांस मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा । शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुनं । वैशाखे दानवस्तूनि स्कान्दे-प्रपाकार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका । उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनं जलपात्राणि देयानि तथानूपग्रहाणि च । तिथितत्वे-ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान् । पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते । मासविशेषे नदी विशेषस्नानम्—कौशिकी माधवे स्नायान्मासे वै कमलान्तथा । दुग्धा बिल्वपत्री मार्ग-कार्तिके यामुनी तथा । भूपसी... चैत्रमाश्विने फलदा मता । इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्म... वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिकी मलमासे विशे... फलदायिनी । गंगा तु सर्वदेति ।

वातावरणम्—पक्षादितः षष्ठीं यावद्वह्निभयमेघचारादयस्ततः यावन्मेघचारवायुखण्डवृष्टयः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ... दितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितश्चशनिः ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
१ बु०	२।३०	दि० ६।३१	म० ३।३३	दि ६।५६	सौ० ५७।२८	व० २।३०	मे० १६।२८	दि० २।१८	० ।१५।११।११	३२।२३	५।३२	६।२८	९	१६	२९
२ बृ०	४।३४	,, ७।२१	कृ ७।१३	रा. ८।२४	शो ५७।१३	को. ४।३४	वृष	अहो०	० ।१६।९।१६	३२।२६	५।३१	६।२९	१०	१७	३०
३ शु०	७।४३	,, ८।३५	रो. ११।५९	,, १०।१८	अगं. ६०।०	ग. ७।४३	वृ० ४४।५२	रा० ११।२७	० ।१७।७।२१	३२।२९	५।३०	६।३०	११	१८	१
४ श०	११।५३	,, १०।१४	मृ. १७।४२	,, १२।३४	अगं. ०।४	वि. ११।५३	मिथुन	अहो०	० ।१८।५।२६	३२।३२	५।३०	६।३०	१२	१९	२
५ र०	१६।४५	,, १२।११	आ० २४।१	,, ३।५	सु ६०।०	बा० १६।४५	,,	,,	० ।१९।३।३१	३२।३५	५।२९	६।३१	१३	२०	३
६ चं०	२१।५४	,, २।१४	पुन० ३०।३६	रा० ५।४२	सु. ०।२५	तै० २१।५४	मि० १६।५७	दि० १२।१५	० ।२०।१।३६	३२।३८	५।२८	६।३२	१४	२१	४
७ मं०	२६।५९	,, ४।१६	पु ३७।१	,, ८।१६	शू. २।१२	व. २६।५९	कर्क	अहो०	० ।२०।५९।४०	३२।४२	५।२८	६।३२	१५	२२	५
८ बु०	३१।२८	,, ६।२	श्ले. ४२।५४	,, १०।३७	गं. ३।७	ब. ३१।२८	क० ४२।५४	रा० १०।२७	० ।२१।५७।३३	३२।४६	५।२७	६।३३	१६	२३	६
९ बृ०	३५।११	रा ७।३०	म० ४७।५९	,, १२।३५	वृ. ४।२३	बा. ३।१९	सिंह	अहो०	० ।२२।५५।२६	३२।४९	५।२६	६।३४	१७	२४	७
१० शु०	३७।४२	,, ८।३१	पूफा. ५१।४४	, २।८	ध्रु. ४।१३	तै. ६।२६	,,	,,	० ।२३।५३।१८	३२।५२	५।२६	६।३४	१८	२५	८
११ श०	३९।५	,, ९।३	उफा. ५४।२५	,, ३।१	व्या. ३।१९	व. ६।४६	सि० ७।२४	दि० ८।२३	० ।२४।५१।१२	३२।५५	५।२५	६।३५	१९	२६	९
१२ र०	३९।७	दि ९।४	ह० ५५।३८	,, ३।४३	ह. १।२३	व. ६।६	कन्या	अहो०	० ।२५।४९।४	३२।५८	५।२४	६।३६	२०	२७	१०
१३ चं०	३७।५५	,, ८।२४	चि. ५५।५८	,, ३।४७	सि ५४।३५	को. ८।३१	क० २५।५३	दि० ३।४५	० ।२६।४६।५६	३३।१	५।२४	६।३६	२१	२८	११
१४ मं०	३५।३०	,, ७।३५	स्वा० ५४।५६	, ३।२३	व्य. ४६।४८	ग. ६।४२	तुला	अहो	० ।२७।४४।४९	३३।४	५।२३	६।३७	२२	२९	१२
१५ बु०	३१।५९	, ६।१०	वि ५३।७	, २।३७	व० ४४।१२	वि ३।४८	तु० ३८।३५	रा० ८।४८	० ।२८।४२।२८	३३।[illegible]	५।२२	६।३८	२३	३०	१३

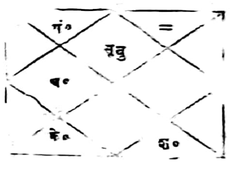
वैशाखशुक्लपक्षः संवत् २०४४, शक: १९०९, सन् १३६४ साल, दि० २२।४।८७ त: ११।५।८७ ता, दक्षिणे काल: ।
मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, अस्तोदितः २ तो बुधः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने ।

चन्द्र दर्शनं मु० ३० फलं साम्यम् ।
पुष्टोगुरू: शुद्धारम्भश्च ४३।४०, वापी कूप तडागादि खननं देवादि प्रतिष्ठा च रोहिण्यां, निर्वेध विवाहः ०३।४० उ०, द्विरागमनं पूर्वयात्रा च रोहिण्यां, रेवत्यां ✱
मई । मासारम्भः, त्रेता युगादिः, अक्षय ३, परशुरामावतारः देवादि प्रतिष्ठा निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च रोहिण्यां, पूर्वदक्षिण यात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा
सुकर्मायोगमानं ५६।००, पूर्वां विना यात्रा चतुर्थ्यां, मृगशिरसि कुजः ५५।४०, म० ११।५३ उ० ४३।१२ या । ✱ शुक्रः २१।२५, भरण्यां बुधः ३४।३५ ।
श्रीशंकराचार्य जयन्ती, उपनयनं पञ्चम्यां, दर्श ति १६।३६ ष० ।
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, गृह प्रवेशः सप्तम्यां, द० ति० २१।५४ ।
जाह्नवी सप्तमी, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, म० ५६।१३ या ।
मं० ३१।४ उ० ४६।५४ या ।
श्री जानकी ९, तत्प्रादुर्भाव स्थाने सीतामढ्यां श्रीजानकी दर्शनं, निर्वेध विवाहो दशम्यां मघायां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ,
केतुगुरुवेधाद्विवाहो होमध्यम उत्तरफल्गुन्यां, गृहारम्भप्रवेशौ द्विरागमनञ्चोत्तरफल्गुन्यां, उपनयन, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषां, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, गृहप्रवेशो दिवारात्रौ, गृहारम्भ उत्तरफल्गुन्यां. दक्षिण यात्रा हस्ते, वृषेबुधः १७।४१; म० ६।४६ उ० ३१।५ या० ।
वज्रयोगमानं ४७।६, षण्मासिक रविव्रतान्तः, मधु सुदन १२, कुशोदकेन पारण, निर्वेधविवाहो द्विरागमन पूर्व दक्षिण यात्रा च दिवारात्रौ, देवादि प्रतिष्ठा, ×
प्रदोष १३ व्रतं, निर्वेध विवाहो द्विरागमनं गृहारम्भ प्रवेशौ देवादि प्रतिष्ठां तडागवापी खननञ्च त्रयोदश्यां, मुण्डन, दक्षिण यात्रा कन्यस्थे चन्द्रे ततः पश्चिम दक्षिण
श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत, नृसिंहावतार. पश्चिम दक्षिण यात्रा स्वात्यां, म० ५।३ उ० । यात्रा त्रयोदश्यां, कृतकार्यां रविः ३६।२२, अश्विन्यां मेषचशुक्रः १७ ५९ ।
वैशाखा १५, कूर्मावतार , बुद्धजयन्ती, निर्वेधविवाहो द्विरागमनं पश्चिम यात्रा चानुराधायां, मिथुने कुजः ३।१०, म० ३।४४ या । × प्रदोषत्वादुपनयनं नैव ।

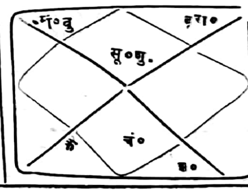
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं प्रतिम्ब — दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् =बृ०शु०रा०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.लं.	वृ.लं.	मि.लं.	क.लं.	सि.लं.	क.लं.	तु.लं.	वृ.लं.	ध.लं.	म.लं.	कु.लं.	मीन लं.
१ बु.	१ ।२१।१३।१७	० ।१२।७ ।२५	११।२१।११।१२	११।१४।५७।११	७।२४।४।२१	५।१८।४०।५२	४६।१२	६।२१	८।११	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१०	१९।२७	२१।४५	२३।४५	१।४७	३।२१	४।४८
२ बृ.	१ ।२१।५४।४१	० ।१४।० ।५०	११।२१।१५।३०	११।१७।१०।८	७।२४।२।२	५।१८।३७।४१	४६।१३	६।१७	८।७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।६	१९।२३	२१।४१	२३।४१	१।४३	३।१७	४।४४
३ शु०	१ ।२२।३४।१५	० ।१५।५४।१५	११।२१।२६।४७	११।१९।८।२३५	७।२४।५८।४३	५।१८।३४।२०	४६।१५	६।१३	८।३	१०।१२	१२।३१	१४।४७	१७।३	१९।१९	२१।३७	२३।४७	१।३९	३।१३	४।४०
४ श०	१ ।२३।१३।४८	० ।१७।४७।४	११।२१।४४।४	११।२२।३६।२	७।२४।५५।२४	५।१८।३१।१९	४६।१७	६।१०	८।०	१०।८	१२।२७	१४।४४	१६।५९	१९।१६	२१।३४	२३।४४	१।३५	३।१०	४।३७
५ र०	१ ।२३।५३।२३	० ।१९।४१।५	११।२१।५८।११	११।२४।४८।५८	७।२४।५२।५	५।१८।२८।८	४६।१८	६।६	७।५६	१०।५	१२।२३	१४।४०	१६।५५	१९।१२	२१।३०	२३।४०	१।३२	३।६	४।३३
६ चं०	१ ।२४।३२।५७	० ।२१।३४।३०	११।२२।१२।३८	११।२७।११।५	७।२४।४८।४६	५।१८।२४।५८	४६।२०	६।२	७।५२	१०।१	१२।१९	१४।३६	१६।५१	१९।८	२१।२६	२३।३६	१।२८	३।२	४।२९
७ मं०	१ ।२५।१२।३१	० ।२३।२७।५५	११।२२।२६।५५	११।२९।३४।५१	७।२४।४५।२७	५।१८।२१।४८	४६।२१	५।५९	७।४९	९।५८	१२।१६	१४।३३	१६।४८	१९।४	२१।२३	२३।३३	१।२५	२।५६	४।२६
८ बु०	१ ।२५।५२।८	० ।२५।१९।१७	११।२२।४१।१९	[illegible]	७।२४।४१।१२	५।१९।१८।३७	४६।२२	५।५५	७।४५	९।५४	१२।१२	१४।२९	१६।४४	१९।१	२१।१९	२३।२९	१।२१	२।५५	४।२२
[illegible]	१ ।२६।३१।४५	० ।२७।१०।३९	११।२२।५४।४२	११।२५।४७।५७	७।२४।३७।५१	५।१८।१५।२६	४६।२४	५।५१	७।४१	९।५०	१२।८	१४।२५	१६।४०	१८।५७	२१।१५	२३।२७	१।१७	२।५१	४।१८
[illegible]	१ ।२७।११।२२	० ।२९।२।११	११।२३।८।२५	११।२६।५९।३०	७।२४।३४।३	५।१८।१२।५	४६।२५	५।४८	७।३८	९।४७	१२।५	१४।२२	१६।३७	१८।५४	२१।१२	२३।२४	१।१४	२।४८	४।१५
[illegible]	१ ।२७।५०।५६	१ ।०।५३।२३	११।२३।२२।२८	११।२८।११।३	७।२४।३०।२५	५।१८।९।१४	४६।२७	५।४४	७।३४	९।४३	१२।१	१४।१८	१६।३३	१८।५०	२१।८	२३।१८	१।१०	२।४४	४।११
[illegible]	१ ।२८।३०।३६	१ ।२।४४।४५	११।२३।३६।२१	११।२९।२४।३६	७।२४।२६।५७	५।१८।५।५३	४६।२८	५।४०	७।३०	९।३९	११।५७	१४।१४	१६।२९	१८।४६	२१।४	२३।१४	१।६	२।४०	४।७
[illegible]	१ ।२९।१०।३०	१ ।४।३६।६	११।२३।५०।२४	०।०।३४।१३	७।२४।२२।३९	५।१८।२।४३	४६।३०	५।३७	७।२७	९।३५	११।५४	१४।११	१६।२६	१८।४३	२१।१	२३।११	१।३	२।३७	४।४
[illegible]	१ ।२९।४९।४९	१ ।६।२७।२७	११।२४।४।१७	०।१।४५।४०	७।२४।१८।५०	५।१७।५९।३३	४६।३२	५।३३	७।२३	९।३२	११।५०	१४।७	१६।२२	१८।३९	२०।५७	२३।७	०।५९	२।३३	४।०
[illegible]	[illegible]	१ ।८।१३।३०	११।२४।१७।३१	०।२।५८।४७	७।२४।१४।३८	५।१७।५६।२२	४६।३३	५।२९	७।१९	९।२८	११।४६	१४।३	१६।१८	१८।३५	२०।५३	२३।३	०।५५	२।२९	३।५६

७ कुजे वल्ली ८।३६।१४।२६ अयनांशा: २३।१६।१.२



१४ कुजे वल्ली ८।३६।१४।२३ अयनांशा: २३।१६।१३



अथ विविधविषया: —वैशाखशुक्लतृतीयायां परशुरामायार्घ्यदानमन्त्रः— जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर: प्रभो: । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर । वैशाखशुक्लनवम्यां जानकी प्रादुर्भाव:– वैशाखस्य सितेपक्षे नवम्यां सोमवासरे । प्रादुर्भूवलोकानां हिताय जनकात्मजा । मूलवास: स्वर्गे शुचिप्रोष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे । मूलं ह्यधस्तात् तपस्यमार्गे वैशाखशुक्लेष्वशुभं च तत्र । अभुक्तमूल विचारः- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः । रेवतीसार्पशक्रान्ते मासरूद्ररसाः क्रमात् । तस्मादेषूत्पन्नानां शान्ति: कार्या । मूलोत्पन्नानां विशेषेण यतो हि मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजं मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयकः । सा शान्ति जामानन्तरम्प्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या । मूलवृक्षविचारः- मूल स्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्प फलं शिखा । मुनयोऽष्टौ दिश रुद्रा: सूर्या पञ्चाग्नयोऽनयः । मूले मूल विनाश: स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम् ।

वातावरणम्:-पक्षादितश्चतुर्थी यावद्वाह्निभयतापवायुमेघवारादयस्ततोद्वादशीं यावन्मेघच्छायावायुखण्डवृष्टयस्तत: पक्षान्तं यावत्तापवायुवह्निभयादयः ।
ग्रहस्थितिः—मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रा:, मार्गीपूर्वास्तोबुधः, वक्री पूर्वोदितः शनि: ।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः	संवत् २०७४,शका १९०६, सन् १३१४ साल,वि.१४।४।८७ त: २७।४।८७ या, दक्षिणे कालः । मार्गिणो पूर्वोदितो गुरुशुक्रौ, बुधः, वसन्तर्तुः, २ तः ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने ।	३१

ति.दि.	तिथयः द.प.	तिथयः घं.मि	नक्षत्राणि न.	नक्षत्राणि द.प.	नक्षत्राणि घं.मि	योगाः द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान द.प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनांकः रा.	सौ.	अं.
१ बृ.	२७।३५	दि ४।२४	अनु.	३०।५२	रा. १।२१	प. ३७।५५	को. २७।३५	वृश्चिक	अहो०	०।२६।४०।७	३३।११	५।२२	६।३८	२४	२१	१४
२ शु.	२२।२६	,, २।२१	ज्ये.	४७।०	,, १२।६	शि. ३१।२	ग २२।२६	बृ. ४७।०	रा. १२।६	१।० ।३।७।४६	३३।१४	५।२१	६।३६	२५	१	१५
३ श.	१६।५२	,, १२।३६	मू	४२।८	. १० ३६	सि २३।४७	वि. १६।५२	धनु	अहो०	१।१ ।३५।२४	३३।१७	५।२१	६।३६	२६	२	१६
४ र.	१०।४६	,, ६।४०	पूषा.	३६।८	,, ८।५६	सा. १६।१६	वा. १०।४६	,,		१।२ ।३३।२	३३।२०	५।२०	६।४०	२७	३	१७
५ सं	४।४०	,, ७।११	उषा.	३४।५२	,, ७।१६	शु. ८।३५	तै ४।४०	ध. २०।५२	दि. १।४०	१।३ ।३०।५०	३३।२३	५।१६	६।४१	२८	४	१८
७ मं	५९।४५	रा २।२५	श्र.	३०।५३	दि ५।४०	शु ११२	वि. २५।३६	मकर	अहो	१।४ ।२८।१८	३३।२६	५।१६	६।४१	२६	५	१६
८ बु	४७।२१	, १२।४	ध.	२७।१५	,, ४।१२	ऐं. ४६।३६	वा. २०।३	म० ५६।४	रा ७।५६	१।५ ।२५।४६	३३।२८	५।१८	६ ४२	३०	६	२०
६ बृ	४२।३४	,, १०।२०	.	२४।१३	,, २।५६	वै. ४०।६	तै. १४।५७	कुम्भ	अहो०	१।६ ।२३।१४	३३।३०	५।१८	६।४२	३१	७	२१
१० शु	३८।४६	,, ८।५०	पूभा	२१।१	.. १।४२	वि. ३४।२०	व. १०।४१	कु० ६।४६	दि. ८।२	१।७ ।२०।४२	३३।३२	५।१७	६।४३	१	८	२२
११ श.	३५।४०	,, ७।३३	उभा.	२०।३३	,, १।३०	प्री. २६।२७	ब. ७।१४	मीन	अहो.	१।८।१८।१०	३३।३४	५।१७	६।४३	२	६	२३
१२ र.	३३।४६	,, ६।४६	रे.	२०।१४	,. १।२३	आ २५।५५	को ४।५८	मी० २०।१४	दि. १।२३	१।६।१५।३७	३३।३६	५।१७	६।४३	३	१०	२४
१३ चं	३३।८	सा ६।३१	अ	२१।७	,, १।४३	सौ.२१।५४	ग ३।२८	मेष	अहो०	१।१०।१३।४	३३।३८	५।१६	६।४४	४	११	२५
१४ मं.	३३।४८	रा ६।४७	भ.	२३।१४	', २।३४	शो. १६।४२	वि. ३।२८	मे० ३६।५	दि. ८।५४	१।११।१०।३१	३३।४०	५।१६	६।४४	५	१२	२६
३० बु	३५।४२	,, ७।३३	कृ	२६।४०	,, ३।५६	अगं. १८।३४	च. ४।४६	वृष	अहो	१।१२।७।५६	३३।४२	५।१६	६।४४	६	१३	२७

मासान्त., रोहिण्यां बुधः-४७।२॥

वृषरविः ७।३५ मु० १५, फलं महर्घं, विष्णुपदीसंक्रान्ति पुण्यकालो दिवा घं ११ मि० ३५ या, गं० ४१।०उ० ५६।० या, म० ४६।४१ उ० ।

मासादिः, श्रीगणेश ४ व्रत द. ति. १६।५२ उ०, (३-४) एकोदिष्टम् ।

कुजवारादुत्तराषाढे विवाहानेव, पूर्वोत्तर यात्रा पञ्चम्या पूर्वाषाढे, द० ति० १०।४६ या ।

षष्ठीमानं ५३।५३ अवम, निर्बोधविवाहः पूर्वा विना यात्रा च श्रवणायां, म० ५८।३३ उ० ।

ब्रह्मयाममान ५२।३७, पञ्चकारम्भो दिवा घं ५ मि० ४० उ०, उत्तरां, विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वं यात्रा, म० २५।३६ या ।

निर्बोध विवाहो धनिष्ठायाम ।

पश्चिमयात्रा दशम्याम् ।

उत्तरयात्रा मीनस्थे चन्द्रे पूर्वभाद्रे पश्चिमोदितो बुधः ५।४०, मृगशिरसि बुधः ३५।१०, भरण्यां शुक्रः १६।२६, उपग्रह केतुवेधाद्विवाहोमध्यम उत्तरभाद्रे, ☐

अपरा ११ व्रता सर्वेषां, पश्चिमोत्तर यात्रा रेवत्यां, आद्रायां कुजः ११।२० । ☐म. २०।४१ उ० ३८।४६ या ।

प्रदोष १३ व्रत, तिलेन पारण, निर्बोध विवाहो दिवारात्रौ, पञ्चकान्तो दिवा घं १ मि० २३ उ०, पूर्वोत्तरयात्रारेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्राऽश्विन्यां, गं० ८।१५x

निर्बोध विवाहाऽश्विन्यां, पूर्वां विना यात्रा च, प्रदोष १४ व्रतं, रोहिण्यां रविः ३६।१२, म० ३२।५८ उ० x उ० २३।१४ या ।

मिथुनेबुधः ४३।१०, म० ३।२८ या ।

ज्येष्ठा ३०, वटसाविर्त्रीव्रतं, निर्बोधविवाहः पूर्वदाक्षिण यात्रा च प्रतिपदि ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च.

ति.दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बृ.	२।११।८।४५	१।१६।५६।१३	११।२४।३०।५५	०।४।११।५३	७ ।२४।१०।२६	५ ।१७।५३।११
२ शु.	२।११।४८।१३	१।११।४५।६	११।२४।४४।१६	०।५।२४।५६	७ ।२४।६।१४	५ ।१७।५०।०
३ श.	२।१२।२८।४१	१।१३।३०।५८	११।२४।५७।४३	०।६।३८।५	७ ।२४।२।२	५ ।१७।४६।४६
४ र.	२।१३।७।६	१।१५।१६।५०	११।२५।११।७	०।७।५१।११	७ ।२३।५७।५०	५ ।१७।४३।३८
५ चं.	२।१३।४६।३७	१।१७।२।४२	११।२५।२४।३१	०।६।४।१७	७ ।२३।५३।३६	५ ।१७।४०।२७
७ मं	२।१४।२६।४	१।१८।४८।३४	११।२५।३७।५५	०।१०।१७।२२	७ ।२३।४६।२८	५ ।१७।३७।१७
८ बु.	२।१५।५।१६	१।२०।२५।१७	११।२५।५१।३	०।११।३०।२४	७ ।२३।४५।४२	५ ।१७।३४।६
६ बृ.	२।१५।४४।२८	१।२२।२।०	११।२६।४।११	०।१२।४३।४५	७ ।२३।४१।१६	५ ।१७।३०।५५
१० शु.	२।१६।२३।४०	१।२३।३८।४३	११।२६।१७।१६	०।१३।५६।५६	७ ।२३।३२।४०	५ ।१७।२७।४४
११ श.	२।१७।२।५२	१।२५।१५।२६	११।२६।३०।२७	०।१५।१०।७	७ ।२३।२७।४	५ ।१७।२४।३३
१२ र.	२।१७।४२।४	१।२६।५२।८	११।२६।४३।३५	०।१६।२३।१८	७ ।२३।२१।२८	५ ।१७।२१।२२
१३ च.	२।१८।२१।१६	१।२८। २८।५०	११।२६।५६।४२	०।१७।३६।२६	७ ।२३।१५।५२	५ ।१७।१८।१२
१४ मं.	२।१६।०।२८	२।०।५।३२	११।२७।६।४६	०।१८।४६।३६	७ ।२३।१०।१७	५ ।१७।१५।२
३० बु.	२।१६।३६।४०	२।१।२६।४८	११।२७।२२।२६	०।२०।२।५०	७ ।२३।६।४१	५ ।१७।११।५१

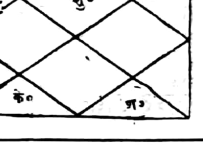
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

ति.दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	बृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ बृ.	४६।३५	५।२५	७।१५	६।२४	११।४२	१३।५६	१६।१४	१८।३१	२०।४६	२२।५६	० ।५१	२ ।२५	४।५२
२ शु.	४६।३६	५।२२	७।१२	६।२१	११।३६	१३।५६	१६।११	१८।२८	२०।४६	२२।५६	० ।४८	२ ।२२	४।४६
३ श.	४६।३८	५।१८	७।८	६।१७	११।३५	१३।५२	१६।७	१८।२४	२०।४२	२२।५२	।४४	२ ।१८	४।४५
४ र.	४६।३६	५।१४	७।४	६।१३	११।३१	१३।४८	१६।३	१८।२०	२०।३८	२२।४८	० ।४०	२ ।१४	४।४१
५ चं.	४६।४१	५।१०	७।०	६।६	११।२७	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।४४	० ।३६	२ ।१०	४।३७
७ मं	४६।४३	५।६	६।५६	६।५	११।२३	१३।४०	१५।५५	१८।१२	२०।३०	२२।४०	० ।३२	२ । ६	४।३३
८ बु.	४६।४४	५।२	६।५२	६।१	११।१६	१३।३६	१५।५१	१८।८	२०।२६	२२।३६	० ।२८	२ । २	४।२६
६ बृ.	४६।४५	४।५६	६।४६	८।५८	११।१६	१३।३३	१५।४८	१८।५	२०।२३	२२।३३	० ।२५	१ ।५६	४।२६
१० शु.	४६।४६	४।५५	६।४५	८।५४	११।१२	१३।२६	१५।४४	[illegible]	२०।१६	२२।२६	० ।२१	१ ।५५	४।२२
११ श.	४६।४७	४।५१	६।४१	८।५०	११।८	१३।२५	१५।४०	१७।५७	२०।१५	२२।२५	० ।१७	१ ।५१	४।१८
१२ र.	४६।४८	४।४७	६।३७	८।४६	११।४	१३।२१	१५।३६	१७।५३	२०।११	२२।२१	० ।१३	१ ।४७	४।१४
१३ च.	४६।४६	४।४३	६।३३	८।४२	११।०	१३।१७	१५।३२	१७।४६	२०।७	२२।१७	० । ६	१ ।४३	४।१०
१४ मं.	४६।५०	४।३६	६।२६	८।३८	१०।५६	१३।१३	१५।२८	१७।४५	२०।३	२२।१३	० । ५	१ ।३६	४।६
३० बु.	४६।५१	४।३५	६।२५	८।३४	१०।५२	१३।१०	१५।२५	१७।४२	२०।०	२२।१०	० । २	१ ।३६	४।३

७ कुजेवल्ली ८।३६।१४।२० अयनांशाः २४।११।१४



१४ कुजेवल्ली ८।३६।१४।३७ अयनांशाः २४।११।१५



अथ विविध विषया.-अमायां वटसाविर्त्रीव्रतम्-आमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती । त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत् सावित्रीं प्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृण्मयीम् । सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीं प्रतिमां शुभाम् । सादवसत्यवतां साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः । सावित्र्या-ख्यानकचापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं संपूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्तन्मन्त्रः-सावित्रीय मया दत्ता सहिरण्या महामतो । ब्राह्मणयीणना-र्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम । अथ कतिचिन्नियमाः समित्पुष्प कुशादीनि बहूतो नाभिवादयेत । समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत । शूद्रा-नीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः । अथ सन्तानप्रद सन्तानगोपालमन्त्र। देवकीसुत ! गोविन्द ! वासुदेव ! जगत्पते देहिमे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणगतः । इति मन्त्रस्य सपादै लक्षसंख्यक जपहितलपाय[illegible] दृंशागंमार्जनं तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कार्यम् ।

वातावरणम् पक्षादितस्तृतीयां यावत्तापाभ्रच्छायावायवस्[illegible] याव द्वायुखण्डवृष्टिमेघचारतापादयंस्ततः पक्षान्तं यावत्तापाभ्र

ग्रहस्थितिः-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः मार्गी पूर्वास्तं पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प.	घं.मि	योगा: द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घ.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि	सू.अ. घं.मि.	विवाहाङ्का: रा.	सौ.	अं.
१ बृ०	१८।४५	रा० ८।४५	रो० ३१।१२	दि ५।४४	सु० १८।१६	कि० ७।१५	वृष	अहो०	१ ।१३।५ ।२१	३३।४३	५।१५	६।४५	७	१४	२८
२ शु०	४२।५०	,, १०।२३	मृ २६।४३	रा. ७।५६	धृ. १८।५२	बा. १०।४७	वृ० ३ ।५८	दि० ६।५०	१ ।१४।२ ।४६	३३।४५	५।१५	६।४५	[illegible]	१५	२९
३ श०	४७।३५	,, १२।१७	आ. ४२।५५	,, १०।२५	. २०।१२	तै. १५।१२	मिथुन	अहो०	१ ।१४।५६।११	३३।४६	५।१५	६।४५	९	१६	३०
४ र.	५२।३८	,, २।१८	पुन. ४८।२६	,, १।२	ग. २१।२६	व. २०। ७	मि० ३२।५३	दि० ६।२३	१ ।१५।५६।२६	३३।४८	५।१४	६।४६	१०	१७	३१
५ चं०	५७।३६	,, ४।१६	पु० ५६। ०	,, ३।३८	वृ २३।१६	बा० २२।४३	कर्क	अहो०	१ ।१६।५४।०	३३।४९	५।१४	६।४६	११	१८	१
६ मं०	६०। ०	अहो	श्ले० ६०।०	अहो.	ध्रु. २४।४२	कौ० २६।५०	,,	,,	१ ।१७।५२।२४	३३।५०	५।१४	६।४६	१२	१९	२
६ बु०	२।५	दि ६।४	श्ले. १।५८	दि ६।१	व्या. २५।२८	तै. २।५	क० ११	दि० ६।१	१ ।१८।४८।३३	३३।५२	५।१४	६।४६	१३	२०	३
७ बृ०	५।४४	,, ७।३१	म. ७।१०	,, ८।५	ह. २५।४८	व. ५।४४	सिंह	अहो०	१ ।१९।४५।४२	३३।५३	५।१३	६।४७	१४	२१	४
८ शु०	८।१२	,, ८।३०	पूफा० ११।१६	,, ६।४३	व. २५।१९	ब. ८।१२	सि० २७।०	दि० ४ ।१	१ ।२०।४२।५१	३३।५४	५।१३	६।४७	१५	२२	५
९ श०	९।३५	,, ९।३	उफा. १४।१३	,, १०।५४	सि. २३।२८	कौ. ९।३५	कन्या	अहो०	१ ।२१।३९।५९	३३।५५	५।१३	६।४७	१६	२३	६
१० र०	९।३५	,, ९।३	ह. १५।५३	,, ११।३४	व्य. २०।४८	ग. ९।३५	क० ४६।६	रा० ११।३६	१ ।२२।३७।७	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२४	७
११ च०	८।२१	दि ८ ।३३	चि० १६।२०	,, ११।४५	व. १७।[illegible]	वि. ८।२१	तुला	अहो०	१ ।२३।३४।१५	३३।५७	५।१३	६।४७	१८	२५	८
१२ मं०	५।५४	,, ७।१०	स्वा. १५।३५	,, ११।२६	प १२।३१	बा. ५।५४	तु० ५६।१७	रा० ४ ।५५	१ ।२४।३१।३३	३३।५८	५।१२	६।४८	१९	२६	९
१३ बु०	२।२६	,, ६।१०	वि० १३।५१	,, १०।४४	शि. ७।५	तै. २।२६	वृश्चिक	अहो	१ ।२५।२८।२४	३३।५९	५।१२	६।४८	२०	२७	१०
१४ बृ०	५२।५७	,, २।२३	अनु. ११।१६	,, ६।४२	सि० ०।५७	व. २५।३१	,,	,,	१ ।२६।२५।२५	३४।०	५।१२	६।४८	२१	२८	११

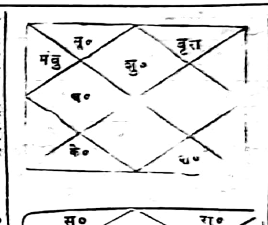
ज्येष्ठशुक्लपक्षः — संवत् २०४४, शक: १९०९, सन् १३६४ साल, हि० २८।५।८७ त: ११।६।८७ था, पश्चिमकाल: । मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, शुद्धः. १२ तोऽशुद्धः [illegible], [illegible] ।

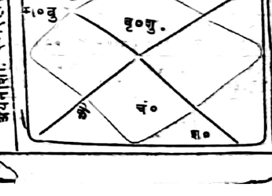
निर्णेघविवाहो दिवारात्री, पूर्वयात्रा रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि ।
चन्द्रदर्शनं मु ३० फलं साम्य, मैथिलवैवाहिकसमारम्भ (सौराठसभोलया:) निर्णेधविवाहो देवादिप्रतिष्ठा वापीकूपखननञ्च मृगशिरसि, मुण्डनं ×
पञ्चाग्निव्रतं, रम्भा ३, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ तृतीयायां, द. ति. ४७।३५ उ । × अनध्यायत्वादुपनयनं नैव ।
पणचतुर्थी, उमापूजनं, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्यां, द. ति. ५२.३८ था, म. २०।७ उ. ५२।३८ था ।
जून ६ मासारम्भः, उपनयन, देवादि प्रतिष्ठा, मुण्डनं, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये ।
कृत्तिकायां शुक्र:, १३।२, ग ५०।५८ था ।
निर्णेधविवाहो मघायां, गं. ५।५८ था ।
● निर्णेधविवाहो मघायां पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, वृष शुक्र: ५६।२८ म. ५।५४ उ. ३६।१८ था ।
● पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
× । = मुण्डनं, पश्चिमदक्षिणयात्रीकादश्यां, मृगशिरसि रवि: ३१।१४, वक्री बुध: १३।२० म. ८।२१ था ।
● गंगादशहरा, गंगाया: पृथिव्यामवतरण, गंगास्नान, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठादिनं, उपनयनं [illegible] मध्यमो हस्ते, निर्णेधविवाहश्चित्रायां, देवादि ☐
● निर्जला ११ व्रतं सर्वेषां, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, निर्णेधविवाहो दिवारात्री, उपनयन, मैथिल वैवाहिक समासमाप्तिः, देवादिप्रतिष्ठा, तडागकूपखननं चित्रायां =
त्रिविक्रम १२, तिलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोषत्वादुपनयनं नैव, अश्विन्यामेषे च मुह: ४६।५४ गुरुकष्वातिचार जन्याशुद्धारम्भ: ४६।५४ पश्चिमदक्षिण- +
चतुर्दशीमानं ५५।४० अवमं, चम्पक १४. प्रदोष १४ व्रतं, म ५८।६ उ. । ☐ प्रतिष्ठा, तडागवापीखननं, दीक्षाग्रहणम् । +यात्रास्वात्याम् ।
साध्ययोगमानं ५३।१६, ज्येष्ठो १४, स्नानदानादि:, सम्प्रातिकवैवस्वत मन्वादि:, पश्चिमोत्तरयात्रा दिवारात्री, पश्चिमास्तो बुध: ५०।२२ ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं यतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्**

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ बृ	२ ।१०।१८।५२	२ ।१२।४८।४	११।२७।३५। ८	० ।२१।१६।१	७।२३।३।१५	५।१७।८ ।४०	४६।५१	४।३२	६।२२	८।३१	१०।४६	१३।६	१५।२१	१७।३५	१९।५६	२२।६	२३।५८	१।३२	३ ।५९
२ शु	२ ।११।५८।४	२ ।१४।१६।२०	११।२७।४७।४७	० ।२२।२८।१२	७।२२।५९।२९	५।१७।५ ।२९	४६।५२	४।२८	६।१८	८।२७	१०।४५	१३।२	१५।१७	१७।३४	१९।५२	२२।२	२३।५४	१।२८	३ ।५५
३ श०	२ ।११।३७।१६	२ ।१५।३०।३५	११।२८। ०।२६	० ।२३।४०।२३	७।२२।५४।५४	५।१७।२।१८	४६।५२	४।२४	६।१४	८।२३	१०।४१	१२।५८	१५।१३	१७।३०	१९।४८	२१।५८	२३।५०	१।२४	३ ।५१
४ र०	२ ।१२।१६।२७	२ ।१६।४५।५०	११।२८।१३।५	० ।२४।५२।३४	७।२२।५२।१८	५।१६।५९।७	४६।५३	४।२०	६।१०	८।१२	१०।३७	१२।५४	१५। ९	१७।२६	१९।४४	२१।५४	२३।४६	१।२०	३ ।४७
५ चं०	२ ।१२।५५।३५	२ ।१८ ।१।३५	११।२८।२५।४४	० ।२६।४ ।४५	७।२२।४८।४४	५।१६।५५।५७	४६।५४	४।१६	६।६	८।१५	१०।३३	१२।५०	१५। ५	१७।२२	१९।४०	२१।५०	२३।४२	१।१६	३।४३
६ मं०	२ ।१३।३४।४६	२ ।१९।१४।२०	११।२८।३८।२३	० ।२७।१६।५५	७।२२।४५।९	५।१६।५२।४७	४६।५५	४।१३	६।३	८।१२	१०।३०	१२।४७	१५। २	१७।१९	१९।३७	२१।४७	२३।३९	१।१३	३ ।४०
६ बु०	२ ।१४।१३।४८	२ ।२०।३०।२१	११।२८।५१।२	० ।२८।२९।३	७।२२।४०।२५	५।१६।४९।३६	४६।५६	४।९	५।५९	८।८	१०।२६	१२।४३	१४।५८	१७।१५	१९।३३	२१।४३	२३।३५	१।९	३ ।३६
७ बृ०	२ ।१४।५२।४७	२ ।२१।२६।२२	११।२९।१ ।४३	० ।२९।४१।११	७।२२।३५।४१	५।१६।४६।२५	४६।५६	४।५	५।५५	८।४	१०।२२	१२।३९	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।३९	२३।३१	१।५	३।३२
८ शु	२ ।१५।३१।४६	२ ।२२।२२।२२	११।२९।१३।२३	१ ।१ ।११।१९	७।२२।३०।५	५।१६।४३।१४	४६।५७	४।१	५।५१	८।०	१०।१८	१२।३५	१४।५०	१७। ७	१९।२५	२१।३५	२३।२७	१।१	३ ।२८
[illegible]	२ ।१६।१०।४५	२ ।२३।१८।२२	११।२९।२५।३	१ ।२ ।१५।२७	७।२२।२६।१३	५।१६।४०।३	४६।५७	३।५७	५।४७	७।५६	१०।१४	१२।३१	१४।४६	१७। ३	१९।२१	२१।३१	२३।२३	०।५७	३ ।२४
[illegible]	२ ।१६।४९।४३	२ ।२४।१४।२२	११।२९।३६।४३	१ ।३ ।२७।३४	७।२२।२१।३०	५।१६।३६।५२	४६।५८	३।५३	५।४३	७।५२	१०।१०	१२।२७	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।२७	२३।१९	०।५३	३ ।२०
[illegible]	२ ।१७।२८।४१	२ ।२५।१०।२२	११।२९।४८।१३	१ ।४ ।४०।४२	७।२२।१६।४७	५।१६।३३।४२	४६।५८	३।५०	५।४०	७।४९	१०। ७	१२।२४	१४।३९	१६।५६	१९।१४	२१।२४	२३।१६	०।५०	३ ।१७
[illegible]	२ ।१८।७ ।३९	२ ।२६।६ ।२२	० ।० ।० ।१२	१ ।५ ।५१।४९	७।२२।१२।१४	५।१६।३०।३२	४६।५९	३।४६	५।३६	७।४५	१०। ३	१२।२०	१४।३५	१६।५२	१९।१०	२१।२०	२३।१२	०।४६	३।१३
[illegible]	२ ।१८।४६।३३	२ ।२६।२५।१३	० ।० ।११।१८	१ ।७ ।३।५८	७।२२।७ ।३६	५।१६।२७।२१	४७।०	३।४२	५।३२	७।४१	९।५९	१२।१६	१४।३१	१६।४८	१९। ६	२१।१६	२३।८	०।४२	३ ।९
[illegible]	२ ।१९।२५।२७	२ ।२६।४४।३	० ।० ।२२।३३	१ ।८ ।२०।७	७।२२।२।५४	५।१६।२४।१०	४७। १	३।३८	५।२८	७।३७	९।५५	१२।१२	१४।२७	१६।४४	१९। २	२१।१२	२३।४	०।३८	३ ।५

१२ कुजे वल्ली ८।२८।१४।५१ ६ कुजेवल्ली ८।१६।१४।२४
अयनांशा: २३।१६।१७ अयनांशा: २३।१६।१ ९





अथ विविधविषया:—ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि—वामनपुराणे—उदककुम्भं बलं धेनुन्तालवृन्तं सचन्दनम् । त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च ॥ गंगादशहरा दशाहे—दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठमासि कुजेऽहनि । अवतीर्णाहत: स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा । हन्ति दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता ॥ दशहरायां दशयोग:, स्कान्दे—ज्येष्ठमासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयो: । व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ । दशयोगे नर: स्नात्वा सर्वपापै: प्रमुच्यते । कुजबुधयोरवकल्पभेदेन व्यवस्थाज्ञेया । योगाधिक्ये फलाधिक्यात्तत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या ॥ दशपापानि-अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानत: । परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा । पारुष्यमनृतं चैव पैशून्यं चापि सर्वत: । असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् । परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम् । वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम् । एतानि दशपापानि हरत्वं मम जाह्नवि । दशपापहरायस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता ।

वातावरणम्—पक्षादितो दशमीं यावद्वायुमेघचारखण्डवृष्ट्यस्तत: पक्षान्तं यावत्तापाभ्रच्छाया स्वल्पवृष्टय: ।

ग्रहस्थिति:—मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रा:, मार्गी पश्चिमोदितो बुध: ११ त: वक्री, १५ त: पश्चिमास्त:, वक्री पूर्वोदित: शनि: ।

ति.दि.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.	द.प.	घं.मि.	योगा: द.प	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमान द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक: रा.	सौ.	अं.
१ शु	४७।१६	रा १२।१६	ज्ये.	८ ।०	दि. ८।२४	शु. ४७।२	बा. २०। ६	वृ ८। ०	दि. ८।२४	१।२७।२२।२६	३४।२	५।१२	६।४८	२२	२६	१२
२ श.	४१।१३	,, ९।४०	मू.	४ ।१२	,, ६।५२	शु. ३६।३५	तै. १४।१४	धनु.	अहो०	१।२८।१९।२७	३४।३	५।११	६।४९	२३	३०	१३
३ र.	३५।३	,, ७।१२	पूषा.	० । ८	,, ५।१४	ब्र. ३१।५७	व. ८।८	ध. १४।५	दि. १०।४९	१।२९।१६।२७	३४।५	५।११	६।४९	२४	३१	१४
४ च.	२८।५३	दि ४।४४	अ	५१।५४	रा. १।५७	ऐं. २४।२३	ब. १ ।५८	मकर	अहो.	२। ०।१३।२७	३४।६	५।११	६।४९	२५	१	१५
५ म.	२२।५७	,, २।१७	ध.	४८।१०	,, १२।५६	वै. १६।५७	तै २२।५७	म. २०। २	दि. १।११	२। १।१०।२७	३४।८	५।१०	६।५०	२६	२	१६
६ बु	१७।२७	,, १२।१९	श..	४४।५८	,, ११।१९	वि. ९ ।५२	व १७।२७	कुम्भ	अहो०	२। २।७ ।२३	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	३	१७
७ बृ.	१२।३६	,, १०।१२	पूभा	४२।२०	,, १०।१२	प्री ३ ।१६	ब १२।३६	कु. १३।४४	दि. १०।४०	२। ३।४ ।१६	३४।११	५।१०	६।५०	२८	४	१८
८ शु	८।३३	,, ८।२५	उभा.	४०।५१	,, ९।३०	सौ ५२।१०	कौ. ८। ३३	मीन	अहो.	२। ४।१ ।१५	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	५	१९
९ श.	५।२७	" ७।२०	रे.	४०।१५	,, ९।१५	शो. ४७।४८	ग. ५।२७	मा ४०।१५	रा. ९।१५	२।४ ।५८।१०	३४।१३	५। ९	६।५१	३०	६	२०
१० र.	३।२७	,, ६।२२	अ.	४०।५-	,, ९ ।२६	अगं ४४।२५	वि. ३।२७	मेष	अहो०	२।५ ।५५।५	३४।१४	५। ९	६।५१	३१	७	२१
११ च.	२।३८	,, ६।१२	भ.	४२।४०	" १०।१३	सु. ४२। ३	बा. २।३८	म० ५८।२६	रा. ४।३१	२।६ ।५२।०	३४।१५	५। ९	६।५१	१	८	२२
१२ मं	३।७	दि ६।२४	कृ.	४५।४६	,, ११।२७	धृ. ४२। २	तै. ३ । ७	वृष	अहो	२।७ ।४८।५५	३४।१६	५। ९	६।५१	२	९	२३
१३ बु	५।५१	" ५।५६	रो	४९।५८	,, १ ।१८	शू. ४०।१६	व. ५ । १	,,	"	२।८ ।४५।४७	३४।१५	५। ९	६।५१	३	१०	२४
१४ बृ	७।५६	,, ८।१६	मृ.	५५।१८	,, ३।१६	गं. ४०।४४	श. ७ ।५६	वृ. २२।४८	दि. २।१६	२।९ ।४२।३९	३४।१३	५। ९	६।५१	४	११	२५
३० शु	११।५३	,, ९।५५	आ.	६०.००	अहो	वृ. ४७।५१	ना. ११।५३	मिथुन	अहो०	२।१०।३९।३१	३४।१२	५।१०	६।५०	५	१२	२६

अषाढकृष्णपक्ष।

संवत् २०४४, शक: १९०९, सन् १३९४ साल, ई. १२।६।८७ त: २६।६।८७ या, पश्चिमेकाल:। मार्गिणो पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, अम्बुद:, ग्रीष्मर्तु:, सौम्यगोलायने।

उत्तरयात्रा वृश्चिकस्थे चन्द्रे ततः पूर्वोत्तरयात्रा प्रतिपदि, पुनर्वसौ कुज: ४०।१८, म. २।३ या।
चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महर्घं, उत्तरयात्रा दिवारात्रौ, गृहारम्भो मूल, रोहिण्यां शुक्र: ८।५७।
उत्तराषाढमान ५५।४८, मासान्त:, श्रीगणेश ४ व्रत, द. ति. ३५।३ उ., म. ८।८ उ. ३५।३ या।
मिथुने रवि: ३२।३०, मु. १० फल साम्यं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो दिवा घ. ६ मि. ११ उपरि दिनान्तं, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. १ मि. ५७ उ.। द. ति. २८।५३ या।
मासादि:। × ।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, (६–७) एकोद्दिष्टम्, म. १७।२७ उ. ४३।१ या।
आयुष्मानयोगमानं ५४।९, पश्चिमयात्रा सप्तम्यां, द. ति. १२।३६ उ.।
पूर्वोत्तरयात्रा रेवत्यां, द. ति. ८।३३ या।
पञ्चकान्तो रात्रौ घ. ६ मि. १५ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा नवम्यां, गं. २८।१५ उ. ४३।१५ या, म. ३५।२७ उ.।
पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां, म. ३।२७ या।
योगिनी ११ व्रतं सर्वेषां, आर्द्रायां रवि: ३४।२८, पुंस्त्रीयोग: चांचं योगो, महिषवाहनं, चण्डानाडीतत्त्वदिग्दर्शनस्तेनवायुतापमेघच्छायावृष्टय:।
प्रदोष १३ व्रतं, यवचूर्णै: पारणं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
प्रदोष भौमव्रतं, मृगशिरसि शुक्र: ५।१५, म. ५।१ उ. ३६।२८ या।
× ।
आषाढी ३०,

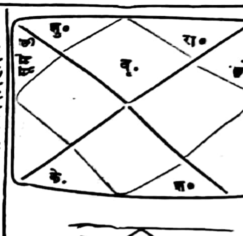
मिश्रमानकालिक दैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा: दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान
१ शु.	२ ।२०।४ ।२१	२।१७।२ ।५३	०।० ।३३।४८	१।९ ।३३।१६	७ ।२१।५८।१९	५ ।१६।२०।५६	४७। १
२ श.	२ ।२०।४३।१५	२।१७।२१।४३	०।० ।४५।३	१।१०।४६।२५	७ ।२१।५३।४३	५ ।१६।१७।४८	४७। २
३ र.	२ ।२१।२२।८	२।१७।४०।३३	०।० ।५६।१८	१।११।५९।३४	७ ।२१।४९।७	५ ।१६।१४।३७	४७। ३
४ च.	२ ।२२।१ ।१	२।१७।५९।२३	०।१ ।७ ।३३	१।१३।१२।४३	७ ।२१।४४।३१	५ ।१६।११।२६	४७। ३
५ मं.	२ ।२२।३९।५४	२।१८।१८।१३	०।१ ।१८।४८	१।१४।२५।५२	७ ।२१।३९।५५	५ ।१६।८ ।१५	४७। ४
६ बु	२ ।२३।१८।४८	२।१८।३७।२६	०।१ ।२९।६	१।१५।३९।१२	७ ।२१।३५।२०	५ ।१६।५ ।४	४७। ४
७ बृ.	२ ।२३।५७।४१	२।१७।२६।२६	०।१ ।४०।२४	१।१६।५२।३२	७ ।२१।३०।२४	५ ।१६।१ ।५४	४७। ५
८ शु.	२ ।२४।३६।३४	२।१९।१०।४२	०।१ ।४९।४२	१।१८।५ ।५१	७ ।२१।२५।४९	५ ।१५।५८।४३	४७। ५
९ श	२ ।२५।१५।२७	२।१९।३५।५	०।२ ।० ।०	१।१९।१९।१०	७ ।२१।२१।१४	५ ।१५।५५।३२	४७। ६
१० र.	२ ।२५।५४।२०	२।१९।९ ।१८	०।२ ।१०।१८	१।२०।३२।२९	७ ।२१।१६।९	५ ।१५।५२।२१	४७। ६
११ च.	२ ।२६।३३।१३	२।१५।४३।३१	०।२ ।२०।३५	१।२१।४५।४८	७ ।२१।१२।३	५ ।१५।४९।११	४७। ७
१२ म.	२ ।२७।१२।६	२।१०५।१७।५४	०।२ ।३०।५२	१।२२।५९।६	७ ।२१।६।३७	५ ।१५।४६।१	४७। ८
१३ बु.	२ ।२७।५०।४५	२।१४।२६।४८	०।२ ।४०।५२	१।२४।१२।१९	७ ।२१।३ ।२१	५ ।१५।४२।५०	४७। ८
१४ बृ.	२ ।२८।२९।२४	२।१३।४७।१०	०।२ ।५०।५१	१।२५।२५।३१	७ ।२०।५८।५	५ ।१५।३९।३९	४७। ७
३० शु	२ ।२९।८ ।१३	२।१२।१ ।१८	०।३ ।१० ।५०	१।२६।३८।४३	७ ।२०।५३।४६	५ ।१५।३६।२८	४७। ६

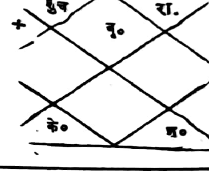
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् + बु.म.बु.

ति.दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ शु.	३ ।३४	५ ।२४	७ ।३३	९ ।४१	१३। ८	१४।२३	१६।४०	१८।५८	२१।८	२३।३८	२४।३४	२ । १
२ श.	३ ।३०	५ ।२०	७ ।२९	९ ।४७	१३। ४	१४।१९	१६।३६	१८।५४	२१।४	२३।५६	२४।३०	१ ।५७
३ र.	३ ।२७	५ ।१७	७ ।२६	९ ।४४	१३। १	१४।१६	१६।३३	१८।५१	२१।१	२३।५३	२४।२७	१ ।५४
४ च.	३ ।२३	५ ।१३	७ ।२२	९ ।४०	१२।५७	१४।१२	१६।२९	१८।४७	२०।५७	२३।४९	२४।२३	१ ।५०
५ मं.	३ ।१९	५ । ९	७ ।१८	९ ।३६	१२।५३	१४। ८	१६।२५	१८।४३	२०।५३	२३।४५	२४।१९	१ ।४६
६ बु	३ ।१५	५ । ५	७ ।१४	९ ।३२	१२।४९	१४। ४	१६।२१	१८।३९	२०।४९	२३।४१	२४।१५	१ ।४२
७ बृ.	३ ।११	५ । १	७ ।१०	९ ।२८	१२।४५	१४।०	१६।१७	१८।३५	२०।४५	२३।३७	० ।११	१ ।३८
८ शु.	३ । ७	४ ।५७	७ । ६	९ ।२४	१२।४१	१३।५६	१६।१३	१८।३१	२०।४१	२३।३३	० । ७	१ ।३४
९ श	३ । ३	४ ।५३	७ । २	९ ।२०	१२।३७	१३।५२	१६। ९	१८।२७	२०।३७	२३।२९	० । ३	१ ।३०
१० र.	२ ।५९	४ ।४९	६ ।५८	९ ।१६	१२।३३	१३।४८	१६।५	१८।२३	२०।३३	२३।२५	२३।५९	१ ।२६
११ च.	२ ।५५	४ ।४५	६ ।५४	९ ।१२	१२।२९	१३।४४	१६।१	१८।१९	२०।२९	२३।२१	२३।५५	१ ।२२
१२ म.	२ ।५०	४ ।४०	६ ।४९	९ । ७	१२।२४	१३।३९	१५।५६	१८।१४	२०।२४	२३।१६	२३।५०	१ ।१७
१३ बु.	२ ।४६	४ ।३६	६ ।४५	९ । ३	१२।२०	१३।३५	१५।५२	१८।१०	२०।२०	२३।१२	२३।४६	१ ।१३
१४ बृ.	२ ।४२	४ ।३२	६ ।४१	८ ।५९	१२।१६	१३।३१	१५।४८	१८। ६	२०।१६	२३। ८	२३।४२	१ । ९
३० शु	२ ।३८	४ ।२८	६ ।३७	८ ।५५	१२।१२	१३।२७	१५।४४	१८। २	२०।१२	२३। ४	२३।३८	१ । ५

१ कुजवल्ली ८।१६।१२।४८
लग्नांश: २२।१२।१।१८



१२ कुजवल्ली ८।२६।१२।५४
लग्नांश: २२।१२।१।१९



अथ विविधविषया:–ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचार:–बुधशुक्रौ समीपस्थौ करोत्येकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्। पुरतो पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगा:। तदा वृष्टिः प्रकुर्वन्ति न चेत्तो प्रतिलोमगा:। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। सयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते। उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। चन्द्रत्यगारके वृष्टिः घनाः वृष्टिघ्नने श्वरे। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दं विविधोऽपि प्रजायते। सूर्यनक्षत्राणि:-रोहिणिमृगार्द्रापूर्वोत्तरफल्गुनी हस्त चित्रा स्वातीविशाखाऽनुराधाज्येष्ठामूलश्रवणमित्रोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि सूर्यनक्षत्राणि शेषाणि चतुर्दशनक्षत्राणि चन्द्रर्क्षाणि ज्ञेयानि। अथैतत्फलम् चान्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्यचन्द्रर्क्षगे सति उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदावृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणां पुरुषादिसंज्ञा:-मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि आर्द्रादीनि दश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकाख्यानि पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः स्त्रीयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभाव:।

वातावरणम्–पक्षादितोऽष्टमीं यावद्वायुतापखण्डवृष्टयस्तत: पक्षान्तं तापाभ्रच्छायावायुखण्डवृष्टय:।

ग्रहस्थिति–मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशुक्रा:, वक्री पश्चिमास्तो बुध:, पूर्वोदित: शनि:।

आषाढशुक्लपक्षः — संवत् २०४३, शक: १९०८, सन् १३९४ साल, दि० २७।६।८७ त: ११।७।८७ या, पश्चिमेकाल: । मार्गिणी पूर्वोदितो गुरु शुक्रौ अयुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने ।

ति.दि	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि न.द.प	घं.मि	योगः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रराशय: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि:	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाङ्का: श्रा.	सौ.	अं
१ श	१६।३८	दि० ११।४६	आ. ११।२०	दि. ९।४२	ध्रु. ४३।२२	व० १६।३०	मि. ५१।१२	रा० १।३९	२।११।३६।२३	३४।१०	५।१०	६।५०	६	१२	२७
२ र.	२१।३५	,, १।४८	पुन. ७।५०	,, ८।१५	व्या० ४५।४	कौ. २१।३५	कर्क	अहो०	२।१२।३३।१५	३४।९	५।१०	६।५०	७	१३	२८
३ च०	२६।३०	,, ३।४७	पु० १४।२१	,, १०।५५	ह. ४६।३८	ग. २६।३०	,,	,,	२।१३।३०।७	३४।७	५।११	६।४९	८	१४	२९
४ मं.	३०।५६	,, ५।३३	श्ले० २०।२६	,, १।२१	व. ४७।२०	वि. ३०।५६	क० २०।२६	दि० १।२१	२।१४।२६।५८	३४।६	५।११	६।४९	९	१५	३०
५ बु०	३४।३७	रा. ७।२	म. २५।५१	,, ३।३१	सि. ४६।१८	व० २।४६	सिंह	अहो०	२।१५।२३।४९	३४।४	५।११	६।४९	१०	१६	१
६ बृ०	३।१८	,, ८।२	पूफ० ३०।११	,, ५।१५	व्य ४७।२८	कौ० ५।५२	सि० ५५।५८	रा० ११।३४	२।१६।२०।४०	३४।३	५।११	६।४९	११	१७	२
७ शु०	३८।४५	,, ८।४२	उफ० ३३।२४	,, ६।३४	व० ४६।१०	ग ७।५१	कन्या	अहो०	२।१७।१७।३०	३४।२	५।१२	६।४८	१२	१८	३
८ श०	३८।४६	,, ८।४४	ह० ३५।२०	रा ७।२०	प. ४३।३०	वि. ८।३६	,,	,,	२।१८।१४।२०	३४।१	५।१२	६।४८	१३	१९	४
९ र०	३७।२८	,, ८।११	चि. ३६।११	,, ७।४०	शि. ४०।६	ब. ८।३	क ५।४५	दि० ७।३०	२।१९।११।१०	३४।००	५।१२	६।४८	१४	२०	५
१० चं०	३५।३	,, ७।१२	स्वा. ३५।२९	,, ७।२४	सि ३५।३३	तै. ६।१५	तुला	अहो०	२।२०।८।१०	३३।५९	५।१२	६।४८	१५	२१	६
११ मं०	३१।३७	दि ५।५१	वि: ३३।५४	सा. ६।४६	सा. ३०।१५	व. ३।२०	तु० १९।१९	दि० १२।५५	२।२१।४।५०	३३।५८	५।१२	६।४८	१६	२२	७
१२ बु०	२७।१६	,, ४।७	अनु० ३१।३४	दि. ५।५१	शु. २४।१५	ग. २७।१६	वृश्चिक	अहो०	२।२२।१।४३	३३।५७	५।१३	६।४७	१७	२३	८
१३ बृ०	२२।९	,, २।५	ज्ये. २८।२४	,, ४।३५	शु १७।३६	कौ. २२।९	वृ. २८।२४	दि. ४।३५	२।२२।५८।३६	३३।५५	५।१३	६।४७	१८	२४	९
१४ शु	१६।३०	,, ११।४३	मू० २४।४३	,, ३।१६	ब्र० १०।२	ग. १६।३०	धनु	अहो	२।२३।५५।२९	३३।५४	५।१३	६।४७	१९	२५	१०
१५ श०	१०।२८	,, ९।१५	पूषा. २०।३८	,, १।२६	ऐं० ४।२६	व. १०।२८	ध. ३४।३६	रा० ७।४	२।२४।५२।२२	३३।५२	५।१४	६।४६	२०	२६	११

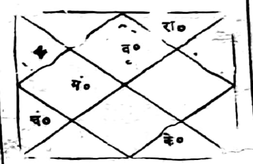
चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यं, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ मिथुनस्थे चन्द्र ततः पश्चिमोत्तरयात्रा, (२) एकोदिष्टम् ।
करमूले पुलिकमूलबन्धनं, जगन्नाथरथयात्रा, उत्तरयात्रापुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये, कर्के कुजः ७।४४ ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, पूर्वां विना यात्रा-मुण्डनञ्च पुष्ये, मिथुने शुक्रः ३।१७, (३) एकोदिष्ट, म. ५८।४३ उ. ।
म. ३०।५६ या, ग. ६।२६ उ. २४।२६ या ।
जुलाई ७ मासारम्भः, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, पश्चिमास्तः कुजः ३६।३४ ।
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, गृहप्रवेशः सप्तम्याम्,
गृहप्रवेशः सप्तम्यां, गृहारम्भो हस्ते सप्तम्यां, पुष्येकुजः १७।५५ द. ति. ३८।३४ उ., म. ३८।३४ या ।
दक्षिणयात्रा नवम्यां, आर्द्रायां शुक्रः ५६।५६, पूर्वोदितो बुधः ५५।५३, द. ति. ३८।३६ या, म. ८।३६ या ।
करमूले पुलिकमूलबन्धन, गृहारम्भप्रवेशौ दक्षिणयात्रा च दशम्याम् ।
म वादिः, मुण्डन, पश्चिमदक्षिणयात्रा गृहारम्भप्रवेशौ च स्वात्यां, पुनर्वसौ रविः ३८।३२, स्त्रीनपुंयोगःसूर्ययोगोऽथवाहनं वह्निनाडी ददधिपतिः कुजस्तेन वह्निभय-△
हरिशयन ११ व्रत सर्वेषां, पश्चिमयात्राऽनुराधायां म. ३।२० उ ३१।३७ या । △ तापवायुचारखण्डवृष्टयः ।
व सुदेव १२, यवचूर्णः पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमयात्राद्वादश्यां, गृहारम्भप्रवेशावनुराधायां, मार्गी बुधः ३२।१० ।
प्रवेष १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, ग. २२।२४ उ. ३७।२४ या ।
(१४-१५) एकोदिष्ट, पूर्वोत्तरयात्रा दिवारात्रौ, गृहारम्भप्रवेशौ पूर्णिमायां मूले ।
मन्वादिः, आषाढी १५, गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयो पूजन, उत्तरयात्रा प्रतिपदि पूर्वाषाढे, सन् १३९५ सालसंज्ञकवर्षारम्भःपूर्णान्तात् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

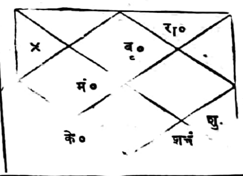
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम् — +बृ०बु०शु × र०गु०मू०

ति.दि.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मीन अं.
१ श.	२।२९।४६।११	२।१२।६।१६	०।३।१०।४९	१।२७।५१।१४	७।२०।४९।३२	५।१५।३३।१७	४७।५	२।३४	४।२४	६।३३	८।५१	११।८	१३।२३	१५।४०	१७।५८	२०।८	२२।०	२३।३४	१।१
२ र	३।०।२५।२१	२।११।१८।२४	०।३।२०।४८	१।२९।५।१५	७।२०।४५।१५	५।१५।३०।६	४७।५	२।३०	४।२०	६।२९	८।४७	११।४	१३।१९	१५।३६	१७।५४	२०।४	२१।५६	२३।३०	०।५७
३ चं०	३।१।४।०	२।१०।३०।३२	०।३।३०।४७	२।०।१८।१६	७।२०।४०।५८	५।१५।२६।५६	४७।४	२।२६	४।१६	६।२५	८।४३	११।०	१३।१५	१५।३२	१७।५०	२०।०	२१।५२	२३।२६	०।५३
४ मं०	३।१।४२।३६	२।९।४७।३८	०।३।३७।२	२।१।३१।२७	७।२०।३६।४१	५।१५।२३।४६	४७।३	२।२२	४।१२	६।२१	८।३९	१०।५६	१३।११	१५।२८	१७।४६	१९।५६	२१।४८	२३।२२	०।४९
५ बु०	३।२।२१।२२	२।९।२७।१	०।३।४८।४५	२।२।४४।३९	७।२०।३२।२४	५।१५।२०।३५	४७।३	२।१७	४।७	६।१६	८।३४	१०।५१	१३।६	१५।२३	१७।४१	१९।५१	२१।४३	२३।१७	०।४४
६ बृ०	३।३।०।५	२।९।६।२३	०।३।५६।४३	२।३।५७।५१	७।२०।२८।४४	५।१५।१७।२४	४७।२	२।१३	४।३	६।१२	८।३०	१०।४७	१३।२	१५।१९	१७।३७	१९।४७	२१।३९	२३।१३	०।४०
७ शु.	३।३।३८।४८	२।८।४५।४८	०।४।४।४१	२।५।११।१३	७।२०।२४।४७	५।१५।१४।१३	४७।२	२।९	३।५९	६।८	८।२६	१०।४३	१२।५८	१५।१५	१७।३३	१९।४३	२१।३५	२३।९	०।३६
८ श.	३।४।१७।३०	२।८।२५।१७	०।४।१२।३९	२।६।२४।१५	७।२०।२०।४६	५।१५।११।२	४७।१	२।५	३।५५	६।४	८।२२	१०।३९	१२।५४	१५।११	१७।२९	१९।३९	२१।३१	२३।५	०।३२
	३।४।५६।१२	२।८।४।३०	०।४।२०।३७	२।७।३७।२६	७।२०।१६।५०	५।१५।७।५१	४७।१	२।१	३।५१	६।०	८।१८	१०।३५	१२।५०	१५।७	१७।२५	१९।३५	२१।२७	२३।१	०।२८
	३।५।३४।५४	२।७।४३।५३	०।४।२८।३५	२।८।५०।३७	७।२०।१२।५१	५।१५।४।४१	४७।०	१।५७	३।४७	५।५६	८।१४	१०।३१	१२।४६	१५।३	१७।२१	१९।३१	२१।२३	२२।५७	०।२४
	३।६।१३।३६	२।७।२३।१६	०।४।३६।३३	२।१०।३।४७	७।२०।८।५२	५।१५।१।३१	४६।५९	१।५३	३।४३	५।५२	८।१०	१०।२७	१२।४२	१४।५९	१७।१७	१९।२७	२१।१९	२२।५३	०।२०
	३।६।५२।१०	२।७।४६।३७	०।४।४४।३३	२।११।१६।५८	७।२०।५।१३	५।१४।५८।२०	४६।५८	१।४९	३।३९	५।४८	८।६	१०।२३	१२।३८	१४।५५	१७।१३	१९।२३	२१।१५	२२।४९	०।१६
	[illegible]।३०।४४	२।८।१०।१७	०।४।५१।५३	२।१२।३०।९	७।२०।१।३४	५।१४।५५।९	४६।५८	१।४४	३।३४	५।४३	८।१	१०।१८	१२।३३	१४।५०	१७।८	१९।१८	२१।१०	२२।४४	०।११
	[illegible]।९।१८	२।८।२३।४७	०।४।५९।३३	२।१३।४३।२३	७।१९।५७।५५	५।१४।५१।५८	४६।५७	१।४०	३।३०	५।३९	७।५७	१०।१४	१२।३०	१४।४७	१७।४	१९।१४	२१।६	२२।४०	०।७
	[illegible]।५२	२।८।५७।१६	०।५।७।१३	२।१४।५६।३१	७।१९।५४।१५	५।१४।४८।४७	४६।५७	१।३६	३।२६	५।३५	७।५३	१०।१०	१२।२६	१४।४३	१७।०	१९।१०	२१।२	२२।३६	०।३

४ कुजेवल्ली ८।३६।१४।२१ अयनांशा: २२।१६।२०



११ कुजे वल्ली ८।३६।१४।१६ अयनांशा: २२।१६।२१



अथ विविधविषयाः-अथाषाढे शकुन विचारः-आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिश्चत्तमा सुभिक्षञ्चान्यथा दुर्भिक्षं तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः । आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रह वारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च । पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं प्रजापीडा चोत्तराषाढे चेति । आषाढशुक्लपक्षे द्वितीयायां जगन्नाथरथयात्रा तद्दिने रथस्थरामावलोकिनः विपन्न लभ्यते । पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम् तत्र पूर्वपश्चिम-वायुकोणोत्तरैशान वायौच धान्योत्पत्तिः सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते । इतरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति । आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले पुलिकमूल बन्धनमन्त्रः-शुचिसित दिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य । नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य एवं कृते सर्पभयं न जायते । अथार्द्रास्थे सूर्ये पायसभोजनमहत्वम्-आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः । अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति । क्षीरमन्न पायसम् ।

वातावरणम्-पक्षादितोऽष्टमीं यावद्वायुचारमेघच्छायावृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावत्तापाभ्रच्छायाखण्डवृष्टिवायवः ।

ग्रहस्थितिः-मार्गी पूर्वोदितः कुजः ५ तः पश्चिमास्तः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ८ तः पूर्वोदितः १२ तः मार्गी, मार्गिणी पूर्वोदितो गुरु शुक्रौ, वक्री पूर्वोदितः शनिः ॥